भावकुतूहलम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

॥ श्रीः ॥

भावकुतूहलम् ।

श्रीमैथिलगणकशंभुनाथात्मजगणकजीवनाथविरचितम् ।

टिहरीनिवासिपण्डितमहीधरकृत-

भाषाटीकासमेतम् ।

संस्करण-अप्रैल २००५, सम्वत्-२०६२

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

बम्बई

मूल्य : ५५ रुपये मात्र।

प्रस्तावना।

जब कि, यवन पादशाहोंके महान् अत्याचारसे बलात्काररूपी घोरराहु अपने तीव्र तिमिरसे भारतभण्डारके विमल सूर्यरूपी सुग्रन्थ ज्योतिष विद्याको चारों ओरसे आच्छादित कर रहा था, बडे २ त्रिकालज्ञ ऋषि मुनीश्वरोंके प्रणीत ग्रंथ बलवान् मुसलमान अग्नि-कुंडमें हवन कर रहे थे, जिन ग्रन्थोंके अवलंबसे ज्योतिषी त्रिकालज्ञ कहलातेथे, ऐसी अपूर्व घटनाको अवलोकन कर उससे पारपानेके हेतु 'जीवनाथनामा ज्योतिर्विद्' जो उस कालमें परम सिद्ध पुरुष कहलाते थे, ज्योतिष विद्यामें अद्वितीय ज्ञान होनेसे लोग उनकी जिह्वामें सरस्वतीका वास बतलाते थे, इन्होंने यह निर्मल शब्दरूपी अमृतपुंजसे "भावकुतूहल" ज्योतिष फलादेशरूपी धारा निकाली है, इसमें निमग्न होने (पढने) से मनुष्य सर्वज्ञाता हो सक्ता है, तीनों कालकी बातको जान सक्ताहै, उत्तम रीतिसे कुण्डलीका फलाफल कह सक्ताहै, यह ग्रन्थ संस्कृतमें होनेसे सबके समझमें नहीं आता था इसलिये अनभिज्ञ बालकोंके प्रसन्नतार्थ टीहरी (गढवाल) निवासी 'महीधर' नामा ज्योतिषी निर्मित अत्युत्तम भाषाटीका सहित इसे अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें मुद्रित कर प्रसिद्ध करताहूं।

अबकी बार द्वितीयावृत्तिमें फिर भी बृहज्जातकादि ग्रन्थोंके आश्रयसे शास्त्रियोंसे भलीभांति संशोधन कराय मुद्रितकर प्रकाशित करताहूं आशाहै कि अनुग्राहक ग्राहक इसे ग्रहणकर स्वयं लाभ उठावेंगे और मेरे परिश्रमको सफल करेंगे।

आपका कृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुम्बई.

॥ श्रीः ॥

अथ भावकुतूहलविषयानुक्रमणिका ।

अथ सामुद्रिकवि० ८.

अथ स्त्रीजातकाध्यायः ९.

स्त्रियोंको राजयोग।

अथ शयनादिद्वादशावस्थाविचाराध्यायः ११.

अथ स्थानवशादवस्थाफलानि ।

अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलाध्यायः १२.

इति भावकुतूहलविषयानुक्रमणिका समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

अथ भावकुतूहलम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रणम्य कांतां परमस्य पुंसो हृदब्जसंस्थां परदेवतां ताम् ॥
करोति भाषामथ बालतुष्टयै महीधरो भावकुतूहलीयाम् ॥ १ ॥

भाषाकार ग्रंथादिमें मंगलाचरण रूप प्रणाम करताहै-कि, परम पुरुष, परमात्माकी कांता (परब्रह्ममहिषी) जो हृदयकमलमें नित्य संस्थित परम देवता अर्थात् साक्षात् परब्रह्म निर्विकल्प स्वरूप आपही होरही एवं जिससे परे अन्य कोई नहीं है ऐसी उस परम इष्ट देवता साक्षात् योगमायाको प्रणाम करके महीधर नामा (ज्योतिषी टीहरीगढवालनिवासी) अथ (मंगलार्थ) अब "भावकुतूहल" के अनभिज्ञ बालकोंके प्रसन्नतार्थ इसकी भाषाटीका सरल देशभाषामें करताहै ॥ १ ॥

महः सेतुं हेतुं सकलजगतामंकुरतया
सदा शंभोरंभोभवभवभयत्राणजनकम् ॥
अहं वंदे तस्यासुरसुरमनोमोदनिकरं
चिदानंदं पादामलकमललावण्यमधिकम् ॥ १ ॥

ग्रंथकर्ता ग्रंथादिमें अपने इष्टदेवता शिवजीको प्रणाम करता है कि-(अहं) मैं जीवनाथ नामा ज्योतिषी उस सदाशिवके जलसे उत्पन्न संसार यद्वा ब्रह्माकी उत्पन्न की हुई सृष्टिमें जो

जन्म मरणका एक मात्र भय है उससे रक्षा करनेवाले अर्थात् मुक्तिदेनेवाले तथा दानव, एवं देवताओंके मनके आनंदकी खानि "आनंदो ब्रह्मणो रूपम्" इस वचन प्रकारसे बोधन हुआ कि, देव दानव परब्रह्म स्वरूप जिस शिवका मनमें ध्यान करते हैं तथा (चिदानंद) निराकार केवल प्रकाशमय सत्तामात्र एक आनंदस्वरूप; समस्त जगतोंका उद्धार करनेवाले (सेतु) पुल संसारके उत्पन्न करनेका (हेतु) बीज ऐसे शिवजीके चरणकमलोंका (अधिक लावण्य) आनंदामृतास्वादपरिपूर्ण जो अनुपम कोमलता है उसके (महः) उत्सवपूर्वक प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥

विचारसंचारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम् ॥ श्रीजीवनाथेन विदां हिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलं तत् ॥ २ ॥

जो प्राचीन मुनियोंके अनेक मतोंके अनेक ग्रंथ बडे बडे हैं उनमें जब बहुतसा विचार फैलाया जाय तब उसका चमत्कार मिलताहै उसका सारांश देखकर थोडेहीमें वही चमत्कार मिलनेके हेतु विद्वानोंके उपकारार्थ श्रीजीवनाथ ज्योतिर्वित् करके यह "भावकुतूहल" प्रकाश कियाजाताहै ॥ २ ॥

धात्रोदितं यवनकर्कशशब्दसंगादाधिव्यथाविदलितं परमं फलं यत् ॥ मत्कोमलामलरवामृतराशिधारास्नानं करोतु जगतामपि मोदहेतोः ॥ ३ ॥

ज्योतिषका परम होराफल जो ब्रह्माआदियोंका कहाथा अर्थात् प्राचीन उत्तम ग्रंथ ऐसे चमत्कारी थे कि, जिनके प्रभावसे ज्योतिषी त्रिकालज्ञ कहातेथे परंतु बीचमें मुसलमान बादशाह।

ऐसे मतवादी हुये कि सनातन धर्म संबंधी हिंदूधर्ममें अत्यंत अत्याचार किया यहां पर्यंत कि हिंदुओंके पास जो जो उत्तम ग्रंथ थे बलात्कारसे नष्ट भ्रष्ट कर दिये और "यथा राजा तथा प्रजा" सर्वसाधारणमें यावनी भाषा प्रचलित होगई संस्कृतका ह्रास होता गया ऐसे कारणोंसे ज्योतिष संबंधी चमत्कारी फलादेश भी व्यर्थताको प्राप्त होकर यावनी भाषासे दलित होगया. इसके उद्धारार्थ इसग्रंथकी भूमिकामें ग्रंथकर्त्ता पंडित जीवनाथ कहतेहैं कि, मेरे कोमल एवं निर्मल शब्दरूपी अमृत पुंजसे जो यह भावकुतूहल ज्योतिष फलादेश रूपी धारा निकलती है इसमें उक्त फलादेश (यवनोंसे मलिन होरहा) स्नानकरे जिससे निर्मल होकर पुनः अपने उसी पदको प्राप्तहो तथा संसार भी उसकी उन्नतिसे हर्षित हो॥ ३ ॥

(अथ द्वादशभावसंज्ञा) तनुकोशसहोदरबंधुसु-
ता रिपुकामविनाशशुभा विबुधैः ॥ पितृभं तत
आप्तिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ॥४॥

लग्नादिक्रमसे १२ भावोंके नाम । तनु (१) प्रकारांतरसे लग्न, मूर्ति, अंग, उदय, वपु, कल्प, आद्य । कोश (२) प्र० स्वं, अर्थ, कुटुंब, धन। सहोदर (३) प्र०सहज, भ्रातृ,दुश्चिक्य,विक्रम । बंधु (४) प्र० अंबा, पाताल, मित्र, तूर्य, हिबुक, गृह, सुहृत्, वाहन, पाताल, सुख, अंबु, जल । सुत (५) प्र० तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, औरस तनय, मंत्र । रिपु (६) प्र० द्वेष्य, वैरि, क्षत, रोग, मातुल । काम (७) प्र० यामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यून । विनाश (८) प्र० रंध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृत्यु, संग्राम । शुभ (९) प्र० गुरु, मार्ग, भाग्य, धर्म । पितृ (१०) प्र० राज्य, कर्म, मान, आकाश । आप्ति(११)

प्र० लाभ, भव। अपाय (१२) प्र० व्यय, रिष्फ, नाश। और त्रिकोण ९।५। त्रित्रिकोण ९। केंद्र १।४।७।१०। पणफर २।५।८। ११। आपोक्लिम ३।६।९।१२ येभी संज्ञाहैं ॥ ४ ॥

(राशिस्वामिनः) कुजकवी बुधचंद्रदिवाकरा बुध-
शितावनिजा गुरुसूर्यजौ ॥ शनिगुरू च पुरातन-
पंडितैरजमुखादुदिता भवनाधिपाः ॥ ५ ॥

राशियोंके स्वामी कहते हैं कि, मेषका स्वमी मंगल, वृषका शुक्र, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र,वृश्चिकका मंगल, धनुषका बृहस्पति,मकर और कुंभका शनि, मीनका बृहस्पति ये राशिस्वामी हैं ॥ ५ ॥

अंगारकेन्दुगुरवो रविचंद्रपुत्रावादित्यचंद्रगुरवः
कविचंडभानू ॥ भौमार्करात्रिपतयो बुधसूर्यपुत्रौ
शक्रेन्दुजौ दिनकरात्सुहृदो भवंति॥६॥सौम्यः स-
मा हि सकलाः कविभानुपुत्रौ मंदेज्यभूमितनया
रविजः क्रमेण॥ भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवोऽवशि-
ष्टास्तात्कालिका व्ययधनायदशात्रिबंधौ ॥ ७॥

मित्रादिचक्रम् ।						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
चं.बृ. मं.	सू.बु.	सू.चं.बृ.	शु. सू.	मं.सू.चं.	बु.श.	शु. बु.
बु.	मं.बृ. शु.श.	शु. श.	श. बृ.मं.	श.	मं.बृ.	बृ.
श. शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

ग्रहोंके, मित्र, सम,शत्रु कहतेहैं कि, सूर्यके चं. बृ० मं० चंद्रमाके सू० बु० मंगलके सू० चं० बृ०, बुधके० शु० सू० बृहस्पतिके सू० चं० मं०, शुक्रके बु० श० शनिके बु० शु० मित्रहैं। तथा सूर्यका, बुध सम, चंद्रमाके,मं० बृ०

शु० श०, मंगलके शु० श०, बुधके श० बृ० मं०, बृहस्पतिका श०, शुक्रके मं० बृ०, शनिका बृहस्पति समहै। अन्य सब शत्रुहैं, अर्थात् सूर्यके शु० श०, चंद्रमाका कोई शत्रु नहीं मंगलका बुध, बुधका चंद्र०, बृहस्पतिका बु० शु० शुक्रके सू० चं०, शनिके सू० चं० मं० शत्रु हैं और अपने स्थित भावसे। १२।२।११।१०।३।४ स्थानोंमें तात्कालिक मित्र होतेहैं ॥ ६ ॥ ७ ॥

परमोच्चमजे दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्मलवैः ॥ तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किल पंचाभिरेव झषे त्रिघनैः ॥ ८ ॥ कृतिभिश्च तुलाभवने रवितः कथितं मदने खलु नीचमतः ॥ मिथुने तमसः शिखिनो धनुषि प्रथमे बुधभे गुरुभे भवनम् ॥ ९ ॥

सूर्यका परम उच्च मेषके दश अंशपर, चंद्रमाका वृषके ३ अंशपर, एवं मंगलका मकरके २८, बुध कन्याके १५ बृहस्पति कर्कके ५ शुक्र मीनके २७, शनि तुलाके २० अंशपर उच्च होते हैं और उच्चसे सप्तम राशिमें उक्त अंशोंकरके नीच होते हैं। राहुमिथुनके प्रथमांश, और केतुका धनके प्रथमांशपर परम उच्च होताहै और कन्या राहुके मीन केतुके स्वगृह हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

(अथ षडर्गसाधनम्) होरा राशिदलं समे प्रथमतश्चंद्रस्य भानोरतो व्यत्यासादसमे दृकाणपतयः स्वाक्षांकभावाधिपाः । मेषादादिमभे वृषे तु मकराद्युग्मे घटादिंदुभे कर्कादेव नवांशकानि गदिताः स्युर्द्वादशांशाः स्वभात् ॥ १० ॥

षड्वर्गमें प्रथम होरा कहतेहैं राशिका आधा होराहै वह समराशिके प्रथमदल १५ अंशपर्यंत चन्द्रमाकी, उत्तरार्द्धमें १५ अंशसे ३० पर्यंत सूर्यकी, तथा विषम राशिमें पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्यंत सूर्यकी, उत्तरदल १५ अंशसे ३० पर्यंतचन्द्रमाकी होरा होतीहै, जैसे मेषके १५ अंशपर्यंत सूर्यकी, १५ से ऊपर चंद्रमाकी, वृषके १५ पर्यंत चन्द्रमा ऊपर सूर्यकी होराहै, ऐसेही सबके जानना। द्रकाण प्रथम त्रिभाग १० अंशपर्यंत उसी राशिके स्वामीका, द्वितीयभाग १० अंशसे २० अंशपर्यंत उस राशिसे पंचमराशिके स्वामीका और तृतीय भाग २० से ३० पर्यंत उसराशिसे नवम राशिके स्वामीका द्रेष्काण होताहै। जैसे मेषके १० अंश पर्यंत मेषके स्वामी मंगलका, १० से २० लौं उससे पंचम सिंहके स्वामी सूर्य-का,२०से ३०पर्यंत उससे नवम धनके स्वामी बृहस्पतिका द्रकाण होताहै। नवांशक मेष, सिंह, धनको मेषसे वृष, कन्या, मकरको मकरसे,मिथुन। तुला,कुंभको मिथुनसे। कर्क, वृश्चिक, मीनको कर्कटसे गिनना अर्थात् चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशि तीन तीनका १।५।९ त्रिकोण मेलहै, इनमें (चरादि) जो चरराशि हो उससे नवांश गिनाजाताहै एक राशिके ३० अंशके ९ भाग नवांश कहतेहैं, वह विभाग ऐसेहैं कि, ३ अंश२० कलाका एक नवमांश है, ६।४० पर्यंत दूसरा, एवं १०।० तीसरा, १३।२० चौथा,१६। ४०पंचम,२०।०छठा,२३।२०सातवां, २६।४०आठवां३०।०नवम भागहै. जैसे मेषके मेषहीसे गिनना है तो३ अंश२०कलापर्यंत मेष-का६अं०४०क०पर्यंत वृषका,१०।०में मिथुनका,तथा वृषमें मक-रसे गिनती है तो ३।२० पर्यंत मकरका, ६।४०लौं कुंभका इत्यादि मिथुनमें ३।२० में तुलाका ६।४० में वृश्चिकका इसी प्रकार जान ना। द्वादशांश एक राशिके बारह भाग द्वादशांश होतेहैं २ अंश ३० कलाका एक द्वादशांश होताहै यह अपनीही राशिसे गिनाजात

जैसे मेषके २ अंश ३० कलापर्यंत मेषका, ५।०पर्यंत वृषका एवं ७।३० मिथुनका,१०।०कर्कका १२।३०सिंहका, १५।०कन्याका १७।३० ।तुलाका२०।०वृश्चिकका,२२।३० धनका,२५।० मकरका२७।३०कुंभका३०।०में मीनका द्वादशांश जानना। ऐसेही वृषमें वृषसे, मिथुनमें मिथुनादि। द्वादशांश सभी राशियोंमें जानने१०

पंचपंचाष्टशैलाक्षास्त्रिंशांशा विषमे क्रमात् ॥
भौमभानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात्समे ॥ ११ ॥

त्रिंशांश--विषम राशिके ५ अंशपर्यंत मंगलका, पांचसे ऊपर १० अंशपर्यंत शनिका, एवं १८ पर्यंत बृहस्पतिका, २५ लों बुधका, ३० पर्यंत शुक्रका त्रिंशांश और समराशिमें (व्युत्क्रम)

उच्चनीचादिचक्रम् ।

ग्र.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
उच्चराशि	१	२	१०	६	४	१२	७	३	९
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१	१
नीचराशि	७	८	४	१२	१०	६	१	९	३
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१	१
गृह	५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११	६	१२
मूलत्रिकोण	५	२	१	६	९	७	११	३	१२
रंग	रक्तश्या.	गौर	रक्तगो.	दूर्वाश्या.	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
वर्णरंग	ताम्र	श्वेत	आतर.	हरित	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
देवता	अग्नि	जल	कुमार	विष्णु	चंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	राक्षस	रा.
दिशापति	पू०	वा०	द०	उ०	ई.	आ.	प.	नं.	नं.
पापशुभ	पाप	शुभ क्षी.पा.	पा.	शुभ पा.यु.पा.	शु.	शु.	पा.	पा.	पा.
पु.स्त्री.नपु.	पु.	स्त्री	पु.	नपुं	पु.	स्त्री.	न.	पु.	न.
महाभूतप.	अग्नि	जल	अ.	भूमि	आका.	वायु	आ.	आ.	आ
वर्णाधीश	राजा	वैश्य	रा.	वैश्य	ब्रा.	ब्रा	अंत्यज	अं.रा.	अं.रा.
सत्वादिगु	सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम
स्थान	देवालय	जलाश.	अग्नि	क्रीडाभू.	भंडार	शयन	खात	छिद्र	छिद्र
वस्त्र	मोटा	नया	दग्ध	जलन	अदृढ	दृढ	स्फटित	मलि.	मलि.
धातु	ताम्र	मणि	सुवर्ण	रौप्य	सुव.	मोती	लो.	शीश	शीश
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्री०	शरद	हेम.	वसंत	शि.	ग्री०	ग्री०
नि. द.	३	१०	९	५	८	४	७	७	७

विपरीत जैसे ५ अंशपर्यंत शुक्रका, १२ पर्यन्त बुधका, २० प० बृहस्पतिका, २५ प० शनिका, ३० पर्यंत शुक्रका होताहै ११॥

नवांशगणना ।

च० १	च० १०	च० ७	च०४
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२

नवांशविभागः।

भाग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अंश.	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

त्रिंशांशन्यासः ।

विषमर्क्षे	५	७	८	५	५	५	७	८	५	५	समर्क्षे
	मं.	श.	बृ.	बु.	शु.	शु.	बु.	बृ.	श.	मं	
	५	१२	२०	२५	३०	५	१२	२०	२५	३०	

चरणविवृद्ध्या खेटा दशमसहोत्थे त्रिकोणभे जनने ॥ चतुरस्रेथ कलत्रे प्रयताः पश्यंति तत्फलं क्रमतः ॥ १२ ॥

ग्रहदृष्टि-जिसभावमें ग्रहहै उससे तीसरे दशवें स्थानमें एक चरण दृष्टि देखताहै, ९।५ में दो चरण, ८।४ में तीन चरण, सप्तममें पूरे चार चरण दृष्टि देखताहै । ऐसाही फलभी दृष्टिका देताहै, कोई ऐसाभी अर्थ करतेहैं कि, सूर्य तीसरे, चंद्रमा, दशममें, मंगल नवममें बुध पंचममें, बृहस्पति अष्टममें, शुक्र चतुर्थमें, शनि सप्तममें पूर्ण देखतेहैं यह निसर्ग दृष्टिहै ॥ १२ ॥

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरावजादितः ॥
नरनारी क्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥ १३ ॥
मिथुनं धन्विपूर्वार्द्धतुलाकन्याघटा नराः ॥
चतुष्पदा धनुःसिंहवृषमेषा मृगादिमः ॥ १४ ॥
मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो वृषभ आदिमः ॥
कन्याधनुस्तुलाकुंभः प्रवदंति पुरातनाः ॥ १५ ॥

इति भावकुतूहले संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

मेषादि राशि क्रमसे चर, स्थिर, द्विस्वभावसंज्ञकहैं मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्वभाव। कर्क चर इत्यादि (प्रकट) १।४ ७।१० चर, २।५।८।११ स्थिर, ३।६।९।१२ द्विस्वभावहैं। ऐसेही मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, इत्यादि (प्रगट) १।३।५।७।९।११ क्रूर, २।४।६।८।१०।१२ सौम्य हैं। ऐसेही मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पु० इत्यादि (प्रगट) विषम राशि पुरुष, सम स्त्री संज्ञकहैं। ऐसेही विषम सम क्रमसे जानने, जैसे मेष विषम, वृष सम इत्यादि (प्रगट) १।३।५।७।९।११ विषम, २।४।६।८।१०।१२ समहैं और मिथुन धनका पूर्वार्द्ध, तुला, कन्या, (द्विपद) मनुष्य धनका उत्तरार्द्ध सिंह; वृष, मेष, मकरका पूर्वार्द्ध चतुष्पद उपलक्षणसे मकरका उतरार्द्ध, कुंभ, मीन जलचरहैं। कर्क, वृश्चिक कीटहैं और सूर्यका मूलत्रिकोण सिंह, चंद्रमाका वृष, मंगलका मेष, बुधका कन्या, बृहस्पतिका धन, शुक्रका तुला, शनिका, कुंभहै यह प्राचीन आचार्य्योंने कहेहैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

राशिभेदाः ।

राशयः	मेष	वृष.	मिथुन	कर्क.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुंभ	मीन
वषमादि	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०	वि०	स०
पु. स्त्री.	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
क्राक्रूर	क्रूर	सौ०	क्रूर	सौ०	क्रूर	सोम्य	क्रूर	सोम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सो०
चरादि	चर	स्थिर	द्विस्व.	च०	स्थि०	द्वि०	च०	स्थि०	द्वि०	चर०	स्थि	द्वि०
दिशा	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०
संज्ञा	चतुष्पद	चतु०	द्विपद	कीट	चतु.	द्विप.	द्विपद	कीट	द्विप० चतुष्प.	चतु० जल.	द्विप.	जलच.

इवि भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां संज्ञाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

अब यहांसे जन्मलग्न निश्चयकरनेकेलिये चिह्न कहे जातेहैं।

(अथ जातकचिह्नज्ञानम्) जनुषि लग्नगतो वसुधासुतो मदनगोपि गुरुः कविरेव वा ॥ भवति

तस्य शिरोव्रणलांछितं निगदितं यवनेन महा-
त्मना ॥ १ ॥

जिसके जन्म लग्नमें मंगल तथा सप्तम बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो उसके शिरमें चोटलगनेसे यद्वा व्रणादिसे (दाग) खोट होवे, यह योग महात्मा यवनका कहा है ॥ १ ॥

भवति लग्नगते क्षितिनंदने भृगुसुतेपि विधाविह
जन्मिनाम् ॥ शिरसि चिह्नमुदाहृतमादिभिर्मुनि-
वरैर्द्विरसाब्दसमासतः ॥ २ ॥

मंगल लग्नमें शुक्र चंद्रमा सहित जिस मनुष्य का हो उसके शिरमें दूसरे अथवा छठे वर्षमें चिह्नहोवे यह पूर्व मुनियोंने कहाहै इसमें स्मरण रखना चाहिये कि, मंगल बली हो तो (व्रण) दाग और शुक्र चंद्रमा बली हों तो तिल (मशक) लाखन आदि चिह्न होते हैं ॥ २ ॥

भार्गवे जनुरंगस्थे चाष्टमे सिंहिकासुते ॥
मस्तके वामकर्णे वा चिह्नदर्शनमादिशेत् ॥ ३ ॥

जन्म लग्नमें शुक्र तथा अष्टम स्थानमें राहु हो तो माथेमें अथवा बांये कानमें कुछ प्रकार चिह्न होवे ॥ ३ ॥

मदनसदनमध्ये सिंहिकानंदने वा सुरपति-
गुरुणा चेदंगराशौ युते नुः ॥ प्रकथितमिह चिह्नं
चाष्टमे पापखेटे कविरपि गुरुरंगे वामबाहौ
मुनीन्द्रैः ॥ ४ ॥

सप्तम भावमें राहु लग्नमें बृहस्पति हो अथवा लग्नमें बृहस्पति राहु युक्तहों अष्टम भावमें पापग्रहहों अथवा शुक्र बृहस्पति ल-

ग्नमें; अष्टममें पाप ग्रह हों तौ भी मनुष्यके बांये (बाहु) भुजापर चिह्न होवैं यह योग मुनि श्रेष्ठोंका कहाहै ॥ ४ ॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते ॥
वामपार्श्वे गतं चिह्नं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥ ५ ॥

लाभ (११) अरि (६) सहज (३) अथवा व्यय (१२) वें स्थानमें मंगल शुक्रसहित हो तो बांये बगलकी ओर (व्रण) खोटका चिह्न होवै ॥ ५ ॥

लग्ने क्षितिसुते मंदे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे ॥
लिंगे गुदसमीपे वा तिलकं संदिशद्बुधः ॥ ६ ॥

लग्नमें मंगल तथा शनि ५।९ स्थानमें हों परन्तु इसपर शुक्रकी दृष्टिभी हो तो (गुदा) मलद्वार के समीप अथवा लिंगस्थानमें तिलका चिह्न होवै ॥ ६ ॥

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविर्यदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ ॥ शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा सचिह्नं जठरं नरस्य ॥ ७ ॥

शुक्र पञ्चम वा नवम हो, अष्टमस्थानमें बुध बृहस्पति और लग्नमें वा चतुर्थ स्थानमें शनि हो तो मनुष्यके (उदर) पेटपर चिह्नहोवै ७

धने कवावष्टमलग्नभे वा दिवाकरे मंदकुजौ तृतीये ॥
कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिह्नं विशेषादिह जातकज्ञः ॥ ८ ॥

धन (२) स्थानमें शुक्र, तीसरे शनि मंगल हों अथवा अष्टम

भावमें वा लग्नमें सूर्य और तीसरे शनि मंगल हों तो जातक शास्त्र जाननेवाला मनुष्योंके कमरमें चिह्न कहे ॥ ८ ॥

पातालस्थौ राहुशुक्रौ लग्ने मंदः कुजोपि वा ॥
पादमूलेथ वा पादे वामे चिह्नं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

चतुर्थ स्थानमें शुक्र राहु; लग्नमें शनि अथवा मंगल हों तो पैरके नीचे अथवा पैरपर चिह्न होवे,यह बांये पैर यद्वा पैरके बांये ओर कहना ॥ ९ ॥

व्यये गुरौ विधौ भाग्ये लाभारिसहजे बुधे ॥
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद्बुधः ॥ १० ॥

बारहवें भावमें बृहस्पति, नवममें चंद्रमा; तथा ११।६।३ मेंसे किसीमें बुध हो तो (गुदा) मलद्वारमें गोलाकार चिह्न अथवा (व्रण) किसी प्रकारका दाग पंडित कहे ॥ १० ॥

दिनपतौ नवमे हरिभे यदा सहजहानिरवश्यमिहांगिनाम् ॥ धनगते रविजे तनुगे गुरावगुरुगेजननी नहि जीवति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें सूर्य नवम सिंहका हो तो अवश्यमेव उसके भाइयोंकी हानि होवे और दूसरा शनि लग्नमें बृहस्पति निर्बल नीच शत्रु राशि अंशकादिकोंमें अथवा अस्तंगत पापपीडित हो तो उस बालककी माता नहीं बचे ॥ ११ ॥

सुरगुरौ धनभावगते यदा कुजयुते शशिनापि च जन्मिनाम् ॥ अगुयुते सहजे सहजासुखं निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥ १२ ॥

बृहस्पति धन भावमें मंगल तथा शनिसे युक्तहो और तीसरा भाव राहुसे युक्त हो तो भाइयोंका सुख न हो प्रत्युत भ्रातृपक्षीय (असुख)क्लेशहोवे, अथवा सहजा बहिनी का सुख अर्थात् बहिन हों भाई न हों यहभी अर्थ है यह योग यवनोंने पूर्वाचार्य संमतिसे कहाहे ॥ १२ ॥

अरिनिकेतनगेवनिनंदने भवति राहुयुते निधने शनौ ॥ निगदितं सहजो जनिमात्रतो यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले लग्न चिह्नाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

छठा मंगल तथा अष्टम शनि राहुयुक्त हो तो उसके जन्महोनेहीमें उसका भाई मरजावे यह प्राचीनाचार्य्योंने कहा है ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

(अथारिष्टाध्यायः)तुहिनकिरणहोरिका च संध्या भचरमगाः खलखेचरा जनौ चेत् ॥ मृतिरथ रजनीशपापखेटैरखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥ १ ॥

बालकका सबसे प्रथ अरिष्ट विचार करना चाहिये बाल्यारिष्टोंसे बचजानेपर अन्य ज्योतिषोक्त फलादेशभी कहा जासकता- है. अरिष्ट योग जानकर उसका उपाय दीर्घायुकारक वैदिकतांत्रिकोक्त प्रकारसे मनुष्य करसकते हैं. इस निमित्त अरिष्ट योग कहतेहैंकि, संध्या कालमें जन्महो उस समय लग्नमें चंद्रमाका होरा हो तथा पापग्रह राशिके अंत्य नवांशकमें हों तो वह बालक नहीं बचेगा अथवा पापयुक्त चंद्रमा केंद्रमें हो तथा अन्य तीनहू केन्द्रोंमें पापग्रह हों तो भी वही फल कहना पूर्वोक्त योगमें संध्या

कही है उसका प्रमाण सूर्यास्तसे वा सूर्योदय डेढघडी पूर्व डेढ पीछेकी समस्त ३ घडी पर्यंत संध्याजाननी ॥ १ ॥

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीटलग्ने॥ विरतिं समुपैति बालकोयं खलखेटैरपि कामिनीतनुस्थैः ॥ २ ॥

(राशिचक्र) लग्नकुण्डलीमें लग्नसे सप्तमपर्यंत चक्रपूर्वार्द्ध और अष्टमसे द्वादशपर्यंत उत्तरार्द्धहै, चक्रके पूर्वार्द्धमें पापग्रह,उत्तरार्द्धमें शुभग्रहहों और लग्नमें (कीटराशि) ४।८ हों तो बालक मरजावे तथा पापग्रह स्त्रीसंज्ञक (सम) राशियोंका लग्नमें हो तो भी वही फल जानना ॥ २ ॥

खलखगसहितो निशाकरोयं तनुमृतिमारगतो हि जन्मकाले ॥ मृतिपदमुपयाति देवबालोऽपि च स कलैरविलोकितो न सौम्यैः ॥ ३ ॥

पापयुक्त चंद्रमा लग्न (१) मृति (८) मार (७) भावमें जन्मकालकाहो उसे पापग्रह देखें,शुभग्रहोंकी दृष्टि उसपर न होतो वह बालक मृत्यु पदको प्राप्त होगा ॥ ३ ॥

अशुभावगोदयगतौ शुभैरवलोकितो न खलु युक्तविधुः ॥ मृतिरंत्यगे कृशविधौ कुगजागंभगैः खलैरपि विकेंद्रशुभैः ॥ ४ ॥

दो पापग्रह स्थिरराशि लग्नमें हों, चंद्रमा पर शुभग्रहोंकी दृष्टि नहो और शुभग्रहोंसे युक्तभी न हो तो बालककी मृत्यु होवे और क्षीण चंद्रमा बारहवें लग्न अष्टमभावोंम स्थिर राशियोंके पापग्रहोंके पापग्रह हों केंद्रोंमें शुभग्रह नहों तो वहीफल जानना ॥ ४ ॥

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः पापैः स्यात्सपदि युतेक्षितेपि जंतोः ॥ अष्टाब्दैः शुभखचरैश्च मिश्रखेटैर्वेदाब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत् ॥ ५ ॥

चंद्रमा छठा आठवां पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु देताहै, यदि वह शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो ८ वर्ष पर्यंत बचता है, यदि शुभ और पाप दोनहूंसे युक्त दृष्ट हो तो ६ वर्ष जीवताहै यह मुनियोंका निरूपण किया हुआ है ॥ ५ ॥

अरिविरतिगते शुभे च दृष्टे बलसहितेन खलेन मासमायुः ॥ मदनसदनगेपि लग्ननाथे खलविजिते ध्रुवमस्य माससमायुः ॥ ६ ॥

छठें आठवें मेंही शुभग्रह हों उसे बलवान् पापग्रह देख उपलक्षणसे युक्तभी हों तो उस बालककी एकही महीनेकी आयुहोवै। तथा लग्नेश सप्तम पापग्रहोंसे (विजित) युद्धमें हाराहुआ वा नीचादिनिर्बल होकर पापपीडित हो तो निश्चय वही फल जानना ॥ ६ ॥

कृशशशिनि तनौ खलेष्टकेंद्रे मृतिरथ शीतरुचौ खलांतराले ॥ मुनहिबुकलयास्थितेपि लग्ने मुनिलयगैश्च सहांबया खलैः स्यात् ॥ ७ ॥

क्षीण चंद्रमा लग्नमें, पापग्रह आठवें तथा केंद्रोंमें हों तो शीघ्र मृत्यु होवै और चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें होकर भी १। ७। ४। ८ मेंसे किसीभावमें हों तथा ७। ८ भावोंमें पापग्रहभी हों तो वह बालक मातासहित मरजावै ॥ ७ ॥

भविरतिगतशोभनैरदृष्टे शशिनि नवेषु गतैः खलैर्मृतिः स्यात् ॥ तनुगतहिमगौ खले नगस्थे मृतिरुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥ ८ ॥

चन्द्रमा पर लग्न और अष्टम स्थान गत शुभग्रहोंकी दृष्टि नहो तथा ९। ५ भावोंमें पापग्रह हों तो शीघ्रही बालककी मृत्यु होवै और चंद्रमा लग्नमें पापग्रह सप्तममें हो तो मुनियोंने अवश्य बालककी मृत्यु कहीहै ॥ ८ ॥

असुर मुखगते खलेन युक्ते तनुगाविधौ सममंबया लयारे ॥ मृतिरथ तनुगे रवौ सशस्त्रं ग्रहणगते खलसंयुतेपि मृत्युः ॥ ९ ॥

राहुके साथ यद्वा ग्रहण समयका चंद्रमा पाप युक्त होकर लग्नमें हो मंगल अष्टम स्थानमें हो तो मातासहित बालक मरे इस योगमें यदि सूर्यभी लग्नमें हो तो शस्त्रसे उनकी मृत्यु होवै सूर्य वा चंद्रमा ग्रहण समयका शनिसे युक्त लग्नसे हो तौभी वही फलहै ॥ ९ ॥

सबलशुभखगैर्युते न दृष्टे तुहिनकरे दिनपेऽथवा तनौ चेत् ॥ निधननवसुताश्रिताः खलाःस्युर्निधनमिहाशु वदंति वै मुनीन्द्राः ॥ १० ॥

सूर्य अथवा चंद्रमा लग्नमें पाप युक्त दृष्ट हो उसे बलवान् शुभग्रह न देखे न युक्त हो तथा ८। ९ । ५ भावोंमें पापग्रह हों तो बालककी मुनीन्द्र शीघ्रही मृत्यु कहते हैं ॥ १० ॥

शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेण व्ययनवलग्नलयाश्रितै-
र्मृतिः स्यात्॥ सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैर्न हि मरणं
गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥ ११ ॥

बारहवां शनि, नवम सूर्य, लग्नका चंद्रमा, अष्टम मंगल हों तो बालककी मृत्यु होवै, परंतु उक्त मृत्युकारक योगोंपर बलवान् बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो मृत्यु नहीं होती और उपलक्षणसे दुष्टयोग शुभग्रहोंकी दृष्टि एवं योगसे मृत्यु नहीं करते अरिष्ट देतेहैं कदाचित् उपायोंसे अरिष्टोंकी शांति करतेहैं ॥ ११ ॥

लयमारलग्ननवधीव्ययगः खलखेचरेण सहितः
सितगुः ॥ अवलोकितो नहि युतश्च शुभैर्नियतं
भवेत्स मरणाय तदा ॥ १२ ॥

चंद्रमा पापग्रहसहित ८।७।१।९।५।१२ में से किसी भावमें हो तथा उसपर शुभग्रहकी दृष्टि न हो न उसके साथ शुभ ग्रह हो तो मृत्यु निश्चय करके शीघ्र ही होतीहै ॥ १२ ॥

बलियोगकारकखगाश्रितभे जनिभे तनावपि यदास्ति
विधुः ॥ बलसंयुतः खलजदृक्सहितः शरदंतरेव
मृतिदः स तदा ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले बाल्यारिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

उक्त योगोंमेंसे जिनके फलका समय नहीं कहागया उनके लिये कहतेहैं कि-बलवान् योगकारक ग्रह जिसमें बैठा है उसपर जब बली चंद्रमा आवै अथवा जन्मराशिपर जब आवै अथवा लग्नराशिपर आवै परंतु इसपर पापग्रहकी दृष्टि या पापग्रह युक्त हो तो उस समय अरिष्टयोगका अरिष्ट होता है यह विचार एकवर्षके भीतर है ऊपर नहीं ॥ १३ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां बाल्यारिष्टाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

(अथपित्राद्यरिष्टम्) आदित्याद्दशमे पापः पीडितो दश-
माधिपः।तदा पितुर्महाकष्टं निधनं वेति कीर्तितम्॥१॥

सूर्यसे दशम पापग्रह हो तथा लग्नसे दशम भावका स्वामी (पीडित) पाप युक्त हो तो बालकके पिताको बडा कष्ट अथवा मृत्यु होवै ॥ १ ॥

भवति यदि शशांकः पापयोरंतराले जनुषि सुखन-
गस्थैः पापखेटैः शशांकात् ॥ विधुरपि बलहीनो
नष्टकांतिर्जनन्या निधनमपि विशेषादाहुराचार्य-
वर्य्याः ॥ २ ॥

चंद्रमा पापांतर्गत हो तथा चंद्रमासे ४।७ भावोंमें पापग्रह हों और चंद्रमा बलरहित एवं क्षीणभी हो तो ऐसा योग जन्ममें होनेसे श्रेष्ठ आचार्योंने बालककी माताकी मृत्यु कही है ॥ २ ॥

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले धरानंदनाक्रांत-
भावात्सहोत्थे ॥ तदैवाशु नाशं सहोत्थस्य धीरा
मणित्थादयः प्राहुराचार्य्यमुख्याः ॥ ३ ॥

यदि जन्मसमयमें पापग्रह मंगलस्थित राशिसे तीसरे हों तो शीघ्रही भाइयोंका नाश होवै. यह मणित्थआदि मुख्य आचार्यों-ने कहाहै ॥ ३ ॥

बुधारातिभावे तु पापा भवंति वृतो ज्ञोपि नीचः श्रितो
नष्टवीर्य्यः ॥ तदा मातुलानां विनाशो विशेषादिति
प्राहुराचार्यवर्य्या नराणाम् ॥ ४ ॥

बुधसे छठे स्थानमें पापग्रह हों बुध पापांतस्थ वा पापयुक्त तथा

बलहीन नीचराशिअंशकमें हो तो विशेषतः मनुष्योंके (मातुल) मामाओंका विनाश होवै यह श्रेष्ठआचार्योंका मत है ॥ ४ ॥

बृहस्पतेः पंचमभावसंस्था महीजमंदाग्रुदिवाकराश्चेत् ॥ गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥ ५ ॥

बृहस्पतिसे पंचम स्थानमें मंगल, शनि, राहु, सूर्यमेंसे कोई भी ग्रह हो तथा बृहस्पतिसे पंचम भावका स्वामी पापयुक्त हो तो उस मनुष्यके पुत्र न हो अथवा पुत्रहानि होवै ॥ ५ ॥

चेत्कवेरंगनागारगामी कुजातो विनाशोङ्गनायाः सपापो निरुक्तः ॥ नैधने मंदतः पापखेटा बलिष्ठा नृणां नैधनं सत्वरं संदिशन्ति ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

शुक्रसे सप्तम स्थानमें मंगल पापयुक्त हो तो स्त्रीहानि करताहै और शनिसे अष्टम पापग्रह बलवान् हों तो मनुष्योंकी अल्पमृत्यु करतेहैं ॥ ६ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अरिष्टभंगः) भवतीन्दुरथो शुभांतराले परिपूर्णः किरणैश्च जन्मकाले॥विनिहंति तथाशु दोषसंघानिभसंघानिव केसरी बलिष्ठः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त बाल्यारिष्ट योगोंके परिहार अरिष्टभंगयोग कहतेहैं कि, जन्म समयमें चंद्रमा शुभग्रहोंके बीचमें तथा पूर्णभी हो तो उक्त प्रकार दोषसमूहको नाश करताहै, जैसे बलवान् सिंह हाथियोंके झुंडको नाश करताहै, तैसेही यह चंद्रमा करताहै ॥ १ ॥

यदि जनुषि निशाकरोरिभावं गुरुकविचंद्रजवर्ग-
गो विशेषात् ॥ शमयति बहुकष्टजालमद्धा मुर-
हरनाम यथाघसंघतापम् ॥ २ ॥

जो जन्ममें चंद्रमा छठे स्थानमें, (शुभग्रह) बृहस्पति, शुक्र, बुध के (वर्ग) राशिअंशकादियोंमें हो तो विशेषतासे बहुत कष्टोंके जालको साक्षात् शमित करदेताहै, जैसे मुरदैत्यके मारनेहारे श्रीभगवान्का नामकीर्तन पापसमूहको शमित करता है ॥ २ ॥

यदि सकलनभोगवीक्ष्यमाणो लसिततनुर्जनुरिं-
दुरेव सद्यः ॥ दिविचरजनितं विहंति दोषं खगप-
तिराशु यथा भुजंगजालम् ॥ ३ ॥

यदि जन्ममें चंद्रमा पूर्णमूर्त्ति हो तथा उसे सभी ग्रह देखें तो यही एक ग्रह ग्रहोंसे उत्पन्न (दोष) अरिष्टको तत्कालही नाश करदेताहै जैसे सर्प (जाल) समूहको गरुड शीघ्र नाश करता है ॥ ३ ॥

भवति यदि तनोः क्षपाकरोयं मृतिभवने शुभ-
खेटवर्गगश्चेत् ॥ गदविकलतनुं पितेव बालं किल
परितः परिरक्षति प्रसन्नः ॥ ४ ॥

यदि चंद्रमा लग्नसे अष्टम स्थानमें शुभग्रहके (वर्ग) राशि अंशादियोंमें हो तो समस्त अरिष्टोंसे बचताहै, जैसे रोगी बालकको उसका पिता सर्वतः रक्षा करता है ॥ ४ ॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे जनिसमये कविनाऽन-

लोकितश्चेत् ॥ शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं जलमिव पावकमंगिनामतीव ॥ ५ ॥

यदि चंद्रमा जन्मसमयमें शुभग्रहके राशिमें एवं अंशकमें हो व शुक्र उसे देखे तो समस्त अरिष्टोंको शमित करता है जैसे जल अग्निको शमित करदेताहै ॥ ५ ॥

बलवानपि केंद्रगो विशेषादिह सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः ॥ शमयत्यखिलामरिष्टमालामपि गांगं हि जलं यथाघजालम् ॥ ६ ॥

यदि बुध उपलक्षणसे अन्य शुभग्रहभी बलवान् हो विशेषतः केन्द्रमें हो तथा लाभभावमें सूर्य हो तो संपूर्ण अरिष्टकी मालाको शमित करताहै जैसे गंगाजल समस्त पापजालको शमित करताहै ॥ ६ ॥

भवति हि जनुरंगपो बलिष्ठः सकलशुभैरवलोकितो न पापैः ॥ इह मृतिमपहाय दीर्घमायुर्वितरति वित्तसमुन्नतिं विशेषात् ॥ ७ ॥

जन्मलग्नेश बलवान् हो तथा उसे समस्त शुभग्रह देखें पापग्रह न देखें तो मनुष्यको मृत्यु हटाय कर दीर्घायु कर देताहै तथा विशेष करके धनकी उन्नति (वृद्धि) भी करता है ॥ ७ ॥

सुरपतिगुरुरंगधामगामी निजपदगोपि च तुंगतामुपेतः ॥ बहुतरखगजं निहंति दोषं हरिरिभयूथमुपागतं हि यद्वत् ॥ ८ ॥

लग्नमें बृहस्पति अपनी राशि वा अंशमें हो अथवा अपने उच्चराशि (४) अंशकमें हो तो बहुत प्रकार ग्रहदोषोंको नाश कर-

ताहै जैसे सिंहहाथियोंके झुंडमें जाकर उनका नाश करताहै ॥८॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः सकलशुभैरवलोकिता यदि स्युः ॥ खगकृतमपि वारयंति रिष्टं तृणराशी-निव वह्निबिंदुरेकः ॥ ९ ॥

पापग्रह बृहस्पति, शुक्र, बुधके राशि अंशमें हों तथा उन्हें शुभग्रह देखें तो अरिष्टाध्यायोक्त अरिष्ट दूर होते हैं जैसे अग्निका एक (बिंदु) कण तृण घासके पुंजको फूँकदेताहै ॥ ९ ॥

सहजरिपुगतोथ लाभगो वा सकलशुभैरवलोकि-तो युतो वा ॥ अगुरिह विनिहंति रिष्टजालं नग-जाधीश इवाधितापराशिम् ॥ १० ॥

राहु जन्म लग्नसे ३ । ६ । ११ । भावोंमेंसे किसीमें हो और समस्त शुभग्रह उसे देखें अथवा शुभग्रह युक्त हो तो अरिष्टरूपी जालको नाश करताहै जैसे (नगजा) पार्वतीके पति शिव तीन प्रकारके ताप शांत करतेहैं ॥ १० ॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा यदि सकला नररा-शिगा भवंति ॥ हितभवनानिजोच्चगेहगा वा बहुतर-माशु लयं प्रयाति रिष्टम् ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहलेऽरिष्टभंगाध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

जन्मसमयमें बलवान् ग्रह (पुरुष) विषम राशियोंमें सभी हों अथवा मित्रके घरमें, अपने उच्चराशिमें हों तो बहुत प्रकारके अरिष्ट नाश होतेहैं ॥ ११ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायामरिष्टभंगाध्यायः पंचमः ॥ ५ ॥

अथ पुत्रभावविचार ।

नंदनाधिपतिना युतेक्षितं नंदनं शुभनभोगसंयुतम्॥ नंदनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन नहि नंदनागमः॥ १॥

गृहस्थको संतान उत्पन्न करना मुख्य कर्तव्य है परंतु यह दैवाधीनहै इसलिये प्रथम संतानभावविचार करते हैं कि पंचमभावेश पंचम भावमें हो अथवा पंचमभावको देखे तथा पंचमभाव शुभग्रहसे युक्त हो तो शीघ्र पुत्र उत्पन्न होगा, यदि उक्त प्रकारसे विपरीत अर्थात् पंचमेश तथा शुभग्रह पंचममें न हों उसे न देखें पापग्रह पंचममें हों तथा पंचमको देखें तो पुत्रसुख न होवे ऐसे योग जन्म, वर्ष, प्रश्न, सभीमें देखे जाते हैं॥ १॥

अंगाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात्॥ सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वति सुतश्च कन्या॥ २॥

लग्नेश लग्न, धन, तृतीयमेंसे किसीमें हो तो प्रथम पुत्र पीछे कन्या होगी, यदि लग्नेश चतुर्थ हो तो मनुष्यके प्रथम कन्या पीछे पुत्र, पुनः कन्या पुनः पुत्र होते हैं। अथवा कन्या पुत्र यमल होते हैं परन्तु इसमें लग्न, लग्नेश, पंचम, पंचमेश द्विस्वभावगत हों तो ये फल होतेहैं॥ २॥

यावन्मितानामिह पुत्रभावे नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः॥ तावंत एवास्य भवंति पुत्राः कन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या॥ ३॥

पंचमभावमें जितने पुरुष ग्रहोंकी दृष्टि हो उतने पुत्र, तथा जितने स्त्रीग्रहोंकी दृष्टि हो उतनी कन्या होती हैं, परन्तु योगकारक ग्रह यदि स्वगृह उच्चादि बलसहित हों तो द्विगुण त्रिगुण उत्पन्न करतेहैं, नीचशत्रुराशिगत उतने संख्याक गर्भहानि करतेहैं ॥ ३ ॥

सहजभावपतिः सहजे यदा तनुगतो धनगो व्यय-
गोऽपि वा ॥ सुतगतः सुतहानिकरो नृणां बुधवरैरु-
दितो मिहिरादिभिः ॥ ४ ॥

तृतीय भावका स्वामी तीसरा, लग्नमें, दूसरा, बारहवां, अथवा पंचम हो तो संतानहानि करता है यह वराहमिहिरादि श्रेष्ठपंडितोंने कहा है ॥ ४ ॥

शुक्रांगारनिशाकरा द्वितनुगाःसंतानसौख्यं नृणा-
मादौ संजनयंति जन्मसमये चापं विना प्रायशः॥
मीने वा धनुषि प्रमाणपटवः संतानभावे यदा सं-
तानं न तदामनंति विबुधाः पुंसां विशेषादिह ॥५॥

शुक्र, मंगल, चंद्रमा द्विस्वभाव राशियोंमें विशेषतः पंचम भावमें हों तो प्रथमहीसे संतानका सुख देते हैं, परन्तु विशेषतः धनके होनेमें उक्त फल नहीं देते, बृहस्पतिके राशि मीन अथवा धन पंचमभावमें हों तो मनुष्योंको पंडित जन संतान सुखविशेष नहीं कहते ॥ ५ ॥

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मंदे तुलायामजे चंद्रे
यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत् ॥
लग्ने चंद्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो जीवेंगे
सरवौ मृतावपि कुजे क्लीबर्क्षगे कंटके ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें सूर्य कर्कका, शुक्र सिंहका, शनि तुलाका, चंद्रमा मेषका हों तो वह (वीर्यच्युत) नपुंसक किंवा धातुक्षीणवाला होवै अर्थात् क्लीबतासे संतान न होनेपावैं तथा लग्नमें चंद्रमासहित बृहस्पति, पंचममें शनि हो तो वीर्यक्षीण होवै अथवा बृहस्पति लग्नमें सूर्यसहित तथा अष्टममें मंगल हो और नपुंसक ग्रहकी राशि केंद्रमें हो तो नपुंसक होवै ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमंदावलोकिते ॥
शनिक्षेत्रगते शुक्रे वीर्यहीनो नरो भवेत् ॥ ७ ॥

लग्नमें कन्या राशि हो उसपर बुध, शनिकी दृष्टि हो तथा शुक्र शनिके क्षेत्र १०।११ में हो तो वह मनुष्य वीर्यहीन (नपुंसक) होवै ॥ ७ ॥

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमे रवौ ॥
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ ८ ॥

बृहस्पति अथवा शुक्र नीचका हो तथा बुध सम राशिमें, सूर्य विषम राशिमें हों तो पुत्रका सुख न होवै यह उत्तम ज्योतिषियोंका कथन है ॥ ८ ॥

कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा ॥
मंददृष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेब्दक ॥ ९ ॥

चंद्रमा कर्कटका हो उसे पापग्रह देखें पापयुक्तभी हो और सूर्यपर शनिकी दृष्टि हो तो ६० वर्षकी अवस्थामें पुत्र उत्पन्न होवै ॥ ९ ॥

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ ॥
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाब्दात्परं सुतः ॥ १० ॥

जन्मलग्न पापग्रहकी राशि हो तथा पापग्रहसे युक्त हो और सूर्य वृश्चिकका, मंगल मिथुनका हो तो (३०) वर्षसे ऊपर संतान होवे ॥ १० ॥

अलौ गुरुकवी लग्ने भवेतां चंद्रजार्कजौ ॥
न पश्यति सुतं गेहे कदाचिदपि मानवः ॥ ११ ॥
मंदेन्दुदृष्टो रिपुसंयुतोंगाधिपो रविश्शत्रुधने विपुत्रः॥
मंदोरिगेहे बुधसूर्यचंद्रैर्दृष्टो विलग्ने खलवीक्षिते वा॥१२॥

वृश्चिक राशिमें बृहस्पति और शुक्र हों, लग्नमें बुध, शनि हों तो वह मनुष्य गृहमें कदापि पुत्रको नहीं देखै । लग्नेश शत्रुगृही वा शत्रुयुक्त हो शनि चंद्रमा उसे देखें तथा सूर्य छठा वा दूसरा हो तो अपुत्र होवै अथवा शनि शत्रुभावमें बुध सूर्य चंद्रमासे दृष्ट हो यह ऐसाही लग्नमें पापदृष्ट हो तोभी अपुत्र करताहै ॥ ११ ॥ १२ ॥

मंदालयेर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेपि वा पापखगस्य वर्गः ॥
अपत्यहानिः कुलदेवकोपात्पुरातनैरंगभृतांनिरुक्ता१३

शनिकी राशि १०।११ में सूर्य पापग्रहोंसे दृष्ट या युक्त हो अथवा पापग्रहके(वर्ग)राशि अंशकोंके लग्नमें हो तो कुलदेवताके कोपसे संतानकी हानि कहनी, यह फल मनुष्योंको प्राचीनाचार्योंने कहाहै ॥ १३ ॥

अपत्यभावे यदि मंगलः स्यादपत्यराशिं
विनिहंति सद्यः ॥ अस्तांशके पापयुते सुतेशे
तदा न संतानसुखं वदंति ॥ १४ ॥

पंचम स्थानमें मंगल हो तो जितने पुत्रहों सभीको नाश

करताहै यदि सप्तमभावांशपति एवं पंचमेश पापयुक्त हों तो संतानका सुख नहीं होता ऐसा आचार्य कहतेहैं ॥ १४ ॥

गुरोः सुतागारपतिः सपापो बलेन हीनो मनुजो विपुत्रः ॥ अरावपापे निधने तदीशः सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ॥ १५ ॥

बृहस्पतिसे पंचम भावका स्वामी पापयुक्त एवं बलहीन हो तो मनुष्य अपुत्र होताहै तथा छठे भावमें शुभग्रह, षष्ठेश अष्टम हो तो भी वही फल है ॥ १५ ॥

तथैव भानुः खलु पंचमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति बालम् ॥ लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ॥ १६ ॥

निर्बल सूर्य पंचम हो तो जितने बालक हों उन सबको नाश करे वा लग्नेश पापयुक्त और पंचमेश ८। १२ में हो तो पुत्रसुखसे रहित रहै ॥ १६ ॥

यदागुसूर्यारशनैश्चराणां दोषोऽथ वै जन्मनि मानवानाम् ॥ वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं तदा वदंतीति पुराणविज्ञाः ॥ १७ ॥

यदि जन्मकालमें संतानहानिकारक राहु, सूर्य, शनैश्चरका दोष हो अर्थात् ये ग्रह संतानहानिकारक हों तो (वंशेश) कुलदेवताके कोपसे संतानका नाश जानना उसके मनोहर पूजादि करनेसे संतानसुख होताहै यह पुराणाचार्य्योंका मत है ॥ १७ ॥

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात् ॥
गुरुचंद्रकृते दोषे यंत्रमंत्रौषधीबलात् ॥ १८ ॥

यदि बुध, शुक्र संतानहानि दोषकारक हों तो शिवके (पूजन)
आराधन करनेसे पुत्रप्राप्ति होवै। बृहस्पति, चंद्रमाका दोष हो
तो अनेक प्रकार यंत्र, मंत्र, साधन तथा दिव्य औषधिके प्रयोगसे
संतान सुख होताहै ॥ १८ ॥

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्त्तनम् ॥
शिखिना कपिलादानं मंदाराभ्यां षडंगकम् ॥ १९ ॥

संतानबाधकारक राहु हो तो किसीको किसी प्रकार कन्या
दान करना, सूर्यका दोष हो तो विष्णुका कीर्तन भगवान्के
आराधन विशेषतः हरिवंशका आराधन करना, केतु हो तो क-
पिला गोदान करनी, शनि, मंगल बाधक हों तो (षडंग) रुद्रा-
ध्यायका अनुष्ठान रुद्राभिषेक घटीस्नानादि करना ॥ १९ ॥

सर्वदोषविनाशाय संतानहरिपूजनम् ॥
कुर्य्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥ २० ॥

इति भावकु० पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

समस्त दोषशांतिके लिये संतानगोपालका अनुष्ठान, पूजन
करना. तथा भौमव्रत अथवा कामदेवव्रत शास्त्रोक्त प्रकारसे कर-
ना औरभी उपाय धर्मशास्त्र आगम शास्त्रोंसे जानने ॥ २० ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां पुत्रभावविचाराध्यायः ॥ ६ ॥

(अथ राजयोगाः) खेटा यदा पंच निजोच्चसंस्थाः
ससार्वभौमः खलु यस्य सूतौ ॥ त्रिभिः स्वतुंगोप-
गतैः स राजा नृपालबालोन्यसुतस्तु मंत्री ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें पांच उपलक्षणसे चारभी ग्रह उच्चके हों
राजवंशी समस्त पृथ्वीका राजा चक्रवर्ती होवे अन्य कुलो-

न्न राजाही होवै । यदि तीन ग्रह उच्चके हों तो राजपुत्र राजा होवै, अन्यजात मंत्री होवै. अथवा स्वकुलानुमानश्रेष्ठता पावै ॥ १ ॥

गुरावुच्चे केंद्रे भवति दशमे दानवगुरौ जनुःकाले
मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम्॥गुरौ कर्के चापे
भवति च सचंद्रे दिनमणौ बुधे तुंगे लग्ने बलवति
खगे वा नरपतिः ॥ २ ॥

जन्मसमयमें उच्चका बृहस्पति केंद्रमें हो शुक्र दशम हो,तो उसकी (मुद्रा) मोहर छाप समुद्रपर्यंत चले अर्थात् समुद्रांत पृथ्वीका राजा होवै. यदि बृहस्पति कर्क वा धनका चन्द्रमासहित होवै तथा बुध वा सूर्य अपने उच्चमें होकर लग्नमें अथवा कोई बलवान् ग्रह लग्नमें हो तो राजा होवै ॥ २ ॥

गुरावंगे कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः सुते शुक्रे
वक्रे प्रभवति जनेर्यस्य समयः॥ महांभोधेर्नीरं
गमनसमये तस्य करिणां चलद्घंटानादाद्व्रजति
चपलत्वं हि परितः ॥ ३ ॥

बृहस्पति कर्कका लग्नमें, (सूर्यपुत्र) शनि ४ ।७। भावोंमेंसे किसीमें हो तथा शुक्र वक्रगति हो, ऐसा योग जिसके जन्मसमयमें हो वह ऐसा राजा होवै कि, जिसकी सवारी निकलनेमें चारों तरफसे हाथियोंके घंटाओंके नादसे समुद्रका जलभी चारों तरफ उछलने लगे ॥ ३ ॥

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनयस्तपः
स्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने॥गजानामा

लीभिर्विजयगमने तस्य सहसा समाक्रांता पृथ्वी
व्रजति चकिता मोहपदवीम् ॥ ४ ॥

जिसके जन्मसमयमें बृहस्पति सूर्य मेषके, मंगल दशम स्थानमें, शुक्र नवम भावमें और चंद्रमा बुध सहित हो तो उसके शत्रुपर चढाई करनेके गमनमें एकाएकी हाथियोंकी पंक्तिसे पृथ्वी भर जाकर (चकित) आश्चर्ययुक्त होके मोहको प्राप्त हो जावै ॥ ४ ॥

कन्यांगे सबुधे झषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्यौ बली मंदे
कर्कगते शरासनगते शुक्रे यदीया जनिः॥तस्यालं
शिरसा वहंति वसुधाधीशाः सदा शासनमानंदा
द्विकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः ॥ ५ ॥

कन्याका बुध लग्नमें बृहस्पति मीनका सप्तम हो, सूर्य-मंगल किसी स्थानमें बलवान् हों, शनि कर्कका, शुक्र धनका हो, ऐसे राजयोगमें जिसका जन्म हो उसकी आज्ञा (हुकुम) को राजालोग सर्वदा आनंदपूर्वक ऐसे ग्रहण करते हैं जैसे खिलेहुये कमलोंकी मालाको विशेषतासे गलेमें धारण प्रसन्नतासे करते हैं ॥५॥

भाग्ये भानुसुतो मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राः सुते
तिष्ठंति प्रबला दिवाकरकरव्यासंगमुक्ता यदा ॥
तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुंगराजिव्रजव्य-
स्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम् ॥ ६ ॥

नवम स्थानमें शनि, मकर राशिका मंगल, तथा बृहस्पति, बुध, शुक्र पंचम हों और उक्तग्रह बलवान् हों सूर्यकिरणोंके संगसे मुक्त हों अर्थात् अस्तंगत न हों उदयी हों ऐसे योगमें जिस-

किसीका जन्म हो तो उसकी सवारी निकलनेमें इधर उधरसे जो साथ चलनेवाले (जलेवदार) हैं उनकी पंक्तियोंके उलटे सीधे पैर पृथ्वीपर रखनेसे जो (रज) धूलि उडतीहै उससे आकाशभी ढकजावै इतना बडा राजा होवै ॥ ६ ॥

यदि तुलामकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसंति चेत् ॥ इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः सुरपतेः समतां तनुते नृणाम् ॥ ७ ॥

यदि ७।१०।१।४ राशियोंमें समस्त सूर्यादिग्रह हों तो इस योगके जन्मवाला मनुष्य चार समुद्रपर्यंतके राजाकी तुल्यता पावै ॥ ७ ॥

राज्यस्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपाताललकांतापुण्यानामुच्चराशौ पतय इह यदा वीर्यवंतो भवंति ॥ राजानो यस्य तस्य प्रबलबलघटादंतिघंटाधनुर्ज्याटंकारव्रातभीता जगदुदरगताः कंपभावं भजंति ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें दशम स्थानका स्वामी अपने उच्चमें हो तथा लग्न, धन, पंचम, सप्तम, चतुर्थ, नवम भावोंके स्वामी अपने अपने उच्चोमें हों अथवा बलवान् हों तो उस मनुष्यके (प्रबल) बडी भारी सेना (फौज) की घटासे एवं सेनाके हाथियोंकी घटा तथा धनुषोंकी(ज्या) चिल्लाके टंकारशब्दोंके समूहसे भययुक्त होकर राजेलोग पृथ्वीके भीतर कंदरा (खात) तैखाना आदियोंमें डरसे कांपतेहुये छिपजावैं ॥ ८ ॥

येषामर्को निजोच्चे प्रभवति मकरे मंगलो वैरि-
भावेदैत्येज्यः कर्मगामी शनिरपि सहजे जन्म-
मात्रेण तेषाम् ॥ पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजानितय-
शश्चंद्रकांत्याऽर्जुनाभा मत्तोन्मत्तप्रचंडप्रबलारि-
पुशिरोमंडले वज्रपातः ॥ ९ ॥

जिन मनुष्योंका सूर्य अपने उच्च (१) में, मंगल मकरमें छठा शुक्र दशम शनि तीसरा हो तो उनके जन्महीसे पृथ्वी शुभदान देनेके संकल्पके समुद्ररूपी जलसे परिपूर्ण होवै यश-रूपी चंद्रमाके कांतिसे अर्जुनके समान यद्वा (अर्जुनाभ) धव-लित (श्वेत, स्वच्छ) होजावै और ऐश्वर्यवान् तथा राजमदसे उन्मत्त अतिबलवान् बडे बडे शत्रुओंके शिरोंमें वज्रपात जैसा खटकने लगे ॥ ९ ॥

संबंधो दशमाधिपस्य नवमाधीशेन येषां जनुः-
काल पंचमभावपेन च बलोपेतस्य तुल्येन चेत् ॥
प्रस्थाने सति लीलया तनुभृतां वश्यारिविश्वंभराः
गर्जद्घोटकमत्तवारणघटाक्रांता समंताद्भवेत्॥१०॥

ग्रहोंके संबंध चार प्रकारके होतेहैं-परस्पर दृष्टि होनेम दृष्टिसं-बंध (१), एकके राशिमें दूसरा दूसरेमें पहिला अन्योन्याश्रय-संबंध (२), दोनहू भावाके स्वामी अपनी अपनी राशियोंमें स्थानसंबंध (३), कारकसंबंधी (४),जिनके जन्म समयमें नव-मेश दशमेशका किसी प्रकार संबंध हो अथवा पंचमेशके साथ उनका संबंध हो परंतु संबंधकारक ग्रह बलवान् हों तो संबंधभी (तुल्य) बलवान् एवं अधिकारीहीके साथ करें तो उनके यु-द्धार्थ प्रस्थानमें वा अन्य सवारी निकलनेमें पृथ्वी गरजतेहुये

घोडोंकी, मतवाले हाथियोंकी घटाओंसे चारोंओरसे आक्रांत होवे तथा लीलासे शत्रुकी पृथ्वी (राज्य) विनाही युद्ध किये वशमें होजावे ॥ १० ॥

राज्येशो यदि देवतालयपदे पारावतांशे तपःस्था-
नेशो धनगोपि गोपुरलवे लाभाधिपो जन्मिनाम्॥
चंचत्तुंगतुरङ्गकुंजरघटाघंटाधनुर्ज्यारवैर्वित्रस्ता
गमनोत्सवे दिगबला भ्रांतिं भजंति क्षणात् ॥ ११ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें दशमभावेश नवमस्थानमें पारावतांशकमें स्थित होवे, नवमेश द्वितीयस्थानमें होवे, तथा लाभेश गोपुरांशकमें हो तो उनके (प्रयाणोत्सव) सफरकी तयारीमें चपल तथा उच्च घोडे और उन्मत्त हाथियोंकी घंटाओंके शब्दोंसे एवं धनुषोंके टंकार शब्दोंसे भयभीत होकर दिशारूपी (अबला) स्त्री क्षणमात्रमें (भ्रांत) घबराहटयुक्त हो जाती हैं ॥ ११ ॥

कन्यामीनवृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्ति-
तः किंवा चापनृयुग्मकुंभहरिभे खेटे हि सिंहा-
सनः॥यः सिंहासनयोगजो हि मनुजो भूपाधिराजो
बलीगर्जत्कुंजरवाजिराजिमुकुटारूढो धरामंडले१२

यदि ६।१२।२।८ राशियोंमें सभी ग्रह हों तो सिंहासन योग होताहै यद्वा९।३।११।५ राशियोंमें हो तौभी यही योग होताहै जिसमनुष्यका जन्म सिंहासनयोगमें हो वह पृथ्वीमें गर्जन करने वाले हाथी घोड़ोंकी पंक्तिके (मुकुट) श्रेष्ठोंपर बैठनेवाला राजाओंकाभी राजा होवै ॥ १२ ॥

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनांत्यालितुरगे स-
माजः खेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः ॥ चतु-
श्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो महीपाना-
मालीमुकुटमणिपाली विजयते ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें १।५।६।११।३।१२।८।७ राशियोंमें स-
भी ग्रह हों तो इस योगका नाम चतुश्चक्र है इसमें जिसका जन्म हो
वह समस्त सुखभोगोंसे युक्त होकर राजाओंके मुकुटमणियोंकी
पंक्तिको जीतकर स्वयं अधिराज होताहै ॥ १३ ॥

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता
मुक्तालीव समस्तभूपमुकुटालंकारचूडामणिः ॥
तज्जातो रिपुपुंजभंजनकरो गंधर्वदिव्यांगनावृंदा-
नंदपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः ॥ १४ ॥

यदि एक एक ग्रह एक एक स्थानोंमें बराबर हों,जैसे मोतियोंकी
माला पृथक् २ एक २ दानेकी रहती है, तो इस योगको एकावली
कहतेहैं इसमें जन्माहुवा मनुष्य समस्त राजाओंके मुकुटकी
शोभा देनेवाला (चूडामणि) उत्तम नग सरीखा श्रेष्ठ होताहै. तथा
शत्रुओंके समूहका भंजन करनेवाला, गंधर्वकन्या और स्वर्गकी
स्त्रियोंकें समूहका आनंद करनेवाला, गुणोंके समूहको धारण कर-
नेवाला तथा चतुर्दश विद्याओंकी खान होताहै ॥ १४ ॥

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने जनुःका-
ले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः ॥ प्रचंडप्रोत्तुंग-
प्रबलरिपुहंता क्षितिपतिः समंतादाधिक्यं व्रजति
धनदानेन महताम् ॥ १५ ॥

कर्क, कन्या, मीन, धन, मिथुन, राशियोंमें सूर्यादि सभी ग्रह जिसके जन्मसमयमें हों वह अति प्रबल (बढीहुई) तीक्ष्णयोधाओंवाली बडी भारी शत्रुसेनाको जीतनेवाला राजा होताहै तथा धन देनेसे सभी प्रकार बडे बडे लोगोंसेभी अधिकता पाताहै १५॥

अथादित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे रविसुतो मृगे मीने जीवो हिमकरसुतो यस्य मिथुने ॥ तुलायां शुक्रश्चेदजभवनगो भूमितनयो नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः ॥ १६ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा कर्कका, शनि, मकरका, बृहस्पति मीनका, बुध मिथुनका, शुक्र तुलाका और मंगल मेषका हो तो वह मनुष्यबालक राजाओंके मुकुटका श्रेष्ठ मणि ऐसा श्रेष्ठ राजा होवे ॥ १६ ॥

दिवानाथः सिंहे गवि हिमकरो मेषभवने महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः ॥ भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनि कविर्जनुःकाले यस्य प्रभवति नरोऽसौ क्षितिपतिः ॥ १७ ॥

जिसके जन्मसमयमें सूर्य सिंहका, चंद्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, बृहस्पति धनका, शनि कुंभका और शुक्र तुलाका हो तो वह राजा होवे ॥ १७ ॥

बली पुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवने तपःस्वाम्यागारे भवति दशमेशोपि भविनाम् ॥ तदा गर्जद्दंतावलनिकरघंटाघनरवैर्दिगन्तं वित्रस्तो विजयगमने यात्यरिगणः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें नवमेश बलवान् होकर दशम वा दशमे
शके राशिमें तथा दशमेश नवम वा नवमेशके राशिमें हो तो व
ऐसा प्रतापी राजा हो कि, जिसके शत्रुविजयार्थ गमन (शत्रुप
चढाई) में गर्जन करतेहुये हाथियोंके घंटाओंके घने शब्दसे ड
कर शत्रुसमूह दिगंतोंमें भागजावे ॥ १८ ॥

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने बली
कर्माधीशो भवति भविनामेव जनने ॥ समुद्रांतं
कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली धनुर्ज्याटंकारैर्भ-
जति चकिता भीतिपदवीम् ॥ १९ ॥

यदि जन्मधारियोंके जन्मसमयमें नवमेश दशमस्थानमें औ
दशमेश नवमस्थानमें हों, दोनहूं बलवान् हों, तो समुद्रपर्यंत की
फैलानेवाला राजा होवै तथा उसके शत्रुविजयार्थ गमनमें धनुषक
(ज्या) कमानके टंकारशब्दोंसे शत्रुसमूह आश्चर्ययुक्त होक
भयके मार्गको प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥

भवेदंगाधीशो जननसमये पुण्यभवने तथा कर्म-
स्वामी भवति च विलग्ने जनिमताम् ॥ तदा गर्जद्दंता-
वलकरभवाजिव्रजपदैः समाक्रांता पृथ्वी व्रजति
गमने मोहपदवीम् ॥ २० ॥

जिसके जन्मसमयमें लग्नेश नवमस्थानमें एवं दशमेश लग्न
हो तो वह राजा होकर गर्जन करनेवाले हाथी घोडे ऊँ
आदिकोंके समूहसहित जब गमन करे तो सेनाके बोझों
दबीहुई पृथ्वी मोहपद (घबराहट) को प्राप्त होजावे ॥ २० ॥

यदा राज्यस्वामी नवमसुतकेंद्रेऽर्थभवने बला-
क्रांतो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः ॥ सदा
का०्यालापी नवमणिकलापी बहुबली तुरंगाली-
दंतावलकलभगंता धनपतिः ॥ २१ ॥

यदि जन्मसमयमें दशमभावका स्वामी त्रिकोण (९।५) वा
कद्र (१।४।७।१०) यद्वा धन (२) स्थानमें बलवान् हो तो वह
सर्वदा काव्य करने वा कहनेवाला होवै एवं बहुत बलवान् और
अनेक घोडाओंके पांति और हाथियोंके मनोहर जवान पट्ठाओंके
सवारीमें गमन करनेवाला धनवान् राजा होवै ॥ २१ ॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः सुतेशः
कोदंडे भवति भविनो यस्य जनने ॥ भयातीतो
भोगी भवति चिरजीवी बहुगुणी मतंगालीगंता
रिपुनिकरहंता नरपतिः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मसमयमें दशमेश पंचमभावमें शुभग्रहयुक्त
हो तथा पंचमेश धनराशिका यद्वा दशम हो वह भयरहित तथा
सुखभोग भोगनेवाला, दीर्घायु, बहुतगुणवान् होवै. हाथियोंके झुंड
उसके सवारीमें रहैं वह शत्रुसमूहको मारनेवाला राजा होवै ॥२२॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे विशालं
भूपालं कलयति नृबालं बहुबलम् ॥ अरातीभव्राता-
कुशमानिशमानन्दानिरतं नितांतं श्रीमंतं विविध-
धनदानोद्यतमलम् ॥ २३ ॥

धनभावका स्वामी यदि पारावतांशमें हो तो मनुष्यके बाल-
कको बहुत बडाराजा करताहै कि,जो शत्रुरूपी हाथीसमूहोंके ऊपर

अंकुशतुल्य रहताहै. सर्वदा प्रसन्न, सर्वदा धन, राज्यलक्ष्मीसे युक्त रहताहै अनेकप्रकारसे (उदार) धन देनेमें निश्चय तत्पर रहताहै२३॥

देवलोकलवगो निशाकरात्पुण्यराशिपतिरिन्दुकां-
तिभाक् ॥ गोगजव्रजतुरंगमंडलीमण्डितो मणि-
गणैरिलापतिः ॥ २४ ॥

नवमभावेश चंद्रमासे २१ वें अंशमें हो तथा चंद्रमा पूर्णमूर्ति होवे तो वह गौ, हाथियोंके समूह घोडाओंके मंडलीसे शोभायमान (मणि) रत्नोंके समूहसे युक्त पृथ्वीका पति होवे ॥ २४ ॥

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ स्वतुंगे
वा पंकेरुहनिकरबन्धावपि भृशम् ॥ भयत्राता
दाता निगमविहिताचारचतुरो गुणव्रातैर्नम्रो धन-
पतिसमानो विजयते ॥ २५ ॥

यदि १०।४।७ भावोंमेंसे किसीमें बृहस्पति अपने उच्चका हो और उसके साथ विशेषतः चंद्रमाभी हो तो भयसे रक्षा करनेवाला, बहुत दान देनेवाला, शास्त्रोक्त आचार करनेमें चतुर, अनेक शौर्य्यौदार्य्यादिगुणोंसे नम्र और धनमें कुबेरके समान जयशाली राजा होवे ॥ २५ ॥

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्र-
जातः॥नृपालबालोऽपि च वक्ष्यमाणैः सुयोगजातै-
रिति संप्रवक्ष्ये ॥ २६ ॥

इतने जो राजयोग कहेहैं इनमें नीचकुलका उत्पन्न पुरुषभी राजा होजाताहै. ये सर्वसाधारणके लिये तुल्य हैं और राजाका पुत्र जिसका राजा होना संभव है वह थोडेभी राजयोगसे राजा होताहै. ऐसे अच्छे सुयोग आगे ग्रंथकर्ता कहतेहैं ॥ २६ ॥

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चंद्रयुते प्रसूतौ ॥
कुजे यदाये भृगुजेष्टमस्थे भवेन्नृपालो नृपवंशजातः २७

यदि जन्ममें मकर लग्न हो, शनि कर्कमें, सूर्य पञ्चममेंहो चंद्रमा भी साथहो तथा मंगल ८ का ग्यारहवें भावमें, शुक्र सिंहका अष्टम, जन्ममें हों तो राजपुत्र राजा होवै अन्यकुलोत्पन्न कुलाधिक होवै॥२७॥

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे नृपालबालोपि च भूमिपालः ॥ कुलीरगो देवगुरुः सचंद्रो नृपालबालं प्रकरोति बालम् ॥ २८ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति, शुक्र, चतुर्थ भावमें हों तो राजपुत्र राजा होवै तथा कर्कका बृहस्पति चंद्रमासहित हो तो बालक राजाओंमें श्रेष्ठ होवै ॥ २८ ॥

यदेन्द्रमंत्री विधुजं प्रपश्येद्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति ॥ प्रसूतिकाले यदि पंचराशौ चैकोपि बालं कुरुते नृपालम् ॥ २९ ॥

यदि जन्मसमय बृहस्पति बुधको देखे तो गुणज्ञ तथा विद्वान् राजा करताहै तथा जन्मकालमें यदि पंचमभावमें एकभी बलवान् ग्रह हो तो बालक राजा होवै ॥ २९ ॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो नृपसुतं कुरुते च नृपोत्तमम् ॥ विधुसुतः सविधुः कुरुते नृपं भवति तुंगगतो यदि जन्मनि ॥ ३० ॥

सूर्य मित्रांशकमें चंद्रमासे दृष्ट हो तो राजपुत्र राजाओंमें उत्तम होवै, बुध चंद्रमासहित उच्च (६) का हो तो जन्महीसे राजा होवै ३०

जनुषि लग्नगतो यदि लग्नपो बलयुतः किल कंटक-
गोऽपि वा ॥ अविरतं प्रकरोति तदा नृपं नृपजमेव
न चित्रमिति स्फुटम् ॥ ३१ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नमें बलवान् हो अथवा किसी अन्य केंद्रमें हो तो राजपुत्रको विना विलंब राजा करताहै, इसमें कुछ आश्चर्य नहीं ॥ ३१ ॥

रविरजे शनिना बलिना युतो भवति भूमिपतिं कुरु-
ते शिशुम् ॥ द्रविडकेरलदेशसमुद्भवं कृतिवरं च
परत्र धनेश्वरम् ॥ ३२ ॥

सूर्य मेषका बलवान् शनिसे युक्त हो तो बालकको राजा करताहै यह योग विशेषतः विड तथा केरलदेशियोंको विशेष राज्यफल करताहै तथा उसे अन्यत्र पंडित एवं पराये कमाये हुए धनका स्वामीभी करताहै ॥ ३२ ॥

गुरुकवी यदि तुंगगताविमौ जनुषि कंटककोण-
गृहाश्रितौ ॥ नृपकुले कुरुतो नृपमन्यथा द्रविणपं
परितो भवतो नरम् ॥ ३३ ॥

जन्मकालमें यदि बृहस्पति, शुक्र अपने अपने उच्चराशियोंके केंद्र कोणोंमें हों तो राजकुलका उत्पन्न राजा होवै परन्तु अन्य कुलीय हो तो धनका स्वामी होवै ॥ ३३ ॥

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटैस्तनुव्ययाऽगाऽर्थगृह-
स्थितैश्चेत् ॥ पुरातनात्पुण्यत एव पुंसां श्रीच्छत्र-
योगं प्रवदंति संतः ॥ ३४ ॥

जन्मसमयमें समस्त ग्रह लग्न व्यय सप्तम धन भावोंमेंहों तो यह

श्रीछत्र योग पूर्वजन्मके पुण्यसे मनुष्यका होताहै यह पंडित कहतेहैं ॥ ३४ ॥

यदा जीवो लग्ने मकरमपहाय प्रवसति तदालं भूपालं नृपतिकुलबालं जनयति ॥ भवत्येवं चंद्रो जनुषि जनुरंगं च कलया परिक्रांतः केंद्रे नरपतिसुतं भूपतिपरम् ॥ ३५ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति मकरराशिको छोडके अन्य किसी राशिका लग्नमें हो तो निश्चय करके राजपुत्र राजा होता है ऐसेही चंद्रमा अपने नीच (८) को छोडकर पूर्णकला हो लग्न अथवा अन्य केंद्रोंमें हो तो राजपुत्रको राजा करताहै ॥ ३५ ॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे सुखे वा लग्ने वा हितलवगतो वा शुभखगैः॥युतो दृष्टो दंतावलतुरगयानेन नितरां जनानामागारं कनकमणिसंघैः परिवृतम् ॥ ३६ ॥

जन्ममें यदि चतुर्थभावका स्वामी नवमस्थानमें अथवा दशममें, चतुर्थमें, लग्नमें हो परंतु मित्रस्वांशकमें हो शत्रुके वर्गमें न हो अथवा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो हाथी घोडाओंकी सवारी नित्य उसके रहै तथा घर सुवर्ण एवं माणिक्य और रत्नसमूहोंसे युक्त रहै ॥ ३६ ॥

पंचमे भवति कर्मभावपे कांतिभाजि गजवाजिजं सुखम्॥ सर्वतोऽस्य विदिता ततो भवेदादिगंतमतुला यशोलता ॥ ३७ ॥

दशमभावेश पंचमस्थानमें उदयी हो तो हाथी घोडोंका सुख सर्वप्रकारसे होवै और उसकी निर्मल कीर्ति दिशाओंके अंत पर्यंत पहुँचै ॥ ३७ ॥

(अथ चंद्रयोगाः) भवति चंद्रमसो दशमाधिपो जनुषि केंद्रनवद्विसुतोपगः ॥ अतिविचित्रमणि-व्रजमंडितो वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः ॥ ३८ ॥

अब चंद्रमासे योग कहते हैं यदि जन्मसमयमें चंद्रमासे दशमभावेश केंद्र १।४।७।१० नव ९ द्वि २ सुत ५ भावमें हो तो अतिउत्तम नानाप्रकारके मणियोंके समूहसे (मंडित) शृंगार युक्त होकर पृथ्वीमें धन भूषणोंसे युक्त रहै ॥ ३८ ॥

चंद्राक्रांतभपः सुखालयगतो दंतावलानां सुखं मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशःपुंजं विचित्रालयम् ॥ भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा पुण्यं संतनुते मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह॥ ३९ ॥

चंद्रस्थितराशिका स्वामी चतुर्थ हो तो हाथियोंका सुख,मोतीं, सुवर्ण, मणिसमूह मिलें निर्मल यशके पुंज होवें । नानारंगोंका घर होवै, (नौकर)सेवक, पुत्र, स्त्री, मित्रोंका समूह रहै, विद्याके विनो-दमें रहै, पुण्य कमावै, प्रसन्नता पावै, राजासे धन पावै यह सभी मनुष्योंको कहाहै ॥ ३९ ॥

(अनफादियोगाः) व्ययगतैरनफा रविवर्जितैर्द्वि-नगतैः खचरैः स्वनफा विधोः॥ उभयतोपि गतैरु-दिता नृणां दुरुधरा मधुराशनभोगदा ॥ ४० ॥

चंद्रमासे बारहवें स्थानमें सूर्यरहित कोई ग्रह हो तो अनफा,

चंद्रमासे दूसरेमें कोई हो तो स्वनफा और दोनों स्थानोंमें ग्रह हो तो, दुरुधरा योग मधुभोजन और अनेक प्रकारके भोगदेनेवाला होताहै ॥ ४० ॥

(अथानफायोगफलम्) जनिमतामनफा कुरुते तरां गुणवतीयुवतीरतिवर्द्धनम् ॥ नृपसभापटुताममलं यशो वरपशोरपि सौख्यकरं परम् ॥४१॥

जन्मधारीको अनफायोग हो तो गुणवती (युवती) स्त्री एवं उससे (रति)क्रीडाकी वृद्धि देताहै,राजाकी सभामें चतुरता,निर्मलयश और श्रेष्ठपशु घोडेआदियोंकाभी परमसौख्य निश्चय करके देताहै॥४१॥

(स्वनफा०) भुजबलेन रमापरमालयं जनिमतां गरिमा स्वनफा यदा॥अबलयाऽमलया नवयानभूविभुतयाद्भुतया परमं सुखम् ॥ ४२ ॥

स्वनफायोग यदि जन्ममें हो तो उसके बाहुबलसे (परम) श्रेष्ठ लक्ष्मी घरमें रहे (गुरुता)बडप्पन मिले,तथा सुन्दरनिर्मल नवयौवना स्त्री, नई सवारी और पृथ्वी इनका अद्भुत सुख मिले ॥४२॥

(दुरुधरा०) दुरुधरा बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम् ॥ वितनुते नृपतेरतुलं यशो गुणकलापपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥ ४३ ॥

जिन मनुष्योंका दुरुधरा योग हो उनको (पृथ्वी) जमीन, धनके समूह,उत्तम हाथी, घोडे आदिका सुख होवै, राजासे अतुल यश मिलै अनेकगुणोंके समूहसे अद्भुत चतुरता मिलै ॥ ४३ ॥

(केमद्रुमः) न धने न व्यये खेटाश्चंद्रादिह भवंति चेत् ॥ तदा केमद्रुमं प्राहुः पंडिता मिहिरादयः॥४४॥

यदि चंद्रमासे दूसरे वा व्ययभावमें कोईभी ग्रह न हो तो उसको मिहिराचार्य आदि पंडित केमद्रुमयोग कहते हैं ॥ ४४ ॥

केमद्रुमे सुरपतेरपि नंदनोयं देशांतरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः ॥ धर्मच्युतो विकलितो गदसंघभीतो नानाधितापसहितो महितोषहीनः ॥ ४५ ॥

जिसके जन्ममें केमद्रुमयोग हो वह इंद्रका प्यारा पुत्रभी हो तोभी स्त्री पुत्रोंसे रहित होकर विदेशभ्रमण करै, धर्मसे रहित रहै कलाहीन, रोगोंसे भयवान नाना प्रकारकी मानसी व्यथा संतापसहित और संसारमें संतोषहीन रहै ॥ ४५ ॥

(तस्य भंगः) शुक्रेज्यसौम्यसहितोपि च कंटकस्थो वा पूर्णबिंब इह यस्य भवेन्मृगांकः ॥ केंद्राणि खेचरयुतानि तदा नराणां केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात्॥ ४६ ॥

उक्त केमद्रुमयोगका भंग कहते हैं कि, जिसका चंद्रमा, शुक्र, बृहस्पति,बुधमेंसे किसीसे युक्त हो अथवा केंद्रमें हो अथवा पूर्णमंडल हो यद्वा उसके केंद्रोंमें ग्रह हो तो मनुष्योंको केमद्रुम योगोक्तफल केमद्रुमहुए में भी निष्फल होजावै ॥ ४६ ॥

(ह्रदयोगः) जनुषि नीचगताः सकला ग्रहा यदि भवंति तदा ह्रदसंज्ञकः ॥ ह्रदभवो विकलो विभवोनितो रिपुहतो नितरां शठतायुतः ॥ ४७ ॥

जन्मसमयमें यदि समस्तग्रह नीच राशिअंशकोमें हों तो ह्रदयोग होताहै,ह्रदयोगमें जिसका जन्म हो वह (विकल) कलारहित,ऐश्वर्यहीन,शत्रुसे(पराजित)हाराहुआ(शठ)धूर्त्त वा वंचकभी होवै॥४७॥

(अथ फणियोगः)

घटगते तपने क्रियगे शनावलिगते च विधौ निज-
नीचभे ॥ भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको विकलितं
कुरुते नरपुंगवम् ॥ ४८ ॥

कुंभका सूर्य, मेषका शनि, वृश्चिकका चंद्रमा, कन्याका शुक्र, अपने नीचमें हो तो फणिसंज्ञक योग होताहै इसमें जिसका जन्म हो वह मनुष्य श्रेष्ठभी (विकल) कलाहीन होताहै ॥ ४८ ॥

(काकयोगः) अजगते भृगुजे रविजे जनुर्वृषभगे
दिनपेऽनिमिषे विधौ ॥ अवनिजे यदि कर्कटगेहगे
भवति काकभवो विभवोनितः ॥ ४९ ॥

जिसके जन्ममें मेषका शुक्र, मेषका शनि, वृषका सूर्य, मीनका चंद्रमा, कर्कका मंगल, हो तो यह काकयोग ऐश्वर्यहीन (दरिद्री) करताहै ॥ ४९ ॥

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो गुरुमहीजकवीन-
सुताः पुनः ॥ यदि भवंति च नीचगता जनुर्व्रजति
राजसुतोपि दारिद्रताम् ॥ ५० ॥

चंद्रमासहित सूर्य कुंभका और बृहस्पति, मंगल, शुक्र, शनि अपने २ नीचराशियोंमें हों ऐसे योगमें जिसका जन्म हो वह राजाभी हो तो भी दरिद्रीही रहै ॥ ५० ॥

(अथ हुताशनयोगः)

शनिमहीजनिशाकरचंद्रजा यदि जनुः किल नी-
चमुपाश्रिताः ॥ मकरभे भृगुजोपि हुताशनः
परमतापकरो न करोति शम् ॥ ५१ ॥

यदि जन्ममें शनि, मंगल, चंद्रमा, बुध, अपने २ नीचराशियों में हों तथा शुक्रभी मकरका हो तो यह हुताशनयोग होताहै इसमें मनुष्य परम संताप करनेवाला होताहै, शुभफल कदापि नहीं॥५१॥

यदि भवंति नवाऽयदशाधिपा जनुषि नीचगता विकला भृशम् ॥ नृपतियोगजमंगभृतां फलं परिणमत्यपि निष्फलतामिह ॥ ५२ ॥

यदि जन्ममें ९।११।१० भावोंके स्वामी नीच राशियोंमें तथा अत्यन्त करके अस्तंगत पीडित आदिभी हों तो मनुष्योंके राजयोगभी हो तोभी उसका फल निष्फल होकर दरिद्रीही होवें॥५२॥

रिपुमंदिरगैरेव वैरिभावगतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यंति दिवाकरकरोपगैः ॥ ५३ ॥

यदि राजयोगकर्ता ग्रह शत्रुराशियोंमें वा छठेभावमें यद्वा शत्रुवर्गमें हो तथा अस्तंगत हो तो राजयोग नष्ट होजाताहै ॥ ५३ ॥

भवंति वीक्षणवर्जितमंगिनां जननलग्नमिहांबरगामिनाम् ॥ जननभं च नृपालभवो नरो जगति यातितरामतिरंकताम् ॥ ५४ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मलग्नको कोई ग्रह न देखे तथा चंद्रराशिको भी कोई ग्रह न देखे तो राजयोगवाला मनुष्य राजपुत्रभी हो तोभी (रंक) दरिद्री ही होताहै ॥ ५४ ॥

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः ॥
यस्य तस्य विनश्यंति राजयोगफलान्यपि ॥ ५५ ॥

जिसका जन्म भद्रा, व्यतिपातमें तथा (केतु) पुच्छताराके उदयमें हो तो उसके राजयोगोंके फलभी नष्ट होजातेहैं ॥ ५५ ॥

परमनीचलवे यदि चंद्रमा भवति जन्मनि तस्य
विशेषतः॥ नृपतियोगफलं विफलं ततः कलयतीति
वदंति मुनीश्वराः ॥ ५६ ॥

इति दैवज्ञजीवनाथविरचिते भावकुतूहले राज-
योगतद्भंगदरिद्रयोगाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

जिसके जन्ममें चंद्रमा परम नीचांशकमें हो उसके विशेषतामें राजयोगोंके फल निष्फल होजाते हैं यह मुनीश्वर कहते हैं ॥५६॥

इति भावकुतूहले माहीधरी भाषाटीकायां राजयोग-
तद्भंगदरिद्रयोगाध्यायः ॥ ७ ॥

(सामुद्रिकविचारः)

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ॥
करे वा चरणेवश्यं राजचिह्नं प्रजायते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें राजयोग प्रबल होता है उसके हाथ वा पैरमें अवश्यमेव राजचिह्न होताहै ॥ १ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधा मता ॥
मध्यमांगुलिमारभ्य मणिबंधांतमागता ॥ २ ॥
सोर्द्धरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ॥
खंडिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥ ३ ॥

अनामिकाके मूलमें सीधी रेखा पुण्य देनेवाली होतीहै, खंडित अशुभ जानना, तथा मध्यमाके जड़से लेकर (मणिबंध) हाथके जड-नाडी स्थानसे नीचेपर्यंत पूरी सीधी एक रेखाहो उसे ऊर्द्धरेखा कहतेहैं विशेषतः राज्यलाभ करतीहै यदि खंडित हो तो (दुष्टफल)

दुःख दरिद्र देतीहै और(क्षीण) अथवा माडी हो तो फलभी क्षी
ही देती है ॥ २ ॥ ३ ॥

अंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य विराजते चारुयवो यशस्वी ॥ स्ववंशभूषासहितो विभूषायोषाजनरथगणैश्च मर्त्यः ॥ ४ ॥

जिस पुरुषके अँगूठेके बीचमें(यवरेखा) जौके दानेका रमणी
आकार हो वह यशस्वी होताहै, अपने वंशका भूषण होताहै तथ
स्त्री, भूषण, धनसे युक्त रहताहै ॥ ४ ॥

वैसारिणो वाऽऽतपवारणो वा चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये ॥ सरोवरं चांकुश एव यस्य वीणा च राजा भुवि जायते सः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके दाहिने हाथमें मछली, छत्र, हाथी, ताला
अंकुशमेंसे कोईभी चिह्न हो अथवा वीणाका चिह्न हो वह पृथ्वी
राजा होवै ॥ ५ ॥

मुसलशैलकृपाणहलांकितं करतलं किल यस्य स वित्तपः ॥ कुसुममालिकया फलमीदृशं नृपतिरेव नृपालभवे यदा ॥ ६ ॥

जिसका हाथ मूसल,शैल,खड्ग,हलके चिह्नसे चिह्नितहो वह धन
का स्वामी होताहै, यदि पुष्पमालाका चिह्नभी हो तोभी धनवा
होताहै, यदि यह चिह्न राजवंशीके हों तो अवश्य राजा होताहै॥६॥

करतलेपि च पादतले नृणां तुरगपंकजचापरथांगवत॥ ध्वजरथासनदोलिकया समं भवति लक्ष्म रमापरमालये ॥ ७ ॥

जिन मनुष्योंके हाथ वा पैरके तलेमें घोडा, कमल, धनुष, चक्र, ध्वजा, रथ, सिंहासन, डोलीके तुल्य चिह्न हों तो उसके घरमें परमलक्ष्मी सदा रहे ॥ ७ ॥

कुंभः स्तंभो वा तुरंगो मृदंगः पाणावंघ्रौ वा द्रुमो यस्य पुंसः ॥ चंचद्दंडोऽखंडलक्ष्म्या परीतः किं वा सोऽयं पंडितः शौंडिको वा ॥ ८ ॥

जिस पुरुषके हाथ वा पैरके तलुवेपर कलश, स्तंभ, घोडा, मृदंग अथवा वृक्ष, लट्ठीके चिह्न हों तो अखंड लक्ष्मीसे युक्त रहे यद्वा पंडित हो या (शौंडिक) मद्य बेचनेवाला होवै ॥ ८ ॥

विशालभालोऽम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमंडलेशः ॥ आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभर्तां मुख्यतरं महांतः ॥ ९ ॥

जिसका (भाल) माथा बडा हो, नेत्र कमलदलके समान हों, शिर सुहावना वृत्ताकार हो तो पृथ्वीमंडलका राजा होवै और जिसके खडेहुयेमें हाथ सीधे नीचे छोड़े घुटनोंपर्यंत पहुँचें तो राजाओंमें मुख्य बडा राजा होवै ॥ ९ ॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा वक्षःस्थलं रत्नशिलातलाभम् ॥ आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥ १० ॥

जिसकी नाभि (गंभीर) गहरी, नाक सरल, छाती रत्नशिलाके समान स्वच्छ, पैर लालरंगके तथा कोमल हों तो श्रेष्ठ राजा होवै १०

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ॥
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ ११ ॥

जिसके दाहिने हाथमें तिलका चिह्न हो उसे असंख्य धन दे
है एवं पैरके तलुवेमें हो तो वाहन और धनका सुख देवै ॥ ११

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ॥
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्तं सुलक्षणम् ॥१२॥
इति भावकुतूहले सामुद्रिकलक्षणाध्यायोऽष्टमः ॥ ८

उक्तलक्षण प्रकट हुयेमें राजवंशीके हों तो पूर्ण राज्यफल दे
अन्यको धन मान आदि थोडा ही फल देतेहैं ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां नृसामुद्रिकलक्षणाध्यायः ॥ ८ ॥

स्त्रीजातकम् ।

शुभाशुभं पूर्वजनैर्विपाकात्सीमंतिनीनामपि त-
त्फलं हि ॥ विवाहकालात्परतः प्रवीणैरसम्भवा
त्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥

अब स्त्रीजातक कहतेहैं--जो कुछ स्त्रियोंके पूर्वजन्मार्जित कर्म
से शुभ वा अशुभ होते हैं वह विवाहसे ऊपर जो फल स्त्रियों
होने असंभव हैं वे उसके भर्त्ताको चतुर ज्योतिषी कहे.
स्त्रियोंको संभव हैं वे उनको कहने. तथा समस्त फल देश, जा
कुल विचारके संभवासंभव जानके युक्तिसे कहना ॥ १ ॥

अतीवसारं फलमंगनानामुदीरितं शौनकनारदा-
द्यैः ॥ व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव
प्रतिपाद्यते तत् ॥ २ ॥

ग्रंथकर्त्ता कहताहै कि, स्त्रियोंके लग्न तथा चंद्रमासे शौन
नारद आदि आचार्योंने अतिसारतर जो फल कहे हैं उनहीको
यहाँ प्रकट प्रतिपादन करताहूँ ॥ २ ॥

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शरीरं लग्नचंद्रयोः ॥
वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिंतयेत ॥ ३ ॥

स्त्रियोंके सप्तमस्थानसे सौभाग्य, लग्न तथा चंद्रमासे शरीर शुभाशुभ, अष्टमस्थानसे वैधव्य और पंचमभावसे पुत्रसुखासुख विचारना, अन्य भावविचार पुरुषोंके उक्तप्रकारसे जानने ॥ ३ ॥

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपतेः
सौम्यैकेन पतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि॥
पापैकेन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा पापा-
नां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ॥४॥

जन्मसमयमें तीनशुभग्रहोंसे सप्तमभाव युक्त वा दृष्ट हो तो वह स्त्री राजरानी होवै, दो शुभग्रहोंसे ऐश्वर्यवती,एकसे पतिकी प्रिया होवै, तथा सप्तममें एक पापग्रह हो वा एक पाप देखे तो (चंचलनेत्रा) परपुरुषदृष्टिवाली, दोपापोंसे अधर्मकर्म करनेवाली, तीनसे निज पतिको मारकर पराये घरमें अन्यपतिके पास जानेवाली होवै ॥ ४ ॥

जनुःकाले यस्या मदनभवने वासरमणौ पतिं त्य-
क्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये॥अवश्यं वैधव्यं
सपदि कमलाक्षी रविसुते जरां पापैर्दृष्टे निजपति-
विरोधं व्रजति वा ॥ ५ ॥

जिस स्त्रीके जन्ममें सूर्य्य सप्तमभावमें हो वह पतिको त्याग करे वा पति इसे त्याग करे, तथा इसके हृदयमें नित्य क्रोध बना रहे। यदि मंगल सप्तम हो तो अवश्य विधवा होवै, शनि सप्तम हो तो

(कमलनेत्रा)सुरूपाभी हो तथापि अनब्याहेमें वृद्धत्व पावै अर्था
बडी उमरमें विवाह होवै जो पापग्रहोंकी दृष्टि सप्तमभावपर हो
पतिके साथ विरोध रक्खे ॥ ५ ॥

यस्याः शशांके जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः
स्थिरा स्यात् ॥ शुभेक्षिते रूपवतीं गुणज्ञा पति-
क्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥ ६ ॥

जिसका जन्मसमयमें चंद्रमा लग्नमें अथवा तीसरे भावमें हो
उसकी प्रकृति सर्वदा स्थिर रहै उसे शुभग्रहभी देखें तो रूपव
गुणवती, पतिसेवामें चतुरा और रमणीय भूषणोंसे युक्त होवै ॥६

यदांगचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कु-
रूपा ॥ पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्रुदातुरा रूप-
गुणैर्विहीना ॥ ७ ॥

यदि लग्न एवं चंद्रमा विषमराशि विषमनवांशकोंमें हो तो
पुरुषकी (आकृति)स्वरूप यद्वा पुरुषोंके तुल्य कृत्य करनेवा
होवै, कुरूपाभी होवै. यदि उक्त लग्न चंद्रमा पाप युक्त दृष्ट
हों तो विशेषतः रोगसे आतुर रहै सुगुणोंसे हीन रहे ॥ ७ ॥

स्त्रीणां राजयोगाः ।

जनुःकाले यस्या मदनसदने दानवगुरौ शुभा-
भ्यामाक्रांते गतवति तदा सा विधुमुखी ॥ गजें-
द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा प्रिया पत्यु
र्नित्यं प्रभवति शचीवाक्षितितले ॥ ८ ॥

जिसके जन्मसमयमें सप्तमस्थानमें शुक्र दो शुभग्रहोंसे यु

हो उसके चन्द्रमुखी स्तनोंके ऊपर गजमोतियोंकी माला विराजमान रहे अर्थात् ऐश्वर्यमें परिपूर्ण रहे तथा पतिकी प्यारी नित्यरहे और इंद्राणीके समान ऐश्वर्यवती होवै ॥ ८ ॥

समाक्रांते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाथ भृगुणा बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये ॥ मृगे कर्के चंद्रे सति भवति लावण्यतिलका तपोरेखायोषा प्रभवति विशेषात्क्षितिपतेः ॥ ९ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नका बृहस्पति अथवा शुक्र हो,तथा कन्याराशिका बुध सप्तमस्थानमें, मंगल मकरमें, चंद्रमा कर्कमें हो तो लावण्य (सुरूपता) वाली स्त्रियोंमें (तिलका) श्रेष्ठ होवे विशेषतः राजाकी महारानी बडी तपस्या करके पाई जैसी होवै ॥९॥

शशांके कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये ॥ सहस्रालीमान्या जगति नृपकन्या गुणवती विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥ १० ॥

चंद्रमा कर्कका, बुध कन्याका, बृहस्पति मीनका लग्नमें, शुक्र वृषका जन्मसमयमें हो तो एक हजार सखियोंमें मान्या संसारमें राजकन्या गुणवती होवै तथा विशेषतासे यह स्त्री राजाके घरकी स्वामिनी पुण्यकी लता होवै ॥ १० ॥

(अथ सप्तमे प्रत्येकग्रहफलानि) दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति प्रवराप्यवरा भवेत् ॥ जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनतारहिता वनिता भृशम् ११

जिसके जन्ममें सूर्य सप्तमहो वह श्रेष्ठाभी अश्रेष्ठा होजावै पतिका प्रेम उसमें न होवे, अतिशय दुर्जनता करे, दुष्ट स्वभाव होवे कुटुम्बसेभी विरोधी रहे ॥ ११ ॥

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना ॥ विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां परालीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव क्षितितले ॥ १२ ॥

जिसके जन्ममें सप्तमभावमें चंद्रमा वृषका हो वह स्त्री निर्मल वस्त्र पहननेवाली, सुहावने (मुख) वदनवाली, नम्रमुखी, मोतियोंकी मालासे शोभित स्तनभारसे नम्र, परम लीला करनेवाली होवै और पृथ्वीमें सबसे सुंदर ऐसी होवै जैसी कामदेवकी स्त्री रति है अथवा लक्ष्मीके समान होवे ॥ १२ ॥

अंगारके मदनमंदिरमिंदुभावं मंदान्विते हरिभगे जननेंगनायाः ॥ वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबंधाद्वारांगना भवति सैव वरांगनापि ॥ १३ ॥

जन्ममें स्त्रीका मंगल विशेषसे कर्कका हो अथवा मंगल शनि सहित सिंहका सप्तम हो तो निश्चय वैधव्य पावै तथा कपट प्रबंध करे (व्यभिचारिणी) वेश्या हो यदि यह स्त्री धर्मकर्मसे तथा कुलसे श्रेष्ठभी हो तोभी वेश्याही होवे ॥ १३ ॥

अनेकस्त्रीभर्ता भवति मखकर्त्ता च मदने बुधे तुंगे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह ॥ स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया परीता मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः ॥ १४ ॥

जिस स्त्रीके जन्ममें कन्याका बुध सप्तममें हो उसका भर्त्ता अनेक स्त्रियोंका स्वामी होवै और यज्ञ करनेवाला होवै तथा आप वह स्त्री कामदेवसे व्याकुलित हृदय रह कामकलामें तत्पर रहे और मोतियोंकी माला, सोने, चांदी, मणिरत्नोंसे भरी रहै॥१४॥

परिक्रांते यस्या मदनभवने देवगुरुणा गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा ॥ मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा समाक्रांता कांता रतिपतिपताकेव शशिभे ॥ १५ ॥

जिसके जन्ममें बृहस्पति सप्तमस्थानमें बैठा हो वह (गुणज्ञा) समस्त सुगुणवाली, धर्मजाननेवाली, अपने पतिकी सेवा करनेवाली "पतिव्रता" होवै और सुवर्णमें जडेहुये (मणि) रत्नोंकी मालाओंसे शिर आक्रांत रहे यदि वह बृहस्पति सप्तममें कर्कका हो तो वह स्त्री कामदेवकी पताका जैसी उत्तमरूप गुणवती होवै ॥ १५ ॥

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने तदा कांतो दांतो रतिपतिकलाकौतुकपटुः॥ धनुर्द्धर्त्ता भर्त्ता स्वयमपि च संगीतरसिका विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता ॥ १६ ॥

जिसके जन्ममें मीनका शुक्र सप्तम भावमें हो उसका पति उदार, कामकला क्रीडामें चतुर तथा धनुष् धारण करनेवाला होवै आप भी वह स्त्री गायन विद्याकी रसिका, चंचलतासे भर्त्ताको प्रसन्न करनेवाली, कमलदलसमाननेत्रा एवं उत्तम भूषण वस्त्रोंसे युक्त रहै ॥ १६ ॥

मदनभावगते तपनात्मजे पतिरतीवगदाकुलि-

तो भवेत् ॥ मलिनवेषधरो विबलो महाञनुषि तुंगगते प्रवरो धनी ॥ १७ ॥

जन्ममें शनि सप्तम भावमें हो तो उसका पति अतिरोग पीडि होवै मलिन वेष धारण करने वाला, अति निर्बल होवै। यदि उ शनि उच्चका हो तो श्रेष्ठ और धनवान् होवै ॥ १७ ॥

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी ॥
नारी सुखपरित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता ॥ १८

राहु सप्तममें हो तो कुलको (दोष) कलंक बढानेवाली, सु रहित स्त्री होवै यदि वह राहु उच्चका हो तो भर्त्ताके सुखसे युक्तरहै १

अथान्ययोगाः ।

मिथस्तौ शुक्रार्कौ यदि लवगतौ वीक्षणमितौ भवेतां वा लग्ने घटलवगते शुक्रभवने ॥ अनंगेरालीलाकलितनररूपाभिरनिशं स्थिताभिः कांताभिः खलु मदनशांतिं व्रजति सा ॥ १९ ॥

यदि शुक्र और शनि परस्परांशक अर्थात् शनिके अंशकमें शु शुक्रके अंशमें शनि हो उपलक्षणसे राशियोंमेंभी परस्पर हो त इनकी परस्पर दृष्टि भी होवै यद्वा शुक्रके राशि २।७लग्नमें कुम्भ शक युक्त हों तो कामदेवकी लीलाओंसे निर्मित नररूपवाली नि अनेक नररूप (मर्दके वेष) स्थित स्त्रियोंसे कामदेवको शां करै ॥ १९ ॥

क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीरांगमथवा मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम्॥ महांतोपि भ्रांताः

कतिकति मनोजाधिकतया पुरस्तां पश्यंतो दधाति परमानन्दलहरीम् ॥ २० ॥

जिसका चन्द्रमा लग्नमें कर्कका हो अथवा सप्तमभाव मंगल सहित हो तथा बुध बृहस्पतिसेभी युक्त हो तो अनेक बड़े बड़े महात्मालोगभी सम्मुख इस स्त्रीको देखकर कामदेवके अधिक होनेसे विभ्रांतमन होकर मोहित होवैं ऐसे वह परम आनन्दलहरीको रूपकी छटासे धारण करनेवाली होवै ॥ २० ॥

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरौ कवौ वा पातालं तपनतनयेनापि मिलिते ॥ जनुःकाले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणिव्रजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥ २१ ॥

जिसके जन्मसमयमें मकरका मंगल, मीनका बृहस्पति प्राप्त हो अथवा शनिसहित शुक्र चतुर्थ हो तो हाथीके शिरसे उत्पन्न (गज मोती) मुक्ताफलोंसे सहित अनेकमणियोंकी मालाओंसे वेष्टित स्तनयुग्म रहैं ॥ २१ ॥

अथ वैधव्ययोगाः ।

निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमंदागुदिवाकराश्चेत् ॥ तनोरिमे जन्मनि नैधने वा दिशंति वैधव्यमलं मदे वा ॥ २२ ॥

चन्द्रमासे सप्तमस्थानमें मंगल, शनि, राहु, सूर्य हों तो निश्चय वैधव्य करते हैं तथा जन्मलग्नमें शत्रुराशिके अथवा अष्टम या सप्तमस्थानमें हो तौभी वैधव्य देते हैं ॥ २२ ॥

लग्नाधिपो वाथ मदालयेशो वर्गे गतः पापनभ-

श्चराणाम् ॥ मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥ २३ ॥

जन्मलग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहोंके (वर्ग) राश्यंशक दिकों में हों अथवा लग्नमें एवं सप्तमभावमें पापग्रहके राश्यंश हों तो वह स्त्री कुलको छोडदेवे अर्थात् कुलटा हो ॥ २३ ॥

पापांतराले यदि लग्नचन्द्रौ स्यातां शुभालोकनवर्जितौ तौ ॥ अनंगलोला खलसंगमेन कुलद्वयं हंति तदा मृगाक्षी ॥ २४ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्न, चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें हो शुभग्र की दृष्टि उनपर न हो पापयुक्तभी हों तो वह मृगाक्षी कामदेव चंचल होकर पितृकुल भर्तृकुल दोनोंका नाशकरे अर्थात् व्यभि चारिणी होकर दोनों कुलोंको डुबावे ॥ २४ ॥

व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य राशावगौ सपापे भवतीह रण्डा॥ मदे कुलीरे सरवौ कुजेपि धवेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ॥ २५ ॥

यदि मंगलकी राशि १।८ में राहु बारहवां वा अष्टम पापयु हो तो वह स्त्री रांड होवे अथवा सप्तमभावमें कर्कका सूर्य मंग सहित हो तो पतिहीन होकर अन्यपुरुषोंसे रमित रहे ॥ २५ ॥

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत् ॥ अनंगलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥ २६ ॥

यदि जन्मलग्नसे चौथा, बारहवां, अथवा सप्तम पापयुत मंग

हो तो वह चंचला अपने पतिका तिरस्कार करके (जार) उपप-तियोंके साथ कामक्रीडा करे चंचल होवै ॥ २६ ॥

परस्परांशोपगतौ भवेतां महीजशुक्रौ जननेंगना-याः॥ स्वयं मृगाक्षी ह्यभिसारिकेव प्रयाति कामा-कुलितान्यगेहे ॥ २७ ॥

यदि स्त्रीके जन्मसमयमें मंगलके अंशका शुक्र, शुक्रके अंशका मंगल हो तो वह मृगाक्षी अभिसारिकाके समान आपही कामातुर होकर दूसरेके घर जावै ॥ २७ ॥

पापग्रहे सप्तमगे बलोनेऽशुभेन दृष्टे पतिसौख्यही-ना ॥ स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ २८ ॥

पापग्रह बलहीन सप्तमस्थानमें हों शुभग्रह उसे न देखें तो स्त्रीको भर्ताका सुख न होवै। यदि सप्तम स्थानमें मंगल, शुक्र, चंद्रमा हों तो वह स्त्री भर्ताकी आज्ञासे व्यभिचारिणी (जारिणी) होवै ॥२८॥

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्त्ता दिवं गच्छति सप्त-माब्दे ॥ निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ॥ २९ ॥

जन्ममें जिसके सप्तम एवं लग्नभावमें पापग्रह हो उसका पति विवाहसे सातवें वर्ष स्वर्ग जावै। यदि चंद्रमाभी ६।८ में हो तो आठवें वर्षमें पति मरे ॥ २९ ॥

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ॥ पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ३० ॥

जिस (बाला) नवयौवनाके जन्मलग्नसे सप्तमेश अष्टम,

अष्टमेश सप्तम पापदृष्ट हों अथवा पापयुक्त हों तो निश्चय बालवैधव्य पावै ॥ ३० ॥

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ ॥
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥ ३१ ॥

जिस स्त्रीके जन्मलग्नसे सप्तम, अष्टमभावोंके स्वामी पापपीडित होकर छठे वा बारहवें हों वह निस्संदेह वैधव्य पावै ॥ ३१ ॥

मंदारराशौ ससिते शशांके खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी ॥ मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांशे व्रणविद्धयोनिः ॥ ३२ ॥

यदि शनि मंगलकी राशि १०।११।१।८ योंमें शुक्रसहित चंद्रमा पापदृष्ट लग्नमें हो तो वह स्त्री अपनी मातासहित व्यभिचारिणी होवै । यदि सप्तममें पापांश हो यद्वा उक्तग्रह पापांशकी सप्तममें हों तो माँ, बेटी व्यभिचारिणी हों किन्तु उसकी योनि व्रणसे वेधित रहे ॥ ३२ ॥

अथ ग्रहराशिवशेन प्रत्येकत्रिंशांशफलानि तत्रादौ भौमराशेः ।

यदांगचंद्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या ॥ मंदस्य दासी हि गुरौ तु साध्वी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ ३३ ॥

अब ग्रह राशियोंके वशसे प्रत्येक त्रिंशांशके फल कहतेहैं-इनमें प्रथम मंगलकी राशिके त्रिंशांशकोंके फलहैं कि, यदि लग्न, चंद्रमा मंगलके राशिमें हों तथा मंगलके त्रिंशांशमें हों तो वह कन्या दुष्टा होवै शनिके त्रिंशांशमें दासी होवै, बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें मायावाली, शुक्रकेमें दुष्टचरितवाली होवै ॥ ३३ ॥

अथ शुक्रराशौ ।

शुक्रभे कुजखाग्न्यंशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा ॥
गुरोर्गुणमयी विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥ ३४ ॥

शुक्रके राशिमें लग्न चंद्रमा मंगलके त्रिंशांशमें हो तो दुष्टा होवै एवं शनिकेमें (पुनर्भवा) दो बार बयाही जावे बृहस्पतिकेमें गुणयुक्ता, बुधकेमें पंडिता, शुक्रकेमें कामातुरा होवै ॥ ३४ ॥

अथ बुधराशौ ।

बुधभे भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीबवच्छनेः ॥
गुरोः सती विदो विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥३५॥

बुधके राशिमें लग्न, चंद्र, मंगलके त्रिंशांशमें हों तो कपटी होवे शनिकेमें नपुंसकके तुल्य होवै, बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें बहुत विषयोंको जाननेवाली शुक्रकेमें कामसे आतुरा होवै ॥ ३५ ॥

अथ चंद्रराशौ ।

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणविघातकर्त्री ॥ गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्पाक्रियाज्ञा कुलटा भृगोः स्यात् ॥ ३६ ॥

कर्कराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हों तो वह स्त्री (वेश्या) पतुरिया होवै,तथा शनिकेमें भर्त्ताके प्राणघात करनेवाली, बृहस्पतिकेमें गुणसमूहयुक्ता बुधकेमें (शिल्प) कारीगरी जाननेवाली शुक्रके त्रिंशांशकमें (कुलटा) व्यभिचार करनेवाली होवै ३६॥

अथ सूर्यराशौ ।

सिंहे नराकारधरा कुजस्य वरांगना भानुसुतस्य

नारी ॥ गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरंगज-
गामिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

सिंहराशिके लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हों तो पुरुष
आकार धारण करे अथवा पुरुष समान पराक्रमी, चतुरा हो
शनिकेमें (वराङ्गना) वेश्या होवै, बृहस्पतिकेमें पृथ्वीपतिकी बधू हो
बुधकेमें दुष्टा, शुक्रकेमें अपने पुत्रको गमन करनेवाली होवै॥३७

अथ गुरुराशौ ।

गुणैर्विचित्रा गुरुभ कुजस्य मंदस्य मंदा गुणतत्त्व-
विज्ञा ॥ जीवस्य विज्ञा शनिनंदनस्य शुक्रस्य रम्या
पि भवेदरम्या ॥ ३८ ॥

बृहस्पतिके राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हों
अनेकगुणोंसे युक्त होवै, शनिकेमें मूर्खा, बृहस्पतिकेमें गुणोंके त
को जाननेवाली, बुधकेमें पंडिता, शुक्रकेमें सुरूपाभी कुरूपा
प्रतीत हो ॥ ३८ ॥

अथ शनिराशौ ।

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भव-
तीति साध्वी ॥ गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्र-
स्य वंध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥ ३९ ॥

शनिके राशिमें लग्न, चंद्रमा, मंगलके त्रिंशांशकमें हों तो दा
होवै, शनिकेमें पतिव्रता न होवै बृहस्पतिकेमें पतिव्रता, बुधकेमें दु
शुक्रकेमें (बंध्या) अपुत्रा होवै, इतने क्रमसे त्रिंशांशफल हैं ॥३९

अथान्ययोगाः ।

मंदे मध्यबले कवीन्दुशशिजैर्वीर्य्यच्युतैः प्रायशः

शेषैर्वीर्य्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः ॥
जीवांगाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदंगराशौ समे गीता-
तत्त्वविचारसारचतुरा वेदांतवादिन्यपि ॥ ४० ॥

जिसके जन्ममें शनि मध्यबली, शुक्र, चंद्रमा, बुध, बलहीन, और विशेषतासे अन्यग्रह बलवान् हों तथा लग्न विषमराशिका हो वह स्त्री पुरुषके समान होवे।यदि बृहस्पति, मंगल, सूर्य, बुध, बलवान् हों तथा लग्नराशि समसंज्ञक हो तो गीताका तत्त्व (ज्ञान) के विचारसे सार जाननेमें चतुरा और वेदांतवादिनीभी होवे ॥४०॥

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रका
वा ॥ कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चंद्रेऽष्टमे
स्वामिसुखेन हीना ॥ ४१ ॥

यदि जन्ममें बृहस्पति अष्टम हो अथवा शुक्र अष्टम हो तो उसके गर्भ नष्ट होवें, अथवा पुत्र मरें, यदि मंगल अष्टम हो तो वह मृगाक्षी (कुलटा) व्यभिचारिणी होवै, यदि चंद्रमा अष्टम हो तो पतिके सुखसे हीन रहै ॥ ४१ ॥

मन्देष्टमे रोगरतस्य भार्या दिनाधिपे सा परिता-
पतप्ता ॥ अनंगरंगा परकांतसंगा मृतावगौ सा
कुलधर्मभंगा ॥ ४२ ॥

जिस स्त्रीका शनि अष्टम हो उसका पति रोगयुक्त सर्वदा रहै, सूर्य अष्टम हो तो सर्व प्रकार संतापोंसे संतप्त रहै, यदि राहु अष्टम हो तो कामदेवके (रंग) क्रीडासे परपुरुषोंका संग करे तथा अपने कुलके धर्मको खोवै ॥ ४२ ॥

अथ पुत्रभावविचारः ।

पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधिपतावपि ॥
केंद्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ४३

अब स्त्रियोंके संतानभावका विचार कहते हैं-कि, यदि जन्म लग्नसे पंचमभावमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो और पंचमेश केंद्र, को १।४।७।१०।५।९। में हो तो वह स्त्री बहुत पुत्रोंवाली हो ॥ ४३

पंचपुत्रवती जीवे सबले च सिते विधौ ॥
सुतासुखवती पापे नारी संतानवर्जिता ॥ ४४ ॥

यदि बृहस्पति बलवान् होकर पंचममें हो तो पांच पुत्र वाल होवै, शुक्र चंद्रमा सबल पंचममें हों तो कन्याओंका सुख हों पापग्रह पंचम हो तो संतानके सुखसे हीन रहै. जिन ग्रहोंका ज फल पंचममें कहाहै वह उसकी दृष्टिसेभी जानना ॥ ४४ ॥

अथ विषयोगाः ।

भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमंदारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी ॥ पापे लग्ने शुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ ४५ ॥

अब स्त्रियोंके विषयोग कहतेहैं-कि, जिसके जन्मसमयमें भद्र संज्ञक२।७।१२तिथि,आश्लेषा, कृत्तिका, शततारा, नक्षत्र, रवि,श नि,मंगल वार हों तो वह विषाख्या होती है.इस योगके तीन भे कि, द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, रविवार (१) सप्तमी तिथि कृत्तिका नक्षत्र, शनिवार (२) द्वादशी तिथि, शततारा नक्ष

मंगल वार (३) और पापग्रहराशि लग्नमें पापग्रहयुक्त तथा दो पाप ग्रह छठेभी हों तो वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ४५ ॥

आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगभे भौमदिनें-
बुजर्क्षे ॥ चेत्सप्तमी वाथ रवौ विशाखा हरेस्तिथौ
वापि च सा विषाख्या ॥ ४६ ॥

इनके भेद कहते हैं कि, शनिवारको द्वितीया तिथि, आश्लेष नक्षत्र, (१),मंगलवारको शततारा नक्षत्र, सप्तमी तिथि (२),रवि वारको विशाखा नक्षत्र द्वादशी तिथि (३), में जिस कन्याका जन्म हो वह विषाख्या होती है ॥ ४६ ॥

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनंदने ॥
पंचमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥ ४७

यदि लग्नसे नवम मंगल, लग्नमें सूर्यपुत्र (शनि) पंचमें सूर्य, जिस कन्याका होवे वह विषाख्या (विषकन्या) होतीहै॥ ४७

विषाख्या शोकसंतप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका ॥
वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता बुधैः ॥ ४८ ॥

जो कन्या उक्तप्रकारोंसे विषाख्या हो वह शोक से संतप्त (दुर्भ गा) भाग्यहीना होवै. संतान उसकी मरती रहैं वस्त्र,भूषणोंसे हीन र यह प्राचीन पंडितोंने कहाहै, ऐसेही विष घटिकाके जन्मवाली भ होतीहै ॥ ४८ ॥

अथ विषयोगभंगः ।

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचंद्रयोः ॥
विषयोगमलं हंति रंहो हरिरिभं यथा ॥ ४९ ॥

यदि जन्मलग्नसे सप्तमेश सप्तममें हो अथवा चंद्रमासे सप्तमेश

सप्तम हो तथा लग्नचंद्रसे शुभग्रह सप्तम हो वा उसे देखे तो निश्चय विषयोगके फलको नाश करताहै जैसे सिंह बलात्कारसे हाथीको मारताहै ॥ ४९ ॥

इत्थं विवाहकालेपि ज्ञातव्यं लग्नचंद्रयोः ॥
तदधीनं यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ॥ ५० ॥

विवाहसमयमें भी लग्न और चंद्रसे ऐसाही विचार करना, क्योंकि, विवाहमुहूर्तके अधीन स्त्रियोंका आजन्म शुभाशुभहै ॥५०॥

वैधव्यभंगोपायः ।

वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शांतिपूर्वकम् ॥
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले स्त्रीजातकाध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

जिस कन्याके वैधव्ययोग हो उसको प्रथम प्रतिमाविवाह, सावित्रीव्रत, पिप्पलव्रत इत्यादि कल्पोक्तशांति करके वेदोक्त विधिसे उसका विवाह दीर्घायुयोगवालेके साथ करना ॥ ५१ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां स्त्रीजातकाध्यायः ॥ ९ ॥

अथ कन्यायाः शुभाशुभांगलक्षणानि ।

शुभलक्षणसंपन्ना भवेदिह यदांगना ॥
तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥ १ ॥

यदि स्त्री शुभलक्षणोंसे संपन्न होवे तो संसारमें उसे विवाह विधिकरके ग्रहण करनेसे गृहस्थियोंका सुख बढताहै ॥ १ ॥

शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता ॥
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामंगलक्षणम् ॥ २ ॥

स्त्रियोंके लक्षणोंसे शुभ तथा अशुभ प्रथम बुद्धिमान् व्यासदेव जीने कहाहै वही यहांभी स्त्रियोंके अंगलक्षण प्रकाश किये जातेहैं २

युवतिपादतलं किल कोमलं सममतीव जपाकुसुमप्रभम् ॥ दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहितं बहुघर्मविवर्जितम् ॥ ३ ॥

स्त्रीके पैरके तलुए यदि कोमल, (सम) सरल तथा (जपा ओंड्र पुष्पके समान रक्तवर्ण, स्थूल, उष्ण और बहुत स्वेदसे रहित होवें तो राजाके लिये हित कहतेहैं ॥ ३ ॥

कमलकंबुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवितानवत् ॥ भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षितिभृतां वनिता विभुताभृता ॥ ४ ॥

जिसके पैरमें कमल, कंबु (शंख),रथ; ध्वजा, चक्रके समान तथा स्थूल मछली, विमान, (वितान) चांदनीके आकार चिह्न हो तो उस स्त्रीका पति राजा होवे ऐश्वर्यसे युक्त रहै ॥ ४ ॥

शूर्प्पाकारं विवर्णं च विशुष्कं परुषं तथा ॥
रूक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥ ५ ॥

जिसके पैरके तलुए शूर्पके आकार, विवर्ण, (शुष्क) खरदरा, करडा, रूखा हो तो यह लक्षण तन्वंगीके दौर्भाग्य सूचक हैं ॥५॥

यस्याः समुन्नतांगुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः ॥
शूर्प्पाकारा नखा यस्याः सा भवेद्दुःखभागिनी ॥ ६ ॥

जिसके पैरका अँगूठा ऊंचा,गोल,हो तो अतिसौख्य देताहै जिसके नाखून शूर्पके आकार हों वह दुःख भोगनेवाली होती है ॥६॥

संचलंत्यां धराधूलिधारा यदा राजमार्गेऽबलायां

बलादुच्छलेत् ॥ पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं
नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ ७ ॥

जिस स्त्रीके सडकपर चलतेसमय पृथ्वीमेंसे (धूलि) गर्दकी धारा उडे चले वह (अपतिव्रता)जारिणी (तीन कुल) माता, पिता, भर्ताको नाश करके सर्वदा दुष्टोंके साथ प्रसन्न रहै ॥ ७ ॥

यस्या अन्योन्यमारूढाः पादांगुल्यो भवंति चेत् ॥
सा पतीन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ ८ ॥

जिसके पैरकी एक अंगुली दूसरी अंगुलीके ऊपर चढीरहै वह बहुत पतियोंको मारके (वारांगना) वेश्या होती है ॥ ८ ॥

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलंत्या योषितस्तदा ॥
सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ९ ॥

जिसस्त्रीके चलते समयमें (कनिष्ठा) छोटी अंगुली पैरकी पृथ्वीको स्पर्श न करे वह शीघ्रही अपने पतिको मारकर जारसे रमित रहै ॥ ९ ॥

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत्॥
आद्या पतिद्वयं हंति चापरा तु पतित्रयम् ॥ १० ॥

जिसस्त्रीके पैरकी अनामिका एवं मध्यमा पृथ्वीको स्पर्श न करै इनमेंसे अनामिका ऊंची रहे तो दो पतियोंको मध्यमा ऊंची रहे तो तीन पतियोंको मारे ॥ १० ॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ॥
तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् ॥११॥

जिसके पैरकी मध्यमा तथा अनामिकाभी छोटी हों तो वह स्त्री पतिहीना होवे. यह भगवान् वेदव्यासने आपही कहाहै ॥ ११ ॥

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ॥
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १२ ॥

यदि स्त्रीके पैरोंके नाखून (स्निग्ध) चिकने,(वर्तुल)गोलाकार,ऊंचे और तांबेके रंगके समान हों तो मृगाक्षियोंको उत्तम भोग देते हैं ॥ १२ ॥

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव
मृगीदृशाम् ॥ अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं
पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ १३ ॥

यदि मृगनयनी स्त्रियोंके पैरोंकी पीठ निर्मल, कोमल, कमलद-लके पीठके समान (अरुण) गुलाबीरंग यद्वा कुंकुम, वा (विद्रुम) मूँगाके समान हों तो वे बहुत गुणवती होवैं यह निश्चय है ॥१३॥

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदांगना ॥
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥१४॥

पैरोंकी अंगुलियोंके बीचमें (नम्र) गहरा हो तो वह स्त्री सर्वदा दरिद्रा रहै अंगुलियोंपर शिरा (नस) बहुत हों तो मार्ग चलने-वाली होवै और बहुत रोम अंगुलियोंमें हों तो दासी होवै ॥ १४ ॥

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ॥
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ॥१५॥

जिसके (गुल्फ) घुटनोंके नीचे (निर्मांस) माडे हों तो वह स्त्री दुर्भगा होवै यदि उक्तस्थान (गूढ) स्थूल, पुष्ट हों (अशिरा) नसोंसे रहित हों एवं वर्तुल हों तो सुभगा होवै ॥ १५ ॥

अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ ॥
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥१६॥

जिस स्त्रीके गुल्फस्थान शिथिल एवं (अगूढ) ढीले हों

वह दुर्भगा होवै इतने गुल्फलक्षण कहेगये, अब (पार्ष्णि) एँड़ीके लक्षण कहेजाते हैं ॥ १६ ॥

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥
कुलटा तुंगपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥ १७ ॥

जिसके (पार्ष्णि) एँडी समान हों तो वह सौभाग्यवती होवै, पार्ष्णि मोटे हों तो दुर्भगा होवै, जो पार्ष्णि ऊँचे हों तो व्यभिचारिणी और लंबी पार्ष्णिसे नित्य रोगसे आकुल रहे ॥ १७ ॥

जंघे रंभोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ॥
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥१८॥

जिस स्त्रीके जंघा कदलीस्तंभके समान हों तथा रोमरहित (वर्तुल) गोलाकार सरल, मोटी, समान और चिकनी हों तो राजरानी होवै ॥ १८ ॥

एकरोमा प्रिया राज्ञो द्विरोमा सौख्यभागिनी ॥
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥ १९ ॥

जिसके जंघाओंके,(रोमकूप) रोमोंके जडपर एक एक रोम हों तो वह राजाकी प्रिया, ऐश्वर्यवती होवै, दोदो हों तो सुख भोगनेवाली और तीनसे विधवा जाननी ॥ १९ ॥

भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम् ॥ भुवनभर्तुरतो विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥ २० ॥

जिस स्त्रीके दोनों जानु मोटे, अति सुंदर गोलाकार हों वह अति शुभफल करते हैं। वह राजरानीके तुल्य होतीहै इससे विपरीत लक्षण हों तो फलभी विपरीत कहा है ॥ २० ॥

समुन्नतनितंबाढ्या यस्याः सिद्धांगुला कटिः ॥
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥ २१ ॥

जिसकी कमर सिद्ध (२४) अंगुल चौडी हो तथा (नितंब चूतड़ ऊंचे हों तो वह राजाकी पटरानी होवै और अनेक (सखी दासियोंसे युक्त रहे ॥ २१ ॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः ॥
लघ्वी रोमाकुला नार्य्या वैधव्यं दिशते कटिः॥२२॥

जो कमर मांसरहित, माडी,गहरी (चिपिट) बैठी हुई गाडीके आकारकी, छोटी और रोमोंसे भरी हुई हो वह वैधव्य देतीहै २२॥

सीमंतिनीनां यदि चारुबिंबो भवेन्नितंबो बहुभो-
गदः स्यात् ॥ समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः
सदा कामसुखाय तासाम् ॥ २३ ॥

जिन भाग्यवती स्त्रियोंके चूतड़ रमणीय बिंबवत् हों तो बहु-प्रकार भोग देते हैं. यदि ऊंचे, मोटे, बडेभी हों तो सर्वदा काम-देवका सुख देते हैं ॥ २३ ॥

यदा गजस्कंधसमानरूपो भगोथवा कच्छपपृ-
ष्ठवेषः ॥ इलापतेः कामविनोददायी वा सोन्नतः
सोपि सुताजनेता ॥ २४ ॥

यदि स्त्रीका (भग) योनि हाथीके गर्दनके सदृश यद्वा कछु-आके पीठके सदृश हो तो वह राजाको कामक्रीडामें प्रसन्न करने-वाली अर्थात् राजरानी होवै यदि उक्तभग ऊंचे आकारका हो तो कन्या जनने वाली होती है ॥ २४ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ॥ चुल्लिको-

दररूपो यः कुरंगखुरसन्निभः ॥ २५ ॥ रोमाकुलो-
द्दृष्टनासो विकृतास्यो महाधनः ॥ कामिमां न विनो-
दार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ २६ ॥

अथवा भग (अश्वत्थ) पीपलके पत्रके समान अथवा गुप्त-
मणिके (टोटनी) वाला हो तो शुभ होता है जो भग चुहीके
पेटके आकारका व मृगखुरसा, रोमव्याप्त, ऊँचीटोटनीवाला,
विकृतमुख, हो वह अधम होताहै यह भग कामियोंके विनोदका
हेतु सर्वदा नहीं होताहै ॥ २५ ॥ २६ ॥

कामिन्याः कंचुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ॥
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोपि तादृशः ॥ २७ ॥

कामिनीका भग यदि दोनों ओर ऊंचा बीचमें गहरा हो तो
दौर्भाग्य बढ़ाता है, गर्भधारणमें असमर्थ होता है यदि (वक्राकार)
मुडा हुआ हो तोभी वैसाही फल करता है ॥ २७ ॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः कर्परसूपवदेव भगो वा ॥
लंबगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोपि
निरुक्तः ॥ २८ ॥

जो भग बेंतके अथवा बांसके पत्रके आकार हो अथवा (कर्पर)
बीचमें गहरा चारों ओर ऊंचा हो तथा गलेके समान एक ओर
माडा दूसरे ओर मोटा लंबा हो (विकट) ऊंचा नीचा हो और
हाथीकेसे रोम जिसपर हों वह शुभ नहीं होता ऐसेही (चिपिट)
चपटा भग भी अशुभ कहाहै ॥ २८ ॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं यदि तदा जघनं भग-
भाजनम् ॥ उत समुन्नतमायतमादरात्पतिकला-
कलितं गदितं बुधैः ॥ २९ ॥

यदि भग कोमलतर, कोमल बालोंसे भरा हो तो वह ऐश्वर्यका (पात्र) भोगनेवाला होताहै और ऊंचा बड़ा, कांतिमान् (कलाकलित) जिसके दर्शन वा स्पर्शसे मनकी उमंग प्रसन्नतासे उठे यह भी वैसाही है ॥ २९ ॥

तदेव दक्षिणावर्त्तं मांसलं शुभसूचकम् ॥
वामावर्त्तं च नारीणां खंडितं खंडिता श्रयम् ॥३०॥

वही भग दाहिने ओर घुमा हो यद्वा भौंरा मोटा हो तो शुभफल करताहै. यदि बाँये ओर घुमा हो यद्वा भौंरा तथा (खंडित) किसी जगे भंग जैसा हो तो व्यभिचारिणी करताहै ॥ ३० ॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ॥
अतिस्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥३१॥

यदि भग मांसरहित एवं कुटिलाकार, मोडवाला हो तो वैधव्य करताहै. जो अतिमोटा, व बडालंबा, हो तो अवश्य (दौर्भाग्य) भाग्यहीन करताहै ॥ ३१ ॥

मृदुला विपुला बस्तिः शोभना च समुन्नता ॥
अशुभा रेखयाक्रांता शिराला लोमसंकुला ॥ ३२ ॥

(बस्ति) भग कोमल तथा बडा हो तो शुभ होताहै, ऊंचीभी योनि शुभफल देतीहै जिसमें रेखा हों एवं नसेंहों तथा रोमोंसे भरीहो तो अशुभफल देतीहै ॥ ३२ ॥

गभीरा दक्षिणावर्ता नाभी भोगविवर्धिनी ॥
व्यक्तग्रंथिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना ॥ ३३ ॥

स्त्रीकी नाभि यदि गहरी एवं दाहिनी ओर (मोड) घुमाव वाली हो तो भोग बढातीहै. जिसकी (ग्रंथि) गांठ प्रकट हो, नाभी खुली हो यद्वा वामावर्त हो तो शुभ नहीं होती ॥ ३३ ॥

पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि ॥
भेकोदरी नरेशानं बलिनं चायतोदरी ॥ ३४ ॥

जिसकी स्त्रीका पेट बडा हो वह बहुत पुत्र जनतीहै. जिसका पेट मेंडककासा हो उसका पुत्र राजा होवे जिसका पेट बडे फैलावका हो उसका पुत्र बलवान् होताहै ॥ ३४ ॥

उन्नतेनोदरेणैव वंध्या नारी प्रजायते ॥
जठरेण कठोरेण सा भवेद्धिंदुकांगना ॥ ३५ ॥

जिस स्त्रीका पेट ऊंचाहो वह बांझ होतीहै. जिसका उदर (कठोर) कड़ा हो वह किसी नीचजातिविशेषकी पत्नी होवे ॥ ३५ ॥

आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम् ॥
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम् ॥ ३६ ॥

जिसके पेटमें (आवर्त) भौंरा हो तो वह दासी होवे यह निश्चय है और जिसकी कोमल मांससे संयुक्त दोनहूं कूखी हों तो शुभफल होताहै ॥ ३६ ॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा जठरेणातिकृशेनका-
मिनी सा ॥ बहुधातुलभोगलालिता सानुदिनं
मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

जिसका पेट नशियोंसे रहित, कोमल त्वचाका तथा कृश हो तो वह कामिनी पुत्रवती होतीहै और बहुत प्रकारके अनुपम भोगोंसे उसका प्रेम होताहै दिनदिन प्रसन्नतापूर्वक मिष्टान्न, उत्तम मेवे खानेवाली होतीहै ॥ ३७ ॥

घटाकारं यस्या भवति च मृदंगेन सदृशं यवाकारं
दैवादुदरमहितं पुत्ररहितम् ॥ अभद्रं नो भद्रं तदपि

यदि कूष्मांडसदृशं निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरु-
शालेन च समम् ॥ ३८ ॥

जिस स्त्रीका पेट घडा या मृदंगके आकार हो अथवा दैवयोगसे (यव) जौके दानेके आकारका हो तो वह पुत्ररहित रहै यदि (कूष्मांड) कुँम्हडेके आकारका पेट हो तो सर्वदा अमंगल देखे कभी मंगल न हो तथा कठोर (उरुशाल)के समान हो तो भी तत्त्वजाननेवालोंने यही फल कहाहै ॥ ३८ ॥

कृशतरा त्रिवली सरलावली ललितनर्मविनोद-
विवर्द्धिनी ॥ भवति सा कपिला कुटिलाकुला
शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥ ३९ ॥

जिसके (त्रिवली) हृदयसे भगपर्यंत रोमवाली बारीक एवं सीधी हो तो वह स्त्री रहस्यके प्रेममें हँसोंकी बोलचाल अतिरमणीय करे, प्रेम बढावे यदि वह त्रिवली (कपिलवर्ण) भूरेरंगकी, मुडींहुई, बहुत रोमोंकी हो तो कुटिलस्वभाव वाली, और गुस्सेवाली कडे वचन कहनेवाली होवै. यदि विरलरोम तथा बडी आकृतिकी त्रिवली हो तो शुभफल देती है ॥ ३९ ॥

लोमहीनहृदयं यदा भवेन्निम्नताविरहितं समा-
यतम् ॥ भोगमेत्य सकलं वरांगना सा पुनः प्रिय-
वियोगमालभेत् ॥ ४० ॥

जिस स्त्रीकी छाती रोमरहित, (समान) ऊंची नीची न हो ऊपर नीचेका (माप) परिमाण तूल अर्ज बराबर हो तो वह श्रेष्ठ स्त्री समस्त भोगसुख पावै परंतु पीछे (प्रिय) प्यारेका वियोगभी पावै ॥ ४० ॥

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहंति विस्ताररूप-

हृदया व्यभिचारिणी स्यात् ॥ अष्टादशांगुलमितं हृदयं सुखाय चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किंचित् ॥ ४१ ॥

जिस स्त्रीके हृदयके रोम फटेमुखके हों अथवा अकस्मात् स्वयं उखडजावैं वह अपने पतिको मारतीहै, जिसका हृदय जितना लंबा उतना ही चौडाभी हो तो व्यभिचारिणी होतीहै. यदि हृदय १८ अंगुल हो तो सुख होताहै, यदि रोमोंसे भराहुआ तथा कहीं ऊंचा कहीं नीचाभी हो तो उसको थोडाभी सुख नहीं मिलता ॥४१॥

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम् ॥
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ४२ ॥

उत्तम स्त्रियोंके हृदय ऊंचे, स्थूल शुभ होतेहैं गहरे और चिपिट हों तो दौर्भाग्य (भाग्यहीन) करताहै ॥ ४२ ॥

भवत एव समौ सुदृढाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ ॥ निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमबाण-विनोदविवर्धकौ ॥ ४३ ॥

यदि स्त्रीके दोनों स्तन समान एवं अच्छे (दृढ) कडे, बहुत खूबसूरत, सुहावने हों तथा गोल हों तो अपने पतिको नित्य काम-देवके बाणोंके विनोद (हर्ष) बढावनेवाले होते हैं ॥ ४३ ॥

सुभ्रुवो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ॥पयो-धरौ तदा नार्य्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः॥४४ ॥ पुत्र-दोप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् ॥ सांतरा-लौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ॥ ४५ ॥

सुन्दर है भ्रुकुटि जिसकी ऐसी स्त्रीके स्तन यदि मिलेहुए न हों

माडे हों स्थूलाग्र हों तो अशुभ हों और (दक्षिणोन्नत) दाहिने ओर झुके हों यद्वा दाहिना स्तन कुछ बडा हो तो पुत्रदेनेवाली होती है यदि (वामोन्नत) वामे ओर झुके यद्वा वाम स्तन कुछ बडा होतो कन्या देते हैं जिन स्तनोंके बीचमें कुछ (अंतराल) फासला हो तथा बडे हों उनके (मुख) चूंची मोटी हों तो शुभ नहीं होते ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ॥
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यंतदुःखदौ ॥ ४६ ॥

स्तन जडसे मोटे फिर क्रमसे माडे होते होते अग्रभाग तीक्ष्ण हों तो प्रथम अवस्थामें सुख पीछे अत्यंत दुःख देतेहैं ॥ ४६ ॥

पुत्रिणी विनतस्कंधा ह्रस्वस्कंधा सुखप्रदा ॥
पुष्टस्कंधा तु कामांधा रतिभोगसुखावहा ॥ ४७ ॥

जिसके कंधे नम्र हों वह पुत्रवती और छोटेकंधोंसे सुखी होतीहै यदि स्कंधे पुष्टहों तो वह स्त्री कामदेवसे अंधीसी हो रमणसुखसे युक्त रहती है ॥ ४७ ॥

मदांधा कुटिलस्कंधा स्थूलस्कंधा च तादृशी ॥
यदि लोमाकुलस्कंधा वैधव्यं द्रुतमावहेत् ॥ ४८ ॥

जिसके (स्कंध) कंधे टेढे हों वह मदसे अंधी रहती है, मोटे कंधोंवालीभी ऐसेही मदांधा रहतीहै, यदि कंधोंमें रोम बहुत हों तो शीघ्र विधवा होतीहै ॥ ४८ ॥

स्रस्तांसा संहतांसा च धन्या भवति कामिनी ॥
तुंगांसा विधवा ज्ञेया विमांसांसा तथैव च ॥ ४९ ॥

स्कंधांके किनारे बाहुके जड़ (अंस) चौडे हों यद्वा कडे हों तो वह कामिनी धन्या (भाग्यवती) होवै जिसके उक्तभाग ऊंचे

हों अथवा (मांसरहित) मांडे हों तो विधवा जाननी ॥ ४९ ॥

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् ॥
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा ॥ ५० ॥

अंगूठा तथा दोअँगुली स्त्रियोंकी यदि कमलकी कलीके समान हों तो बहुभोग देती है यह स्त्रियोंके भोगनिमित्त पहिले ब्रह्माने बनाया ऐसा जानना ॥ ५० ॥

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम् ॥ निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम् ॥ ५१ ॥

भुजाओंसे (करतल) हाथोंकी हथेली यदि कोमल, निर्मल कमलके समान, तथा ऊंची होंतो अपने पतिके कामदेवको बढा नेवाली होती हैं यह ब्रह्माके वचन मुनियोंने कहे हैं ॥ ५१ ॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया ॥
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥ ५२ ॥

यदि हाथकी हथेली निर्मलरेखाओंसे भरी हो तो मङ्गल देनेवाली होतीहै यदि रेखा छोटी हों तो अमंगली है यदि रेखा न हों तो अमंगली होवै और अतिरेखा हों तो वैधव्य पावै ॥ ५२ ॥

शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि ॥
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥ ५३ ॥

हाथ अति शिरा(नसियोंसे भरा)होतो स्त्री निर्द्धन होवै और हाथका पिछवाडा ऊंचा तथा नसियोंसे रहित हो तो शुभ होताहै ॥५३॥

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत् ॥
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥ ५४ ॥

यदि हाथकी पीठ रोमोंसे भरी, गहरी और मांसरहित हो तो पतिके प्राणोंको हरे इतने स्त्रियोंके करपृष्ठके लक्षण पंडितोंने कहेहैं॥५४॥

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फटतरा करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहु शुभम्॥ यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विंदति परं विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥ ५५ ॥

यदि स्त्रीके बाँये हाथमें गहरी, लाल रंगकी, कोमल, देखनेमें स्पष्टतर रेखा हों तो अतिशुभ होता है और गोलाकार हों तो पतिकी रतिका परम सुख पाती है सौभाग्य बढाती है बलवती होती है यदि हाथमें स्वस्तिकभी हो तो पुत्रवती होवै ॥ ५५ ॥

करतले यदि पद्ममिलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता ॥ नृपमपत्यमलं जनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥ ५६ ॥

यदि स्त्रीके हाथमें कमलका चिह्न हो तो परम बडप्पनसे युक्त राजरानी होवै तथा संतानोंमें निश्चय राजाकोही उत्पन्न करे अर्थात् इसका पुत्रभी राजा होवै जो बलसे बलवानोंके बलकोभी मर्दन करनेवाला हो ॥ ५६ ॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नंद्यावर्तः प्रजायते ॥
चक्रवर्तिनृपस्त्री सा यस्याः पाणितलेऽमले ॥५७॥

यदि स्त्रीके निर्मलहाथमें प्रदक्षिणाकार घुमाहुआ नंद्यावर्त चिह्न हो तो वह स्त्री चक्रवर्ती राजाकी रानी होवै ॥५७॥

आतपत्रं च कमठः शंखोऽपि यदि वा भवेत् ॥
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥ ५८ ॥

जो स्त्रीके हाथमें छत्र, कमल, कछुआ, अथवा शंखकासा चिह्न हो तो वह गुणवती राजमाता तथा बडे यद्वा सुंदर आकारकी और पतिव्रता होवै ॥ ५८ ॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत् ॥
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालंकारमंडिता ॥ ५९ ॥

जिसके बाँयें हाथमें (तराजू) तखडी अथवा मालाके समान रेखा हों तो उसका पति यद्वा वही व्यापारी होवे अथवा व्यापारी वा वैश्यकी स्त्री होवै तथा धनसे परिपूर्ण रहे, अनेक भूषण अलंकारोंसे सुशोभित रहे ॥ ५९ ॥

करतले गजवाजिवृषाकृतिः कृतिविदामबलाकिल कोविदा ॥ भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥ ६० ॥

जिस स्त्रीकी हाथकी हथेली हाथी, घोडा, बैल का चिह्न हो वह चतुर एवं किये कामकी परीक्षा करनेवाली अर्थात् कदरदान और पंडिता होवै. जिस सुंदर भ्रुकुटीवाली स्त्रीके हाथमें चूनेवाले पक्केमकानके समान चिह्न हो अथवा चंद्रमाके समान रेखा हो तो वह अति शुभफल देती है. गुणवती भाग्यवती करती है ॥ ६० ॥

भवति सा विमलांकुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका ॥ गुणविभूषितभूपतिवल्लभा करतले शकटेन विशोवला ॥ ६१ ॥

जिसकी स्त्रीके हाथमें निर्मल अंकुश, चामर, तथा निर्मल बाणके आकारका चिह्न हो वह शुभगुणोंसे शोभायमान, राजरानी होवे अर्थात् उसका पति राजा वा राजतुल्य होवै यदि हाथमें

(शकट) गाडीके आकारकी रेखा हो तो उसका पति वैश्य यद्वा व्यापारी होवै ॥ ६१ ॥

अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठां यदि गच्छति ॥
यस्याः सा पतिहंत्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

जिस स्त्रीके अँगूठेकी जडसे (कनिष्ठा) छोटी अंगुलीके मूलपर्यंत रेखा पहुँची होतो वह अवश्य अपने पतिको मारनेवाली होतीहै ऐसी स्त्रीको दूरहीसे वर्जित करना ॥ ६२ ॥

यदि करे करवालगदामलप्रखरकुंतमृदंगकुरंगवत् ॥ भवति शूलनिभा खलु रेखिका भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥ ६३ ॥

जिस स्त्रीके हाथमें तलवार, गदा, निर्मल एवं तीक्ष्ण कुंत, मृदंग, हरिण, शूलके समान रेखा हो तो वह स्त्री पृथ्वीपर सर्वदा धनदेनेवाली होवै ॥ ६३ ॥

वृषभेकवृश्चिकभुजंगजंबुकाः खरकंकपत्रशलभाबिडालकाः ॥ यदि वामपाणितलगा भवंति चेत्कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥ ६४ ॥

जिसके बायें हाथकी हथेलीमें बैल, मेंडक, बिच्छू, सर्प, स्यार, गदहा, (कंकपत्रपक्षी) कैंचुआ, (शलभ) टीडी, बिल्लीका चिह्न हो तो कलहकारिणी होवै तथा अतिरोगपीडित रहै ॥ ६४ ॥

कोमलः सरलोंगुष्ठो वर्तुलो यदि योषिताम् ॥
क्रमादेवं कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्तुलाः ॥ ६५ ॥
पृष्ठरोमाः प्रजाः शस्ताश्चिपिटा उदिता बुधैः ॥

कृशाः कुंचितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥ ६६ ॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयोऽशुभाः ॥ ६७ ॥

यदि स्त्रीके अंगुष्ठ कोमल तथा सीधा और वर्तुलाकार (गोल हों और अंगुली उससे क्रमकरके न्यून जैसे एकसे दूसरी कम होती जावैं, तथा लंबे आकारकी वर्तुल (गोल) हों उनके पीछे रोम जमेंहों एवं पृष्ठभाग उनका चिपिट (चौडा) स्वल्पमांसवाले हों तो शुभफल देतेहैं ये शुभलक्षण हैं । यदि अंगुली माडी हों तथा उनके रेखाओंके बीचके पर्व टेढे हों तथा अंगुली छोटे कदकी हों तो रोगका भय देती हैं । यदि अंगुलियोंमें अनेक (पर्व रेखा मध्यस्थानमें हों तथा ऊंची हों तो अशुभफल देनेवाली होतीहैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ॥
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रुवः सुखनाशकाः ॥६८

स्त्रीके नाखून यदि शंख यद्वा सीपके समान हों तथा बीचमें गहरे वर्णरहित हों तो शुभ नहीं होते, तथा कपिल वर्ण एवं मुडे हुए और रूखे भी हों तो सुखका नाश करतेहैं ॥ ६८ ॥

यदि भवंति नखेषु मृगीदृशां सितरुचो विरला
यदि बिन्दवः ॥ अतितरां कुसुमायुधपीडया पर-
जनेन लपंति रमंति ताः ॥ ६९ ॥

मृगके समान हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्रियोंके नाखूनोंमें यदि श्वेत रंगके बिंदु (छींटे) हों तो वे अतिही कामदेव की पीडासे परपुरुषोंसे स्वयं बातचीत करें तथा रमितभी रहें ॥ ६९ ॥

गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ॥
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥ ७० ॥

जिस स्त्रीके पीठकी हड्डी (कनकदंड) मासमें छिपी हो और पुष्ट हो तो पतिकी प्यारी होती है, यदि पीठपर बहुतरोम हों तो निश्चय विधवा होतीहै ॥ ७० ॥

सशिरेणातिमुग्नेन विनतेन च दुःखिता ॥ सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः ॥ ७१ ॥ सा पत्युरनुभद्राख्या मुक्तालंकारमंडिता ॥ अति-प्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता ॥ ७२ ॥

जिसका पृष्ठवंश शिरा (नसियों) से युक्त हो, कहीं ऊंचा कहीं नीचा हो तथा गहरा हो तो वह स्त्री दुःखित रहती है । जिसका पृष्ठवंश सरल (सीधा) मांससे भरा हुआ हो तथा ऊंचा हो तो वह पतिव्रता पतिको मंगल करनेवाली मोती आदिरत्नोंके भूष-णोंसे शोभित रहै, पतिकी अतिप्यारी होवै, अच्छा शील (स्वभा-व) होवै, श्रेष्ठसखियोंसे युक्त रहै ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

कंठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः ॥
चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति ॥७३॥

जिस स्त्रीका कंठ (गला) गोल आकारका, सुन्दरसुहावना तथा पुष्ट हो और लंबाईमें चार अंगुल हो तो वह अपने भर्त्ताकी प्यारी होती है ॥ ७३ ॥

गुप्तास्थिर्मांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता ॥
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना ॥ ७४ ॥

जो ग्रीवा (कंठ) मांससे पुष्ट हो अर्थात् हड्डी जिसकी प्रकट न हों, त्रिवलीके समान तीनरेखाओंसे युक्त हो, दृढ हो तो शुभहो-

तीहै । इससे विपरीत माडी, ऊंची हड्डीवाली, कहीं ऊंची कहीं नीची हो तो अशुभ होतीहै ॥ ७४ ॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका ॥
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थऽवर्जिता ॥ ७५ ॥

गला मोटा हो तो पतिसे त्यक्त रहै, गलेका लालरंग हो तो दासी होवै, जिसकी ग्रीवा चिपिट (चौडी) माडी हो वह विधवा होवै जिसकी ग्रीवा छोटी हो (वह धनवर्जिता) दरिद्रा रहै ॥७५॥

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ॥
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना७६॥

जिसकी ठोडी घनी, कोमल और रोमरहित हो तो शुभ होती-है जिसमें रोम बहुत हों (टेढी) तिर्छी हो, छोटी अथवा बहुत-मोटी हो तो शुभ नहीं, दुःख दौर्भाग्य दारिद्र्य करती है ॥ ७६ ॥

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्तुलाकृती ॥
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ॥ ७७ ॥

जिन मृगाक्षियोंके गाल बहुत मांसयुक्त, कोमल, गोलाकार ऊंचे हो तो शुभ होते हैं ॥ ७७ ॥

निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ॥
सीमंतिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ॥ ७८ ॥

जिस नवयौवना स्त्रीके कपोल (गाल) मांसरहित हों, अथवा पुरुषकेसे हों तथा रोमयुक्त टेढ़ी आकृतिके हों तो अशुभ होतेहैं दौर्भाग्य (कंबख्ती) बढानेवाले होते हैं ॥ ७८ ॥

वर्तुलो रेखयाक्रांतो बन्धूकसदृशोऽधरः ॥
स्निग्धो राजप्रियो नित्यं सुभ्रुवः परिकीर्तितः॥७९॥

जिन सुभ्रुओंके होंठ गोल हों और रेखाओंसे युक्त तथा बंधूकपुष्पके समान रक्तवर्ण हों तथा स्निग्ध (चिकने) हों तो राजप्रिय अर्थात् ऐसे होंठ राजाको प्रिय होतेहैंयह पूर्वाचार्योंने कहाहै॥७९॥

प्रलंबः पुरुषाकारः स्फुटितो मांसवर्जितः ॥
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः ॥ ८० ॥

जो ओष्ठ लंबा हो, पुरुषके सदृश हो, फटाहुआ हो तथा मांसरहित होतो दौर्भाग्य देनेवाला जानना यदि ओष्ठ कृष्णरंगका होतो वैधव्य जनाता है ॥ ८० ॥

उपर्यधःसमा दंताः स्तोकरूपाः पयोरुचः ॥ द्वात्रिंशदास्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ॥ ८१ ॥

जिस स्त्रीके मुखमें दांत ऊपर तथा नीचेके सम हों और छोटे हों तथा दूधके समान कांतिमान् हों गिनतीमें बत्तीस हों तो वह सर्वदा सौभाग्यवती रहती है ॥ ८१ ॥

अधोदंताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ॥
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥ ८२ ॥

जिसके नीचेके दांत गिनतीमें ऊपरके दातोंसे अधिक हों तो मातासे हीन एवं दुःखितभी रहे यदि दांत (विकटरूप) कुरूप हों तो विधवा होवै और दांत (छांटे) बीचमें अंतराल सहित हों तो व्यभिचारिणी होवै ॥ ८२ ॥

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ॥
स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥८३॥

स्त्रीकी जीभ कोमल, सरल और लाल, वा श्वेतरंगकी अथवा

रक्त श्वेत मिलेहुये रंगकी शुभ होती है, जो जीभ आद्यंतमें मोटी
बीचमें माडी हो तथा विकृतरूप हो तो सुखका नाश करतीहै८३॥

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत् ॥
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लंबमानया ॥ ८४ ॥

जिसकी जिह्वा श्याम रंगकी हो वह नित्य कलह करनेवाली
होवै, जिसकी जिह्वा मोटी हो वह दरिद्रा होवै और जिसकी जिह्वा
लंबी हो वह अभक्ष्यभक्षिणी (न खानेके योग्य वस्तु खानेवाली)
होवै ॥ ८४ ॥

तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम् ॥
नारी प्रव्रजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥ ८५ ॥

जिसकी तालु कमल (रक्तोत्पल) के समान रंग,और कोमल हो
वह मंगलसूचक होतीहै । यदि तालु पीतवर्ण हो तो स्त्री प्रव्रजित
(फकीरनी)होवै, श्वेतवर्ण हो तो वह स्त्री विधवा होवै ॥ ८५ ॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ॥
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८६ ॥

जिस स्त्रीके तालु कृष्णरंगका हो तो वह पुत्ररहित होतीहै.रूक्ष
होतो दुःखित रहे.जिसके तालु टेढा हो वह कलिप्रिया (कलह
शौक रखनेवाली) होवै जो तालुके अनेक रूप रंग हों तो दुर्भगा
(दरिद्रा कुलकलंकिनी) भी होवै॥ ८६ ॥

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घंटी शुभा मता ॥
अतिस्थूला प्रलंबा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ॥८७॥

घंटिका (कंठमूल)का प्रथमभाग स्थूल तदुत्तर क्रमसे सूक्ष्म तथा
लालरंगकी, गोलाकार, मोटी शुभ होती है, जो घंटिका अति
स्थूल, बहुतलंबी कृष्णरंगकी हो तो वह शुभ नहीं होती ॥ ८७ ॥

भवति चेदनिमीलितलोचनं शुभदृशां दरफुल्लक-
पोलकम् ॥ अलमलक्षितदन्तमुदीरितं पतिहितं
सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ८८ ॥

जिस स्त्रीके मुसकुरानमें आँख बन्द न हों तथा कपोल थोडे प्रफुल्लित होजायँ और दाँत देखनेमें न आवें तो वह मुसकुरान सर्वदा पतिको हितकारी (शुभदायक) कहाहे ॥ ८८ ॥

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ॥
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रुवो भवेत् ॥८९॥

सुंदर भ्रुकुटीवाली स्त्रीकी नाक छोटे छिद्रकी, (सम) समान तथा वृत्ताकारपुटकी शुभ होती है. यदि नासिकाका अग्रभाग स्थूल तथा मध्यमें गहरा हो तो शुभ नहीं होती ॥ ८९ ॥

लोहिताग्रा कुंचिता च महावैधव्यकारिणी ॥
दासिका चिपिटाकारा प्रलंबा च कलिप्रिया ॥ ९० ॥

नासिकाका अग्रभाग लालरंगका एवं मुडा हुआ हो तो महा-वैधव्य करती है, जिसकी नाक चिपिट (सूखीसरीखी) हो; तथा अतिलंबी हो तो वह स्त्री (कलिहारी) कलहको प्रिय माननेवाली होवै ॥ ९० ॥

रक्तांते लोचने भद्रे तदंतः कृष्णतारके ॥
कंबुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥ ९१ ॥

स्त्रीके नेत्रोंके अंतिमभाग रक्त हों, उन नेत्रोंके मध्यवर्ती तारा (पुतली) कृष्णवर्णके हों तथा कंबु (शंख) यद्वा गौके दूधके समान नेत्र श्वेतरंग वाले हों एवं कोमल हों और पलकोंके केश कृष्ण हों तो शुभलक्षण हैं ॥ ९१ ॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥ ९२ ॥

जिस स्त्रीके नेत्र ऊंचे हों वह अल्पायु होती है, जिसके नेत्र गोल हों वह व्यभिचारिणी होवे, जिसके बकरेकेसे अथवा केकर-केसे अथवा महिषकेसे नेत्र हों वह दुर्भगा होवै ॥ ९२ ॥

पिंगाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ॥
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥ ९३ ॥

पीले नेत्र यद्वा पिंगलपक्षीकेसे नेत्रवाली तथा कपोतपक्षीकेसे नेत्रवाली दुष्टप्रकृति, कामरहित होवै, जिसके नेत्र कोटरके समान गहरे हों वह बड़ीही दुष्टा होवै और लाल नेत्रवाली विधवा होतीहै ९३

विडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ॥
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुँश्चली वामकाणिका ॥९४॥

जो कामिनी बिल्लीके समान अथवा हाथीके समान नेत्रवाली हो, वह कुलका नाश करती है। जिसकी दाहिनी आँख काणी फूटी वा किसी प्रकार गई हो तो वह बांझ और वाम आंख काणीसे व्यभिचारिणी होवै ॥ ९४ ॥

सदा धनवती नारी मधुपिंगललोचना ॥
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसंमता ॥ ९५ ॥

जिस स्त्रीके नेत्र सहतसमान पीले हों वह सर्वदा धनवती रहे तथा पुत्रपौत्रोंके सुखसे युक्त और पतिके संमत हो ऐसा आचार्योंने कहाहै ॥ ९५ ॥

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ॥
लघुरूपधरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥ ९६ ॥

जिस स्त्रीके पलक कोमल हों, श्याम हों तथा घनभी हों औ

छोटे रूपको धारण किये हों वह स्त्री धन्य है. लोकमें माननीय तथा पतिकी प्रिया होवे ॥ ९६ ॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ॥
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥ ९७ ॥

जिसके पलक रोमरहित हों अथवा कहीं कहीं स्वल्प रोम-हों तथा नीचेको लंबायमान एवं कपिलवर्ण हों अथवा मोटे केश-वाले हों तो वह कामिनी परपुरुषगामिनी होवे ॥ ९७ ॥

वर्त्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ॥
अनंगरंगजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥ ९८ ॥

जिसकी भ्रुकुटी (भौंह) गोल, कोमल, श्यामरंग और धनुष्के समान घूमेहुए हों वह कामक्रीडामें पतिको सुख देनेवाली होती है तथा भ्रुकुटीपर कोमल रोमोंसेभी यही फल है ॥ ९८ ॥

पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ॥
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवः ॥ ९९ ॥

जिस स्त्रीके भ्रुकुटीपर भूरे केश हों, यद्वा विरल केश हों मोटी हों, सीधी हों, दोनों भ्रुकुटी मिली हों, अथवा लंबेकेशवाली हों, यद्वा विना केशकी हो तो यह शुभलक्षण नहीं है वह स्त्री दुर्लक्षणा होती है. झुकीहुई भ्रुकुटीवालीभी ऐसेही होती है ॥ ९९ ॥

प्रलंबौ वर्त्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ॥
शिरालौ च कृशौ निंद्यौ शष्कुलीपरिवर्जितौ ॥ १०० ॥

जिस स्त्रीके कान लंबे; गोलाकार (गिर्द) हों तो शुभफल देनेवाले होते हैं, जिनपर शिरा (नशी) बहुत प्रगट हों, माडे हों तथा फेणिकाकार न हों तो निन्द्य हैं अर्थात् अशुभफल देते हैं १००

उन्नतस्त्र्यंगुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ॥
अर्द्धचंद्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः ॥१०१॥

जिन नम्रभ्रुकुटीवाली स्त्रियोंका मस्तक (माथा) तीन अंगुल प्रमाण ऊंचा हो, कोमल हो और अर्द्धचंद्रमाके आकारका हो तो वह सौभाग्य, नीरोगिता आदि सौख्य बढानेवाला होता है॥१०१॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्या ललाटस्थलं
सौभाग्यामलभोग्यकृत्तदलिकं लंबायमानं यदि ॥
अद्धा देवरमाशु हंति नितरां रोमाकुलं रोगदं
रेखाहीनमनंगभंगजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥ १०२ ॥

जिस स्त्रीके ललाटमें (माथेमें) स्वस्तिक चिह्न प्रगट हो अथवा बहुत स्वस्तिक हों तो वह स्त्री सौभाग्ययुक्त, उत्तम निर्मल भोग युक्त रहती है, यदि वही चिह्न लंबा यद्वा लटकतासा हो तो वह स्त्री साक्षात् देवरका नाश करती है, यदि मस्तक रोमोंसे भरा हो तो रोगी रहै यदि रेखाओंसे रहित हो तो कामदेवसंबंधी भंगता पंडितोंने सर्वदा जाननी ॥ १०२ ॥

करिपुंगवकुम्भसमान उत प्रवरोन्नत एव कदंब-
निभः ॥ इह मौलिरजस्रमिला विमला विविधा
बहुधान्ययुता सुदृशः ॥ १०३ ॥

जिन सुनेत्रा स्त्रियोंका माथा श्रेष्ठहाथीके गंडस्थलके समान अथवा क्रमसे ऊंचा कदंबसदृश हो तो उनको निर्मल अनेक प्रकारके धान्ययुक्त पृथ्वी मिले ॥ १०३ ॥

पीनमौलिरतिमानहारिका दारिका कुजनसंगका-

रिका ॥ लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बंधकी निज-
कुलान्तकारिका ॥ १०४ ॥

जिस कन्याका माथा (ऊंचा) चूलीसदृश पैना हो वह अपने मानको खोवै, दुष्टजनोंकी संगति करे जिसका माथा लंबा हो वह भी सर्वनाश करे, बांझिनी होवे और अपने कुलका नाश करने वाली होवे ॥ १०४ ॥

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा वक्राकाराः
कुवलयदृशः किंचिदाकुञ्चिताग्राः ॥ भाग्यं सद्यो
ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः परम-
लघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ॥ १०५ ॥

जिस कमलनयनीके शिरके केश भ्रमरसमूहोंके उपेक्षा करनेवाले अर्थात् अति कृष्णवर्ण तथा चमकीले और मुडेहुए तथा कुंचित थोडे मुडेहुए अग्रभागवाले होवें तो भाग्य (ऐश्वर्य) देते हैं, यदि छोटे हों पीले भूरेरंगके, मोटे, रूखे, हों अथवा अतिही छोटे हों तो वैधव्य, बंधन आदि दुःख देते हैं ॥ १०५ ॥

मशकापि ललाटपट्टवर्ती यदि जागर्ति स मध्य-
गो भ्रुवोर्वा ॥ तनुते सुखमर्थराशिभोगं सततं
पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ १०६ ॥

जिसके मस्तकमें मसा (चर्मविकारसे छोटा व्रण सरीखा) हो अथवा वह भ्रुकुटीके बीचमें हो तो सुख, अतिधनी, अनेकभोग, और सर्वदा पति, पुत्रका सुख पाती है ॥ १०६ ॥

मशकोपि कपोलमध्यगामी सुदृशो लोहित एव-
मिष्टदः स्यात् ॥ हृदयं तिलकेन शोभितं लसने-
नापि च राज्यकारणम् ॥ १०७ ॥

जिसके गालके बीचमें मसा लालरंगका हो तो इष्टसिद्धि करता है. यदि हृदयमें तिल वा लसन चिह्न हो तो राज्य देताहै॥१०७॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा॥ जायते किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥ १०८ ॥

जिस सुभ्रू स्त्रीके स्तनमण्डलमें लाल रंगका तिल हो तो उसके चार कन्या और ३ पुत्र होवें यह पूर्व शास्त्रोंमें कहाहै ॥ १०८ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलांछनं शुभदृशास्तिलकं कमलप्रभम् ॥ प्रथमतस्तनयं परिसूय सा कृतिवरं विधवा तदनन्तरम् ॥ १०९ ॥

जिस सुभ्रू स्त्रीके वामस्तनमें लालरंगका लांछन हो वह प्रथम युवावस्थामें गुणवान् पंडित पुत्रको उत्पन्न करके विधवा होजावै१०९

लसति बालमधुव्रतसन्निभं शुभदृशास्तिलकं गुददक्षिणे ॥ नरपतेरबला कमलालया नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ॥ ११० ॥

जिस सुन्दर भ्रुकुटीवालीस्त्रीके छोटेभ्रमरोंके समूहसमान रंगका (कृष्ण) तिल गुदद्वारके दाहिने हो वह राजाकी स्त्री हो उसके घरमें लक्ष्मी वास रहै तथा उसका पुत्र भी निश्चय राजाही होवै ॥ ११० ॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी सुदृशी विद्रुमकांतिरर्थदायी॥ अलिपक्षनवाभ्ररूपधारी पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ १११ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके नासिकाके अग्रभागमें लाल रंगका मसा हो तो धन देता है। यदि वही मसा भ्रमरपक्ष यद्वा नवीन मेघके रूपको धारण किये हो तो पतिको मारती है विशेषतः व्यभिचारिणी होती है ॥ १११ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ॥
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥११२॥

यदि नम्र भ्रुकुटीवाली स्त्रियोंके नाभी के नीचे तिल अथवा लांछन प्रकट होवै तो सौभाग्य जनाता है अथवा मसा हो तौ भी ऐसाही फल करता है ॥ ११२ ॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा भवति कंठगतं
तिलकं तदा ॥ श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा
वरदृशी मशकामललांछनैः ॥ ११३ ॥

जिस सुनेत्रा स्त्रीके हाथकी हथेलीमें, या गालमें, अथवा कंठमे यद्वा कानके नीचे तिल हो तो वह स्त्री पतिकी प्यारी होवै ऐसेही मसा आदि निर्मल लांछनसे जानना ॥ ११३ ॥

भालस्थेन त्रिशूलेन शंभुना निर्मितेन वै ॥
यस्याः साऽऽलीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम्॥११४॥

जिस भाग्यवती स्त्रीके माथेमें शिवजी कृपा करके त्रिशूलाकार रेखाका चिह्न करदें तो वह हजारहों (आली) सखियोंकी स्वामिनी होवै अर्थात् अतीव ऐश्वर्यवती होवे ॥ ११४ ॥

किटकिटे तिलकं कुरुते मिथः शुभदृशः शयने

तुरदावली ॥ महदमंगलमाह विशेषतः प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः ॥ ११५ ॥

जिस सुदृशी स्त्रीके दोनों पंक्तिके दांत सोयेमें किट किट शब्द करें अर्थात् दाँत परस्पर लड़ें तो उसके पतिको महान् अमंगल होताहै, यह विशेष दुर्लक्षण है, शरीरके लक्षणोंके जाननेवाले पंडित लोगोंने कहा है ॥ ११५ ॥

शकटवद्यदि योनिललाटगो मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत् ॥ वरदुकूलमणिव्रजमंडिता क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ॥ ११६ ॥

जिस मृगनयनीके माथेपर कोमल केशोंसे बना हुआ गाड़ी अथवा (योनि) भगकासा आकार हो तो वह श्रेष्ठवस्त्र, अनेक रत्नसमूहोंसे शोभित, अनेक सखी दासिकाओंसे युक्त राजरानी होवै ॥ ११६ ॥

विलसति भगभाले दक्षिणावर्तरूपः कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसंघः ॥ नरपतिकुलभर्तुः कामिनी मानिनीनामिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात् ॥ ११७ ॥

पूर्व श्लोकमें जो माथेपर कोमल केशोंसे भगका चिह्न कहाहै वह यदि दक्षिणावर्त्त (दाहिनी ओरको घुमा) हो तो वह मृगनयनी राजाधिराजकी कामिनी (प्रिया) होवै यौवनगर्विता स्त्रियोंमें वदान्या (श्रेष्ठा) होवै, विशेषतः वही स्त्री धन्या है ॥ ११७ ॥

कण्ठावर्त्ता भवति कुलटा भर्तृहंत्री कुरूपा पृष्ठा-
वर्त्ता कठिनहृदया स्वामिहंत्री कुलघ्नी ॥ आवर्तौ
वा भवत उदरे द्वाविहैकोपि यस्याः सापि त्या-
ज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात् ॥ ११८ ॥

बारीक कोमल रोमोंका पुंज होकर मुडाहुआ जलका आवर्त्त (भौंरा) जैसा कण्ठमें हो तो बहुतपति करनेवाली, पतिको मार-नेवाली, कुरूपा होवै। पीठमें होतो कठोरहृदय (कर्कशा, निर्दया) और भर्त्ताको मारनेवाली कुलका नाश करनेवाली होतीहै। जिसके पेटमें दो अथवा एक भी भौंरा हो वह भी स्त्रियोंके सामुद्रिकल-क्षण जाननेवाले चतुरोंको दूरहीसे वर्जित करनी चाहिये ॥११८॥

सीमंते च ललाटे वा कण्ठे वापि नतभ्रुवः ॥
लोम्नामावर्त्तको दक्षो वामो वैधव्यसूचकः ॥ ११९ ॥

माथेके ऊपर केश प्रांतस्थानमें अथवा माथेमें अथवा कण्ठमें जिस सुभ्रूके रोमावर्त्त (भौंरा) दाहिने ओर अथवा बायें ओर घुमा-ववाला हो तो वैधव्य जनानेवाला होताहै ॥ ११९ ॥

याभिरेव वरदो महेश्वरः पूजितः किल पुरा व्रता-
दिभिः ॥ पार्वती च परिपूजिता मुदा भक्तियोग-
विधिना सुवासिनी ॥ १२० ॥ भूषितामलविभूष-
णादिभिः क्षालितं वपुरनेकधा पुरा ॥ तीर्थराजप-
यसा भवंति ता लक्षणैरिह शुभैः सुलक्षणाः ॥१२१॥

जिन स्त्रियोंने पूर्वजन्ममें व्रतादिकोंसे शिवजीका पूजन किया हो

तथा प्रसन्नतापूर्वक पार्वतीजीकाभी पूजन किया हो और भक्ति
भावसे, योगसाधनविधिसे आराधन कियाहो (सुवासिनी) सौ
भाग्यवतीका पूजन उमाव्रत आदिकोंसे किया हो उनको वस्त्र
भूषणादि अलंकार दियेहैं अथवा तीर्थराज प्रयागादिकोंके जल
शरीर अनेक वार प्रक्षालित किया हो वे उक्त शुभलक्षणोंसे यु
लक्षित, सुलक्षणा होती हैं अर्थात् जिन्हींने पहिले बडे पुण्य किये
वही भाग्य, ऐश्वर्यवती होतीहैं, उन्होंके उक्त शुभचिह्न, लक्षण होते
हैं ॥ १२० ॥ १२१ ॥

कृतं नहि तपो यया नगजया समाराधितो हरि-
र्नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम् ॥ धनं
नहि धरामरे परममर्पितं तर्पितं गुरोः कुलमिहां-
गना भवति सैव दीनांगना ॥ १२२ ॥

जिस स्त्रीने पार्वतीजीका तप न किया, अथवा विष्णुका भ
प्रकार आराधन नहीं किया. सूर्यका व्रत न किया,तीर्थोंमें न फिरी
ब्राह्मणोंको धन नहीं दिया, गुरुका कुल तृप्त नहीं किया, वह इ
संसारमें (दीना) दुःखदरिद्रयुक्त दुर्लक्षणों सहित होती है ॥१२२

यतः सुलक्षणैरेखा योषा हीनायुषं पतिम् ॥
दीर्घायुषं सुचरितैः प्रकरोति सुखास्पदम् ॥ १२३ ॥

जिससे कि, सुलक्षणरेखाओंवाली स्त्रीका पति अल्पायुभी ह
तो यह अपने शुभलक्षणोंके प्रभावसे एवं अपने सुचरित्रोंसे उ
दीर्घायु तथा सुखका स्थान करदेती है ॥ १२३ ॥

दीर्घायुषं पतिं हंति कुयोगैश्च कुलक्षणैः ॥
अतः सुलक्षणा कन्या परिणेया विचक्षणैः ॥१२४

जिस स्त्रीके कुयोग एवं कुलक्षण (उक्त लक्षणोंमेंसे) होतेहैं

दीर्घायु पतिकोभी नाशकरके विधवा होती है, तस्मात् जाननेवालोंने सुलक्षणा कन्यासे विवाह करना दुर्लक्षणासे नहीं करना ॥२४॥

कुलक्षणविलक्षिता यदि सुताऽत्र संजायते श्रुतिस्मृतिपथानया परमसोमवारव्रतम् ॥ विधाय तदनंतरं रहसि कारयित्वाऽच्युतद्रुमेण हरिणा कृतीशुभघटेन पाणिग्रहम् ॥ २५ ॥

जिसके घरमें कुलक्षणोंसे युक्त कन्या उत्पन्न होवे उसने वेद तथा धर्मशास्त्रके अनुसार सोमवारका उत्तम व्रत कन्यासे करावना इसके उपरांत एककांतमें अच्युतद्रुम (पीपल) वा विष्णुप्रतिमा या घटके साथ विवाहविधिसे विवाह करना ॥ २५ ॥

शुभेहनि कुमारिकाकरनिपीडनं कारयेद्वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषायते ॥ इदं तु बहुसंमतं मुनिवरेण गीतं पुनः प्रमाणपटुनाद्दृतं प्रियविनोदकंदप्रदम् ॥ २६ ॥

ऐसे अश्वत्थ विवाह तथा विष्णु प्रतिमाविवाह वा घटविवाह करनेके उपरांत शुभदिन मुहूर्त्तमें उस कन्याका चिरजीवित्वकारक ग्रहवाले वरके साथ विवाह करना, इसमें पुनर्विवाहका दोष नहीं होता (और दुर्लक्षण एवं वैधव्य योगोंका फल निराकरण होजाताहै.) यह विधि बहुत आचार्य्योंके संमत है, श्रेष्ठ मुनिसे कहा हुआहै तथा उत्तम विद्वानोंसे आदृतहै और स्वामीको आनन्दप्रद है ॥ २६ ॥

कुलक्षणैः कुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा ॥
तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥ २७ ॥

सामुद्रिकोक्तकुलक्षणोंसे यद्वा जातकोक्त कुयोगोंसे लक्षित

जो कन्या हो उसका पूर्वोक्तविधिसे विवाह करना (इससे सुहाग बढता है दुर्लक्षण दुर्योगोंका उपाय यही है) ॥ २७ ॥

जीवनाथविदुषात्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे मया॥
स्कंदकुंभभवयोर्विवादजं व्यासगीतमखिलं प्रकाशितम् ॥ १२८ ॥

इति श्रीजीवनाथविरचिते भावकुतूहले
सामुद्रिकाध्यायो दशमः ॥ १० ॥

ग्रंथकर्त्ता आचार्य पंडित जीवनाथ कहताहै कि मैंने बुधजनोंके मनप्रसन्न करनेके लिये इतने स्त्रीलक्षण स्कंद और अगस्तिके प्रश्नोत्तर व्यास देवजीके कहे अनुसार समस्त प्रकाशित किया है १२८

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां सामुद्रिकाऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ शयनादिद्वादशावस्थाविचारः ।

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ॥
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः ॥ १ ॥
सभायां च ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ॥
नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्था नभःसदाम् ॥ २॥

अब ग्रहोंकी अवस्था कहते हैं-शयन १ उपवेशन २ नेत्रपाणि ३ प्रकाश ४ गमन ५ आगमन ६ सभा ७ आगम ८ भोजन ९ नृत्यलिप्सा १० कौतुक ११ निद्रा १२ ये अवस्थाओंके नाम हैं ॥ १ ॥ २ ॥

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्या गुणिता ग्रहाणाम् ॥ निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युतार्कतष्टा शयनाद्यवस्था ॥ ३ ॥

जिस नक्षत्रमें ग्रह हो उसकी अश्विन्यादिगणनासे जो संख्या हो

उसे ग्रहकी संख्यासे गुनके पुनः ग्रहकी अंशसंख्यासे गुनाकर अपनी इष्टघटी, जन्मनक्षत्र, लग्नके संख्याओंसे युक्तकरके बारहसे भाग लेना शेष जो रहे वह अवस्था जाननी जैसे (१) शेषमें शयनावस्था, (२) में उपवेशन, (३) नेत्रपाणि इत्यादि ॥ ३ ॥

शेषं शेषहतं स्वरांकसहितं तष्टं पुनर्भानुना संक्षेपं गुणशेषितं खलु भवेद्दृष्ट्याद्यवस्था त्रिधा॥ पंचद्विद्विगुणाक्षरामगुणवेदाः क्षेपकांका रवेः प्राचीनैर्यवनादिभिः समुदितास्तेमी निबद्धा मया ॥४॥

उक्त विधिसे जो शेष रहे उसे उसीसे गुनाकर स्वरांक जोड़ना (यह स्वरांक आगे लिखेंगे) पुनः (१२) से शेष करके जिस ग्रह की अवस्था अभीष्टहै उसका (वक्ष्यमाण) क्षेपकांक जोडना तदनन्तर (३) से शेष करके एक (१) शेष रहे तो दृष्टि, (२) रहे तो चेष्टा,(०) शेष रहे तो विचेष्टा,जाननी और सूर्यके (५) चन्द्रमाके (२) मंगलके (२) बुधके (३) बृहस्पतिके (५) शुक्रके (३) शनिके (३) राहुके (४) क्षेपकांकहैं इतने अंक यवनादि प्राचीन आचार्य्योंके कहेही मैंने यहां लिखेहैं उपपत्ति इनकी ज्ञात नहीं यह ग्रंथ कर्त्ता कहता है ॥ ४ ॥

स्वरशास्त्रमतेन स्वरांकचक्रम् ।

१	२	३	४	५
अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह

ऊपर जो स्वरांक कहा वह इस चक्रस्थ क्रमसे लेना जैसे अका १ इके २ उके ३ एके ४ ओके ५ नामके (प्रधान) आदि अक्षरमें जो स्वर हों उसका अंक लेते हैं नाम प्रमाणभी वहीहै जिस नामके पुकारनेसे सोता मनुष्य जाग उठे.

अवस्थाका उदाहरण–किसीका जन्म पौषशुक्लपंचमी शुक्रवार मिथुनलग्न धनिष्ठानक्षत्रके चतुर्थचरणमें है. इष्टघटी २६।० है सूर्य मूलनक्षत्रमें, चन्द्रमा धनिष्ठामें, मंगल श्रवणमें, बुध पूर्वाषाढामें, बृहस्पति आर्द्रामें, शुक्र पूर्वाषाढामें, शनि मूलमें, राहु पूर्वाफाल्गुनीमें, केतु पूर्वा भाद्रपदामें हैं। सूर्य ७ अंश, चन्द्रमा ४, मंगल ११, बुध २६, बृहस्पति ११, शुक्र २९, शनि ७, राहु केतु २३ अंशपरहैं। प्रथम सूर्य मूलनक्षत्रमें है इसकी संख्या (१९) सूर्यकी संख्या (१) से गुना १९ धनके ७ अंश पर होनेसे ७ से गुनदिया १३३। इष्ट २६, जन्मनक्षत्र २३ लग्न मिथुन ३ इनको जोड गुणित संख्यामें मिलाया १८९ रवि (१२) से शेष किया शेष ९ शयनादिगणनासे पाचवीं गमनावस्था सूर्यकी हुई. पुनः प्रसिद्धनाम गुणानन्द आद्याक्षरोत्तरवर्ती स्वर उकारके अधो पंक्तिमें संख्या ३ पूर्वागतशेष ९ से शेष ९ गुनदिया २९ स्वरांक ३ जोडके २८ पुनः १२से शेष किया शेष ४ सूर्यक्षेपक ५ जोडनेसे ९ तीन ३ से शेष किया शेष० रहा. इससे सूर्यकी गमनावस्थामें विचेष्टा-अवस्था हुई एवं प्रकारसे चन्द्रमाकी उपवेशावस्थामें विचेष्टा, मंगल प्रकाशमें विचेष्टा, बुध आगममें दृष्टि, बृहस्पति नृत्यलिप्सामें विचेष्टा शुक्र प्रकाशमें दृष्टि, शनि गमनमें विचेष्टा, राहु निद्रामें दृष्टि, केतु सभामें चेष्टा ॥

अथावस्थाफलानि ।

त्रिकोणे वा कर्मण्यपि नयनपाणौ दिनमणेः फलं
शस्तं ज्ञेयं मदनसदने नन्दनपदे॥ प्रकाशे मार्तण्डे
मृतिपदमपत्यं जनिमतां तथा जाया याति व्यय-
मदनमाने च जनने ॥ १ ॥ पुण्यबाधाकरः पुण्यभे
भोजने कौतुके वैरिभे वैरिहन्ता रविः॥सप्तमे पंच

मे तत्रगो वा भवेदंगनापुत्रहा लिंगरोगप्रदः॥२॥

अब अवस्थाओंके फल कहते हैं प्रथम सूर्यके फल हैं कि, सूर्य त्रिकोण ५।९।वा १० भावमें नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो शुभ फल देताहै, जो ७।५ भावमें प्रकाशावस्थामें हो तो जन्मियोंके पुत्रहानि होवै तथा स्त्रीहानि हो, ऐसेही फल १२।७।१० स्थानोंमें भी उक्त अवस्थाके जन्ममें जानना, यदि ९ भावमें भोजना अवस्थामें हो तो पुण्यमें बाधा डालता है, कौतुका अवस्थामें छठा हो तो वैरिहन्ता होताहै, यदि इसी अवस्थामें ७।५ भावमें हो तो स्त्रीपुत्र हानि और लिंगमें रोग करता है॥ १॥ २॥

चंद्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम्॥
अशुभं कृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः॥ ३॥

चंद्रमाके बारहों अवस्थाओंका फल शुक्लपक्षमें शुभ कृष्णपक्षमें अशुभ सर्वत्र उत्तम ज्योतिषियोंने जानना॥ ३॥

मदननंदनगोऽवनिनंदनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयम्॥
प्रथमतः कुरुते रिपुणोक्षितो रिपुगृहे करभंगमनंगतः॥४॥
यदि युतः शनिनापि च राहुणा शिरसि रोगकरो धरणीसुतः॥ तनुगतः शयने नयने गदं वितनुते नितरां क्षतमंगिनाम्॥ ५॥ अंगारकोंगे यदि नेत्रपाणौ करोत्यनंगातिशयेन भंगम्॥ भुजंगदंतक्षतपावकांबुभयं नगे हानिमिहांगनायाः॥ ६॥ प्रकाशने पंचमसप्तमस्थः सुतं निहंत्याशु निहंति वामाम्॥ पापान्वितः पापखगांतराले कुकर्मिणां केतुवरं करोति॥ ७॥

मंगलके अवस्थाफल ये हैं कि, भौम शयनावस्थामें सप्तम

भावमें हो तो स्त्रीहानि, पंचम हो तो पुत्रहानि करता है; यदि शत्रु-भावमें शत्रुदृष्ट उक्त अवस्थामें हो तो कामदेवव्याजसे हाथ टूट जावे ॥ ४ ॥ यदि शनिसे वा राहुसे युक्तभी हो तो शिरमें रोग करताहै, तथा निरंतर शरीरियोंको हानिही देताहै ॥५॥ यदि मंगल लग्नका नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो कामदेवके संबंधी कार्यसे शरीरके अंगभंग करताहै. सर्पभय, दंतरोग, घाव, अग्नि, जलकी भय होवें स्त्री आदिगृहस्थका सुख न होवे ॥६॥ यदि प्रकाशावस्थामें ५।७ भावमें हो तो पुत्रस्त्रीकी हानि करता है, यहां पंचममें पुत्र सप्तममें स्त्रीहानि जानना। यदि पापयुक्त, पापग्रहोंके बीचभी हो तो कुकर्मियोंमें श्रेष्ठ "पापध्वज" पापियोंमें श्रेष्ठ ध्वजा जैसा करताहै॥७॥

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः ॥
सभायामेव कन्यानामाधिक्यं मदने सुते ॥ ८ ॥

बुध नेत्रपाणि अवस्थामें पंचम हो तो पुत्रोंकी हानि और कन्याकी उत्पत्ति होवे यदि सभावस्थामें प्राप्त होकर सप्तमपञ्चम भावोंमें हो तो कन्या बहुत, पुत्र थोडे होवें ॥ ८ ॥

भवति देवगुरौ यदि भोजने तनुगते मनुजो हि
धनुर्द्धरः ॥ नवमपंचमभे धनवर्जितो भवति पाप-
युते विसुतो नरः ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें लग्नका हो तो मनुष्य धनुषधारी होवे यदि उक्त अवस्थामें ९।५ भावमें हो तो धनरहित, और पापयुक्त भी हो तो पुत्ररहित होवे ॥ ९ ॥

तनुगृहे मदने दशमे सितो नयनपाणिगतो यदि
जन्मनि ॥ शुभमतीव फलं तनुते बलं दशनभंग-
मनंगविवर्धनम् ॥ १० ॥

यदि जन्मकालमें शुक्र १।७।१० भावोंमें नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो अतीव शुभफल देताहै बलवान् करताहै परंतु दांतोंका भंग और कामदेवकी वृद्धिभी करता है ॥ १० ॥

यत्र कुत्र स्थितो मंदो जन्मकाले विशेषतः ॥
अवस्थानामसदृशं वितनोति शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

जन्मकालमें जिसकिसी भावमें स्थित शनि जिस अवस्थामें प्राप्तहो उस अवस्थाके नामसदृश शुभाशुभ फल विशेष करके देताहै ॥ ११ ॥

नवमे मदने वापि राहुराहुरिहांगिनाम् ॥ महांतो निद्रितो ऽवश्यं पुण्यक्षेत्रनिवासिताम् ॥ १२॥ द्वितीये द्वादशे वापि लाभे वा सिंहिकासुते॥वसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत् ॥ १३ ॥ निजक्षेत्रे तुंगे कविकुजगृहे मित्रभवने स्ववर्गे सद्वर्गे तमसि शयने जन्मसमये ॥ फलं पूर्णं प्राहुः कथितभवनादन्यभवने तदा दुष्टप्रांचस्तदिह शिखिनो राहुवदिदम् ॥ १४ ॥

जिन शरीरियोंके राहु ९।७ भावोंमें निद्रावस्थामें हो तो उनको अवश्य पुण्य क्षेत्रमें निवास मिले यह बडे आचार्य कहते हैं। यदि राहु शयनावस्थामें २।१२।११ भावोंमें हो तो वह मनुष्य निर्द्धन रहकर पृथ्वीमें भ्रमण करै ॥ राहु यदि अपनी राशि । ६ अपने उच्च ३ अथवा शुक्रके गृह २ । ७ या मंगलकी राशिमें १।८ में हो अथवा मित्र राशिमें हो यद्वा अपने वा मित्रके अंशादियोंमें शयनावस्थाका जन्मकालमें हो तो फल पूर्ण देताहै उक्त भवनोंसे अन्य गृहोंमें हो तो दुष्ट जनोंका पूज्य होवे राहुके समान केतुका भी फल जानना ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ विशेषफलानि ।

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडितः॥तदा जाया-
विनाशः स्याच्छुभयोगेक्षणान्नहि ॥ १५ ॥ निद्रितो
रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे ॥ भार्या विनश्यति
क्षिप्रं विधिना रक्षितापि चेत् ॥ १६ ॥ शुभयोगेक्षणा-
देका विनश्यति परानहि ॥ शुभाशुभदृशा भार्या
कष्टयुक्ता नृणां भवेत् ॥ १७ ॥

विशेषफल अवस्थाओंके कहते हैं-कि, यदि कोई पापग्रह निद्रा अवस्थामें प्राप्तसप्तमस्थानमें पापपीडित हो तो स्त्रीनाश होवे, यदि उसपर शुभग्रहकी दृष्टि हो वा शुभग्रहसे युक्त हो तो स्त्री कष्ट भोगकर बचजायगी ॥ १५ ॥ निद्राअवस्थावाला कोईभी ग्रह छठे भावमें शत्रुग्रहसहित वा उससे दृष्ट हो- अथवा ऐसाही सप्तम स्थानमें हो तो शीघ्रही स्त्री नष्ट होवे यदि विधाताभी रक्षा करने आवें तौ भी नहीं रहै ॥ १६ ॥ यदि ऐसे ग्रह शुभयुक्त हों या उन पर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो एक स्त्री मरे दूसरीसे गृहस्थसुख होवे यदि शुभ पाप दोनहूंसे दृष्ट वा युक्त हों तो स्त्री कष्टयुक्त रहै ॥ १७ ॥

पुत्रसुखयोगः ।

अपत्यभावे यदि तुंगगेहे निजालये पापयुतोक्षित-
श्चेत् ॥ निद्रागतोपत्यविनाशकारी शुभेक्षितश्चैक-
सुतस्य हंता ॥ १८ ॥

यदि कोई ग्रहपंचमभावमें अपने उच्च वा अपनी राशिका होकर निद्राअवस्थामें हो तथा पापग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो तो संतानक

नाश करता है उस ग्रहपर शुभ ग्रहकीभी दृष्टि हो तो एक पुत्रकी हानि करता है औरकी नहीं ॥ १८ ॥

अपमृत्युयोगः ।

राहुणा सहितौ यस्य विधनस्थौ कुजार्कजौ ॥
अपमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥ १९ ॥
निधनेपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः ॥
तदा मृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात् ॥ २० ॥

जिसके अष्टमस्थानमें राहुसहित मंगल शनि हों इनमेंसे कोई निद्रावस्थामें हो तो उसकी अपमृत्यु शस्त्रके कटनेसे होवे, इसमें संदेह नहीं ॥ १९ ॥ जिसके अष्टमभावमें शुभग्रहभी पाप अथवा शत्रुग्रहसे दृष्ट वा युक्त हो तो उसका मृत्यु संग्राममें शस्त्रसे होवे (यहांभी संबंधसे निद्रावस्था विचारणीय है) ॥ २० ॥

अथारिकृततीर्थकृतमृत्युयोगौ ।

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः शयानो वा मृत्युं व्रजति रिपुकोपेन मनुजः ॥ शुभैर्दृष्टो युक्तो निजपतियुतो वांतसमये नरो गंगामेत्य व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥ २१ ॥

यदि कोई ग्रह पापयुक्त अष्टमस्थानमें निद्रावस्थामें या शयनावस्थामें हो तो शत्रुके कोपसे मृत्यु पावै और वही ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो अथवा अष्टमेश अष्टम हो तो मृत्यु समयमें वह मनुष्य गंगा पायकर विष्णुका सायुज्यपद (मुक्ति) पावे ॥ २१ ॥

अथ पुण्यक्षेत्रलाभयोगः ।

यदा पश्येदंगं तनुभवननाथोष्टमपतिर्मूर्तौ धर्माधी-

शो जनुषि च तपःस्थानमथवा ॥ शुभाभ्यामाक्रांतं नवमभवनं पापरहितं वरक्षेत्रं प्राप्य व्रजति मनुजो मोक्षपदवीम् ॥ २२ ॥

इति श्रीभावकुतूहले स्थानवशेनावस्थाफलकथनं नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नको, अष्टमेश अष्टमभावको और नवमेश नवम भावको देखे अथवा इनमेंसे एकभी अपने स्थानका देखनेवाला हो तथा दो शुभग्रहोंसे युक्त, पापोंसे रहित नवम हो तो मरणसमयमें उत्तम क्षेत्र (पुण्यस्थान) पायके मुक्तिपदको प्राप्त होवे ॥ २२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां स्थानवशावस्थाफलाऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलानि ।

तत्रादौ सूर्यस्य ।

मंदाग्निरोगो बहुधा नराणां स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्तकोपः ॥ व्रणं गुदे शूलमुरःप्रदेशे यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते ॥ १ ॥

शयनादि १२ अवस्थाओंके प्रत्येकके फल कहते हैं-कि यदि सूर्य शयनावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा मंदाग्नि (क्षुधामंद, पाचन शक्ति न्यून रहे) पैर स्थूल हों, पित्तका विशेषतः कोप रहै, गुदामें व्रण होवे हृदयमें शूल रहे ॥ १ ॥

दरिद्रताभारविहारशाली विवादविद्याभिरतो नरः स्यात् ॥ कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः सूर्ये यदा चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

जो सूर्य उपवेशनावस्थामें हो तो दरिद्री रहे, पराया भार ढोने-

वाला सर्वदा रहै, कलहही विद्या जाने और वह मनुष्य (कठोर-चित्त) निर्दयी होवे और वित्त उसकी नष्ट होवे ॥ २ ॥

नरः सदानंदधरो विवेकी परोपकारी बलवित्तयु-
क्तः ॥ महासुखी राजकृपाभिमानी दिवाधिनाथे
यदि नेत्रपाणौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका सूर्य्य नेत्रपाणि अवस्थामें हो वह सर्वदा आनंदमें रहे, विवेकवाला होवे, पराया उपकार करे,बलवान् एवं धनवान् रहे बडा सुखभोगता रहे, राजकृपासे अभिमानयुक्त रहे ॥ ३ ॥

उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता बहुपुण्य-
कर्त्ता ॥ महाबली सुंदररूपशाली प्रकाशने जन्म-
नि पद्मिनीशे ॥ ४ ॥

जिसके जन्ममें सूर्य प्रकाशनावस्थामें हो वह उदारचित्त (देनेवाला) होवे, धनसे परिपूर्ण (संपन्न) रहे, सभामें चातुर्य्यसहित वार्ता करे, बहुत पुण्य करे, बडा बलवान् होवे, सुन्दररूपवान् होवे ॥ ४ ॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली सदालसी धीधन-
वर्जितश्च ॥ भयातुरः कोपपरो विशेषाद्दिवाधि-
नाथे गमने मनुष्यः ॥ ५ ॥

यदि सूर्य गमनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य परदेश रहनेवाला होवे निश्चय सर्वदा अनेक दुःखोंसे युक्त रहै आलसी (निरुद्यमी) बुद्धि और धनसे रहित रहे, भयसे आतुर रहे, विशेषतासे होवे, कोप (गुस्सा) युक्त रहे ॥ ५ ॥

परदाररतो जनतारहितो बहुधाऽऽगमने गमना-

भिरुचिः॥ कृपणः खलताकुशलो मलिनो दिवसा-
धिपतौ मनुजः कुमतिः ॥ ६ ॥

सूर्य जिसके जन्ममें आगमनावस्थामें हो वह पराई स्त्रियोंमें तत्पर रहै, बहुत मनुष्योंकी संगतिसे रहित (अकेला) रहे, बाहुल्यसे गमन (सफर) की इच्छा किया करे, कृपण (मूंजी) होवै, दुष्टतामें निपुण और मलिनभी होवै ॥ ६ ॥

सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः सदाऽर्थरत्नपूरितो
दिवाकरे गुणाकरः ॥ वसुंधरानवांबरालयान्वितो महा-
बली विचित्रमित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका मित्रस्थानस्थित सूर्य सभावस्थामें हो वह पराये उपकार करनेमें तत्पर रहे, सर्वदा धन एवं रत्नोंसे भरा रहे, गुणोंकी खान होवै पृथ्वी (जमीन) का मालिक होवे, नवीन वस्त्र और घरोंसे युक्त रहे, बडा बलवान् होवै, अनेक प्रकारके मित्र रक्खे और उनका प्रिय होवे, और परम कृपाकी कला उसके हृदयमें जागृत रहे ॥ ७ ॥

क्षोभितो रिपुगणैः सदा नरश्चंचलः खलमतिः
कृशस्तथा ॥ धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चागमे
दिनपतौ यदा तदा ॥ ८ ॥

सूर्य जिसका आगमअवस्थामें हो वह शत्रुसे कंपायमान रहै, चंचल होवै, कुटिलबुद्धि, (दुष्टता करनेवाला) होवै, शरीर कृश रहै, धर्मकर्मसे रहित रहे मदसे उछलता रहे ॥ ८ ॥

सदांगसंधिवेदना परांगनाधनक्षयो बलक्षयः पदे
पदे यदा तदा हि भोजने॥ असत्यता शिरोव्यथा

तथा वृथान्नभोजनं रवावसत्कथारतिः कुमार्गगामिनी मतिः ॥ ९ ॥

सूर्य भोजनावस्थामें जिसका हो उसके सर्वदा शरीरकी सन्धियोंमें पीडा रहे,परस्त्रीके संसर्गसे धन एवं बलका क्षय पैर पैर पर हो असत्यवादी हो शिरमें रोग रहे, खायापिया व्यर्थ जावे, यद्वा अन्न पचे नहीं, अनिष्टवार्तामें रुचि रहे,कुमार्गचलनेकी बुद्धि होवे९॥

विज्ञलोकैः सदा मंडितः पंडितः काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वितः ॥ राजपूज्यो धरामंडले सर्वदा नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके ॥ १० ॥

जिसका सूर्य नृत्यलिप्सावस्थामें हो वह सर्वदा विद्या जानने वाले लोगोंसे शोभित रहे, पंडित होवे, काव्यविद्या में बडी वाचालु शक्ति होवे, राजासे पूजा (आदर) पावे, पृथ्वीमेंभी पूज्य होवे १०॥

सर्वदानन्दधर्ता जनो ज्ञानवान् यज्ञकर्ता धराधीशसद्मस्थितः ॥ पद्मबंधावरातीभपंचाननः काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके ॥ ११ ॥

सूर्य जिसका कौतुकावस्थामें हो वह सर्वदा प्रसन्नताको धारण करताहै, ज्ञानवान्, यज्ञ करनेवाला, राजद्वारमें रहनेवाला होवे, शत्रुरूपी हाथियोंके ऊपर सिंहसमान प्रतापी होवे, काव्यविद्यामें अतिवाक् शक्तिवाला मनुष्य होवे ॥ ११ ॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे ॥ रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य कलत्रहानिः कतिधार्थनाशः ॥ १२ ॥

जिसका सूर्य निद्रावस्थामें हो उसके नेत्र नींदसे भरेहुए रुधि-

रके समान लालरंगके रहें, विदेशमें निवास पावे और स्त्रीहानि एवं कितनेही बार धननाश होवे ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रस्य ।

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते ॥
मानी शीतप्रधानी च कामी वित्तविनाशकः ॥ १ ॥

जिसके जन्मसमयमें चन्द्रमा शयनावस्थामें हो वह मानी (इज्जतवाला) होवे, शरीरमें शीतप्रधान रहे, अतिकामी होवे, धनका नाश अपने हाथसे किसी व्यसनमें करे ॥ १ ॥

रोगार्दितो मन्दमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः ॥ अपायकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

जिसका चन्द्रमा उपवेशनावस्थामें हो वह रोगसे पीडित रहे, मन्द (जड) बुद्धि होवे, विशेषतः धनसे हीन रहे, कठोर स्वभाव होवे,पाराया नाश करे,पराया धन लुटानेवालाभी वह मनुष्य होवे२॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत् ॥
अनल्पजल्पको धूर्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥ ३ ॥

चन्द्रमा जिसका नेत्रपाणि अवस्थामें हो वह मनुष्य महारोगी (राजरोग आदि बडे रोगवाला) होवे, तथा बहुत वाचाल, धूर्त होवे और सर्वदा कुकर्मोंमें तत्पर रहे ॥ ३ ॥

यदा राकानाथे गतवति विकाशं च जनने विकाशः संसारे विमलगुणराशेरवनिपात् ॥ नवा शालामाला करितुरगलक्ष्म्या परिवृता विभूषायोषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम् ॥ ४ ॥

यदि जन्ममें चंद्रमा विकासावस्थामें हो तो मनुष्य संसारमें निर्मलगुणोंके समूहसे विकसित (प्रफुल्लित) रहै, तथा राजासे हाथी घोडे और धनोंसे, संयुक्त, नवीन मकानोंका समूह मिलैं एवं भूषण और स्त्रियोंसे नित्य सुख पावे तथा तीर्थ यात्रा करे ॥ ४ ॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत् ॥ सदाक्षिरोगैः परिपीडियमानो वलक्षपक्षे गमने भयातुरः ॥ ५ ॥

यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा गमनावस्थामें हो तो विशेषतः मनुष्य अतिक्रूर स्वभाववाला होवै सर्वदा नेत्ररोगसे पीडित रहे और शुक्लपक्षका हो तो सर्वदा भयातुर रहे ॥ ५ ॥

विधवागमने मानी पादरोगी नरो भवेत् ॥
गुप्तपापरतो दीनो मतितोषविवर्जितः ॥ ६ ॥

चंद्रमा आगमनावस्थामें हो तो मानी (इज्जत यद्वा गर्ववाला) होवै, पैरोंमें रोग रहे गुप्तपाप करनेमें तत्पर रहे, दुःखी होवै, बुद्धि और संतोषसे वर्जित रहे ॥ ६ ॥

सकलजनवदान्यो राजराजेंद्रमान्यो रतिपतिसमकांतिः शांतिकृत्कामिनीनाम् ॥ सपदि सदसि याते चारुबिंबे शशांके भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥ ७ ॥

पूर्ण चंद्रमा सभावस्थामें हो तो मनुष्य समस्त मनुष्योंमें वदान्य (चतुर) होवै, राजा तथा चक्रवर्तियोंका माननीय होवै, कामदेवके समान सुंदरकांति होवै, युवास्त्रियोंको कामक्रीडामें

शांति करनेवाला होवे, प्रेमकला जाननेवाला होवे, गुणोंको पहिचाने ॥ ७ ॥

विधवागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः ॥
कृष्णपक्षे द्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टतरो हठी ॥ ८ ॥

चंद्रमा आगमनावस्थामें हो तो अतिबोलनेवाला, धर्मसे परिपूर्ण होवे, यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा उक्त अवस्थामें हो तो दो स्त्री होवैं, रोगी रहे, अतिदुष्ट स्वभाव और हठ करनेवाला होवै॥८॥

भोजने जनुषि पूर्णचंद्रमा मानयानजनतासुखं नृणाम् ॥ आतनोति वनितासुतासुखं सर्वमेव न सितेतरे शुभम् ॥ ९ ॥

जिनको जन्मकालमें पूर्णमंडल चंद्रमा भोजनावस्थामें हो वह मानवाला होवे, सवारी तथा मनुष्योंका सुख पावे, तथा स्त्रीसुख कन्यासुख भी होवै, और कृष्णपक्षमें नहीं होते ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते चंद्रे सबले बलवान्नरः ॥
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत् ॥ १० ॥

बली चंद्रमा नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् होवै गीत (गायन) जाने, शृंगारादिरसोंको जाने और कृष्णपक्षका चन्द्रमा हो तो पापकरनेवाला होवे ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति चंद्रे भवति नृपत्वं वा धनपत्वम् ॥
कामकलासु सदा कुशलत्वं वारवधूरतिरमणपटुत्वम् ११

चंद्रमा कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य राजा होवे; अथवा धनका मालिक होवे और कामकला (रतिक्रीडामें) सर्वदा चातुर्य रक्खे, वारांगनाओंके साथ रतिक्रीडामें चातुर्य पावे ॥ ११ ॥

निद्रागते जन्मनि मानवानां कलाधरे जीवयुते महत्त्वम् ॥ यदाऽगुणाः संचितवित्तनाशः शिवालये रौति विचित्रमुच्चैः॥ १२ ॥

यदि मनुष्योंके जन्मसमयमें पूर्ण चन्द्रमा बृहस्पतियुक्त निद्रावस्थामें हो तो महत्त्व (बडप्पन) पावे, कृष्णपक्षका हो तो गुण औगुण होवें, संचय कियेहुए धनादिका नाश होवे दुःखसे शिवालय (शिवमंदिर) में अनेक प्रकारके स्वरोंसे ऊंचा रोदन करे यद्वा उसके गृहमें स्यार अनेक प्रकारके स्वरोंसे ऊंचा रोदन करें अर्थात् शोक, दरिद्रसे ग्रस्त होवे ॥ १२ ॥

अथ भौमस्य फलम् ।

शयने वसुधापुत्रे जन्मकाले जनो भवेत् ॥
बहुना कंडुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥ १ ॥

जन्म समयमें मंगल जिसका शयनावस्थामें हो उसके अंगोंमें बहुतसी कण्डू (खुजली) रहाकरे, विशेषतः (दद्रु) दादभी होवे॥१॥

बली सदा पापरतो नरः स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः॥ धनेन पूर्णो निजधर्महीनो धरासुते चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

मंगल उपवेशनाअवस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् होवे सर्वदा पापकर्ममें तत्पर, झूठ बोलनेवाला, निरंतर वाग्वादचतुर, धनसे परिपूर्ण, स्वधर्मसे हीन होवे ॥ २ ॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते ॥
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता ॥ ३ ॥

---

१ यदाऽङ्गनासंचितवित्तनाशः इ० पा० । स्त्रीका नाश और सञ्चित धनका नाश होवे ।

यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्थाके लग्नमें हो तो मनुष्योंको स
दरिद्रता रहे, अन्य भावमें हो तो नगरके स्वामी होवें ॥ ३ ॥

प्रकाशो गुणस्य प्रवासः प्रकाशे धराधीशभर्तुः
सदा मानवृद्धिः ॥ सुते भूसुते पुत्रकान्तावियोगो-
युते राहुणा दारुणो वा निपातः ॥ ४ ॥

मंगल प्रकाशावस्थामें हो तो गुणका प्रकाश होवे, परदे
नित्य निवास होवे, राजासे सर्वदा मान बढतारहे, यदि उक्त अ
स्थाका मंगल पंचमभावमें हो तो स्त्री, पुत्रका वियोग (बिछो
पावे, यदि उसके साथ राहुभी हो तो वृक्षादिसे गिरपडे ॥ ४

गमने गमनं कुरुतेऽनुदिनं व्रणजालभयं वनिता-
कलहम् ॥ बहुदद्रुककंडुभयं बहुधा वसुधात-
नयो वसुहानिमरेः ॥ ५ ॥

मंगल गमनावस्थामें हो तो प्रतिदिन गमन (सफर) करत
अनेक प्रकारके व्रणका भय, स्त्रीकलह करता है और दाद, खु
लीको भी बहुत करता है शत्रुसे धनहानि होती है ॥ ५ ॥

आगमने गुणशाली मणिमाली करालकरवाली ॥
गजगंता रिपुहंता परिजनसंतापहारको भौमे ॥६॥

मंगल आगमनावस्थाम हो तो पुरुष अनेक गुणोंसे युक्तहो म
योंकी माला पहिने, तीक्ष्ण खड्गोंको धारण करनेवाला हो, हाथी
सवारी करे, शत्रुको मारे, आत्मीय जनोंका सन्ताप हरण क
वाला होवे ॥ ६ ॥

तुंगे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः
कोणे भूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान्॥

१ करः इ० पा० ।

अंतेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगेऽवश्यं
राजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः ॥ ७ ॥

उच्चराशिका मंगल सभावस्थामें हो तो युद्धविद्याकी समस्त
युक्ति जाने, तथा धर्मका ध्वज अर्थात् बडा धर्मात्मा और धनवान्
(धनका स्वामी) होवे, यदि ९।५ स्थानमें हो तो पुरुष विद्याहीन
(मूर्ख) होवे, बारहवें स्थानमें हो तो स्त्री, पुत्र, मित्रोंसे रहित रहे,
उक्तस्थानोंसे अन्यमें हो तो अवश्य राजाके सभाका पंडित होवे,
तथा बहुत धनवान्, मानवाला, दानी भी होवे ॥ ७ ॥

आगमे भवति भूमिजे जनो धर्मकर्मरहितो गदातुरः ॥
कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेव कातरमतिः कुसंगमी ॥ ८ ॥

मंगल आगमावस्थामें हो तो धर्म कर्मसे रहित, रोगसे आतुर
रहे, कानके नीचे बडा शूलरोग रहे, कायर तथा कुसंगी होवे ॥८॥

भोजने मिष्टभोजी च जनने सबले कुजे ॥
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥ ९ ॥

जन्ममें बलवान् मंगल भोजनावस्थामें हो तो मिष्टान्न खाने-
वाला होवे, तथा सर्वदा नीचकर्म करे,मान (अहंकार वा इज्जत)
से रहित रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिनामिंदिराराशिरा-
याति भूमीपतेः ॥ स्वर्णरत्नप्रवालैः सदा मंडिता
वासशाला विशाला नराणां भवेत् ॥ १० ॥

मंगल नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्योंको राजासे बहुत
लक्ष्मी (धन) आवे तथा रहनेका गृह सर्वदा सोना, रत्न, मूंगा
आदियोंसे शोभित और बहुत भारी होवे ॥ १० ॥

कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः ॥ उच्चगे नृपतिगेहपंडितो मंडितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥ ११ ॥

मंगल कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य खेल तमासा करनेवा वा उसमें प्रेम रखनेवाला होवे, मित्र, पुत्रोंसे परिपूर्ण रहे, य मंगल उच्चकाभी हो तो राजाके दर्बारका पंडित होवे और ब गुणवान् पंडित श्रेष्ठोंसे शोभित रहे ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः ॥
धूर्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीडितः ॥ १२ ॥

मंगल निद्रावस्थामें हो तो मनुष्य क्रोधी होवे, बुद्धि तथा धन वर्जित रहे, धूर्त होवे, धर्मसे भ्रष्ट रहे और रोगसे पीडित रहे ॥ १

अथ बुधावस्थाफलानि ।

क्षुधातुरो भवेदंगे खंजो गुंजानिभेक्षणः ॥
अन्यभे लंपटो धूर्तो मनुजः शयने बुधे ॥ १ ॥

बुध शयनावस्थामें लग्नका हो तो भूँखसे सर्वदा आतुर लँगडा होवे, नेत्र लाल गुंजाके समान होवें और उक्त अवस्था अन्यभावोंमें हो तो लंपट (लोभी) और धूर्तभी होवे ॥ १ ॥

शशांकपुत्रे जनुरंगगेहे यदोपवेशो गुणराशिपूर्णः ॥ पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः ॥ २ ॥

बुध जन्ममें लग्नका उपवेशावस्थामें हो तो समस्त गुणोंके स हसे पूरित रहे, पापदृष्ट अथवा पापयुक्त हो तो दरिद्री होवे, य मित्रराशि वा उच्चराशिमें हो तो मनुष्य धनसे सुखी रहे ॥ २

विद्याविवेकरहितो हिततोषहीनो मानी जनो भवति चंद्रसुतेऽक्षिपाणौ ॥ पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्यः ॥ ३ ॥

बुध नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य विद्या एवं विवेक (सदसज्ज्ञान) से रहित होवे, भलाई किसीकी न करै संतोषभी न रक्खे, गर्ववाला होवे, यदि उक्त बुध पंचमभावमें हो तो पुत्रऔर स्त्रीके सुखसे हीन रहे,कन्या संतति होवे,राजद्वारका पंडित तथा श्रेष्ठ होवे ३

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता विकाशने चंद्रसुते मनुष्यः ॥ अनेकविद्यार्णवपारगंता विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता ॥ ४ ॥

बुध विकाशावस्थामें हो तो मनुष्य दाता (देनेवाला) दयावान्, निश्चयसे पुण्य करनेवाला और अनेक विद्याओंके समुद्रके पार पहुँचनेवाला, विवेक से परिपूर्ण, दुष्टोंके गर्व (घमंड) का तोडनेवाला होवे ॥ ४ ॥

गमनागमने भवतो गमने बहुधा वसुधा वसुधाधिपतः ॥भवनं च विचित्रमलं रमया विदि नुश्च जनुःसमये नितराम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बुध गमनावस्थामें हो उसको नित्य गमागम (जाना, आना) होता रहे, बहुतायत करके राजासे भूमि मिले, अनेक प्रकारकी शोभासे युक्त और लक्ष्मीसे पूर्ण गृह मिलै ॥ ५ ॥

सपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले सदसि धनसमृद्धिः सर्वदा पुण्यवृद्धिः ॥ धनपतिसमता वा भूपता मंत्रिता वा हरिहरपदभक्तिः सात्त्विकी मुक्तिरद्धा॥ ६ ॥

बुध जन्मकालका संभावस्थामें हो तो मनुष्योंको सर्वदा धनकी संपन्नता रहे, पुण्यकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे, धनमें कुबेर समानता पावे अथवा (राजत्व) हाकिमी मिले यद्वा (मंत्रिता)वजीरी मिले और विष्णु एवं शिवके चरणोंमें भक्ति हो और साक्षात् सात्त्विकी मुक्ति होवे ॥ ६ ॥

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा चंद्रजे भवति हीन-
सेवया ॥ अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता बालिका भव-
ति मानदायिका ॥ ७ ॥

यदि मनुष्योंके जन्ममें बुध आगमावस्थामें हो तो नीचजनकी सेवा करनेसे कार्यसिद्धि होवें तथा दो पुत्र होवें और एक कन्या अति सुलक्षणा सन्मान देनेवाली होवे ॥ ७ ॥

भोजने चंद्रजे जन्मकाले यदा जन्मिनामर्थहानिः
सदा वादतः ॥ राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मतेरं-
गसंगा न जाया न मायाः सुखम् ॥ ८ ॥

बुध भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्योंकी सर्वदा विवाद (कलह) से धनहानि होवे, राजाके भयसे कृशता (माडापन) आवै, बुद्धि चंचल रहे, (स्थिर न रहे) तथा स्त्रीका सुख और धनका सुख भी न होवे ॥ ८ ॥

नृत्यलिप्सागते चंद्रजे मानवो मानयानप्रवालव्र-
जैः संयुतः ॥ मित्रपुत्रप्रतापैः सभापंडितः पापभे
वारवामारतो लम्पटः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मसमयमें बुध नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्य (मान) इज्जत,सवारी, मूँगा आदि रत्नसमूहसे युक्त रहे.तथा मित्र,पुत्र,संयुक्त रहे, प्रतापवान् होवे, सभामें (पंडित) चतुर होवे

(यदि पाप राशि) में हो तो वारांगना (पतुरिया) के साथ रति-क्रीडामें लंपट (व्यसनी) होवे ॥ ९ ॥

कौतुके चंद्रजे जन्मकाले नृणामंगभे गीतविद्यानवद्या भवेत् ॥ सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥ १० ॥

जिन मनुष्योंके जन्मकालमें बुध कौतुकावस्थामें लग्नका हो उनको प्रशंसा करने योग्य गायन विद्या आवे, यदि उक्त बुध ७। ८ भावमें हो तो वारांगनासे प्रीति होवे, नवमभावमें हो तो सारा जन्म पुण्य करते बीते अंतमें सद्गति (मुक्ति) होवे ॥ १० ॥

निद्राश्रिते चंद्रसुते न निद्रासुखं सदा व्याधिसमाधियोगः ॥ सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो निजेन वादो धनमाननाशः ॥ ११ ॥

बुध निद्रावस्थामें हो तो निद्राका सुख न पावे और सर्वदा शारीरिक तथा मानसिक व्यथासेयुक्त रहे, भ्रातृपक्षसे विकलता (चिंता) रहे, बडा संताप रहे, अपने मनुष्योंसे कलह होतारहै, धन एवं मानका नाश होवे ॥ ११ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम् ।

वचसामधिपे तु जनुःसमये शयने बलवानपि हीनरवः ॥ अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः सुतरामरिभीतियुतो मनुजः ॥ १ ॥

जन्म समयमें बृहस्पति शयनावस्थामें हो तो मनुष्य बलवान् हुयेमेंभी स्वरहीन (अल्प आवाजवाला) होवे, शरीर अति गौरवर्ण, ठोडी लंबी होवे, शत्रुका भय निरंतर बना रहे ॥ १ ॥

उपवेशं यदि गतवति जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः ॥
क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजंघास्यकरव्रणयुक्तः॥२॥

बृहस्पति यदि उपवेशावस्थामें हो तो बडा वाचाल, बडे गर्व (घमंड) से भरा होवे, तथा राजा और शत्रुसे सर्वदा संतापयुक्त रहे और पैर, जंघा, मुख, हाथोंमें व्रण (घाव) रहा करें ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ गते देवराजार्चिते रोगयुक्तो वियुक्तो वरार्थश्रिया ॥ गीतनृत्याप्रियः कामुकः सर्वदा गौरवर्णो विवर्णोद्भवप्रीतियुक् ॥ ३ ॥

बृहस्पति नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो मनुष्य रोगयुक्त रहे, श्रेष्ठ धन, एवं शोभासे रहित रहे,गीत, नाचको प्रियमाने सर्वदा अतिकामी रहे. गोरारंग शरीरका होवे, विवर्णोद्भव अर्थात् विजातीय मनुष्योंसे प्रीति रक्खे ॥ ३ ॥

गुणानामानंदं विमलसुखकंदं वितनुते सदा तेजःपुंजं व्रजपतिनिकुंजं प्रतिगमम् ॥ प्रकाशं चेदुच्चैर्द्भुतमुपगतो वासवगुरुर्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वं तनुभृताम् ॥ ४ ॥

बृहस्पति प्रकाशावस्थामें हो तो मनुष्यको गुणोंके आनंदवाला, निर्मल सुखका भाजन करताहै, सर्वदा तेजपुंजके सदृश बनाये रहताहै, श्रीकृष्णके समान कुंज (वन उपवनोंमें) विहार करताहै अथवा भक्तिसे भगवान्‌के भवनमें प्राप्त होताहै. समस्त लोकोंमें श्रेष्ठता पाताहै. समृद्धिमें कुबेरके समान होताहै.इतने पूर्ण फल मनुष्योंको बृहस्पतिके प्रकाशावस्था उच्चादिमें प्राप्त होनेमें होते हैं ॥ ४ ॥

साहसी भवति मानवः सदा मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा ॥ पंडितो विविधवित्तमंडितो वेदविद्यदि गुरौ गमं गते ॥ ५ ॥

बृहस्पति गमनावस्थामें हो तो मनुष्य सर्वदा साहसी तथा मित्र, पुत्र सुखसे परिपूर्ण रहे, पंडित होवे अनेक प्रकारके धनोंसे शोभित रहे और वेदको जाने ॥ ५ ॥

आगमने जनता वरजाया यस्य जनुःसमये हरि-माया ॥ मुंचति नालमिहालयमद्धा देवगुरा पारतः परिबद्धा ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म समयमें बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो उसके बहुत मनुष्य रहें, स्त्री श्रेष्ठ मिले, उसके घरको साक्षात् लक्ष्मी कदापि न छोडे चारों ओरसे बँधी हुई जैसी रहे ॥ ६ ॥

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः ॥ गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्ये जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवः स्यात् ॥७॥

बृहस्पति जन्ममें सभावस्थामें हो तो बृहस्पतिके समान शास्त्र-वक्ता पंडित होवे, शुभ्र (श्वेत) मोतियोंसे युक्त रहे. धन, मणि, सवारी, आदियोंसे सर्वदा परिपूर्ण रहे. हाथी, घोडे, रथोंसे युक्त रहे और वह मनुष्य अनेक विद्याओंसे गर्वित (भराहुआ) रहे ॥७॥

नानावाहनमानयानपटलीसौख्यं गुरावागमे भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ॥ क्षोणीपालसमानतानवरतं चातिवहृद्या मतिः काव्यानंदरतिः सदा हितगतिः सर्वत्र मानोन्नतिः॥८॥

बृहस्पति आगमावस्थामें हो तो अनेक प्रकारके वाहन (हाथी, घोडे,रथ आदि) मानऔर यान (पालकी आदियों) के समूहका सुख होवे, तथा सेवक (नौकर) पुत्र, स्त्री, मित्रोंका सुख मिले, दोषरहित विद्या आवे, राजाके समान ऐश्वर्यमें सर्वदा रहे, अतिरमणीय बुद्धि होवे, काव्यरसके आनंदमें प्रेम रहे, सर्वदा हितकारी चाल रहे, सर्वत्र मानकी उन्नति होती रहे ॥ ८ ॥

भोजने भवति देवता गुरौ यस्य तस्य सततं सुभो-
जनम् ॥ नैव मुंचति रमालयं तदा वाजिवारणर-
थैश्चमांडितम् ॥ ९ ॥

बृहस्पति भोजनावस्थामें जिसके हो उसको उत्तम पदार्थ भोजनको मिलते रहें तथा उसके घोडे, हाथी रथोंसे युक्त घरको लक्ष्मी कदापि न छोडे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राजमानी धनी देवताधीशवंद्ये
सदा धर्मवित् ॥ तंत्रविज्ञो बुधैर्मंडितः पंडितः
शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥ १० ॥

बृहस्पति नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो मनुष्य राजमानवाला, धन-वान्, सर्वदा धर्म जाननेवाला, तंत्रशास्त्र, वा युक्तियाँ जानने-वाला, पंडितोंसे युक्त रहे, आपभी पंडित होवे (शब्दविद्या) व्याकरणादिमें निपुण तत्काल उपस्थितिवाला होवे ॥ १० ॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनः सदा निजान्व-
याब्जभास्करः कृपाकलाधरः सुखी॥निर्लिपराज-
पूजिते सुतेन भूनयेन वा युतो महाबली धरा-
धिपेन्द्रसद्मपंडितः ॥ ११ ॥

बृहस्पति कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य खेल तमासा करने

वाला होवे यदि पापराशिवाला होवे, सर्वदा बडे धनसे युक्त रहे, अपने वंशरूपी कमलके विकाशनमें सूर्य सदृश होवे, कृपाकला (दया) को धारण करनेवाला होवे, सर्वदा सुखी रहे, नम्र पुत्र, भूमि और नीतिसे युक्त होवे बड़ा बलवान् शरीर होवे, राजद्वारका पण्डित होवे ॥ ११ ॥

गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि ॥
दरिद्रता परिक्रांतं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ १२ ॥

जिसका बृहस्पति निद्रावस्थामें हो तो उसको समस्त कामोंमें मूर्खता आवे, दरिद्रतासे दबारहे. पुण्यभी उसके घरमें न रहे॥१२॥

अथ शुक्रस्यावस्थाफलम्।

जनो बलीयानपि दंतरोगी भृगौ महारोषसमन्वितः
स्यात् ॥ धनेन हीनः शयनं प्रयाते वारांगनासंग-
मलंपटश्च ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र शयनावस्थामें हो वह मनुष्य बलवान् होनेपरभी दन्तरोगी बडे क्रोध (गुस्सा) वाला, तथा धनसे रहित रहे और वारांगनाओं (वेश्याओं) के संग करनेमें लंपट (व्यसनी) होवे ॥ १ ॥

यदि भवेदुशना उपवेशने नवमणिव्रजकांचनभू-
षणैः ॥ सुखमजस्रमरिक्षय आदरादवनिपादपि
मानसमुन्नतिः ॥ २ ॥

यदि शुक्र उपवेशनावस्थामें हो तो नवीन मणियोंके समूह एवं सुवर्णके भूषणोंसे सौख्य अनवरत रहे, शत्रुओंका क्षय होवे, राजासेभी आदरपूर्वक मानकी उन्नति होवे ॥ २ ॥

नेत्रपाणि गते लग्नगेहे कवौ सप्तमे मानभे यस्य

तस्य ध्रुवम् ॥ नेत्रपातो धनानामलं चान्यभे वा-
सशाला विशाला भवेत्सर्वदा ॥ ३ ॥

यदि शुक्र नेत्रपाणिअवस्थामें लग्न, सप्तम, दशममें हो तो उस मनुष्यका नेत्र गिरे तथा निश्चय धनभी क्षय होवे, यदि अन्य भावोंमें हो तो उसके निवासका गृह बहुत बडा सर्वदा रहे ॥ ३ ॥

स्वालये तुंगभे मित्रभे भार्गवे तुंगमातंगलीला-
कलापी जनः ॥ भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते का-
व्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥ ४ ॥

प्रकाशावस्थाका शुक्र जिस मनुष्यके स्वराशि २।७ उच्चराशि १२ अथवा मित्रराशिमें हो वह उन्मत्त हाथियोंकी लीला (क्रीडा) का प्रेमी होवे, तथा राजाके समान ऐश्वर्यवान् होवै, काव्यविद्या शृङ्गारआदि कलाओंमें निपुण, और गायन जाननेवाला होवे ॥ ४ ॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति ॥
अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥ ५ ॥

जिसके जन्ममें शुक्र गमनावस्थामें हो उसकी माता शीघ्रही मरजाती है. तथा शत्रुके भयसे कभी अपने मनुष्योंमें रहे कभी उनसे पृथक् होना पड़े ॥ ५ ॥

आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः ॥
स तु तीर्थभ्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च ॥६॥

शुक्र आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य बहुत धनका स्वामी होवै, तथा तीर्थयात्रा करनेवाला, नित्य उत्साही (उद्यमी) होवै और हाथ पैरोंमें रोगभी रहे ॥ ६ ॥

अनायासेनालं सपदि महसा याति सहसा प्रग-

ल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ ॥ सभा-
यामायाते रिपुनिवहहन्ता धनपतेः समत्वं वा दंता-
वलतुरगगंता नरवरः ॥ ७ ॥

यदि शुक्र सभावस्थामें हो तो अकस्मात् शीघ्र विना परिश्रम स्वतेजसे राजाकी सभामें प्रगल्भत्व चतुराईको प्राप्त कर गुणोंका जाननेवाला होवे तथा शत्रुके समूहको मारनेवाला होवे, धनमें कुबेर-की तुल्यता रक्खे, अथवा हाथी, घोड़ोंकी सवारीमें चलनेवाला, मनुष्योंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ७ ॥

आगमे भार्गवे नागमो जन्मिनामर्थराशेरराते-
तीवक्षतिः॥पुत्रपातो निपातो जनानामपि व्याधि-
भीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ ८ ॥

शुक्र आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको धनका आगम न होवे अर्थात् दरिद्री रहे, शत्रुसे बहुत हानि होवे. पुत्र तथा स्वजनोंका नाश होवे, रोगका भय रहे, और स्त्रीके भोगकी हानि होवे ॥८॥

क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्यादनेकधारातिभ-
यार्दितश्च ॥ कवौ यदा भोजनगे युवत्या महा-
धनी पंडितमंडितश्च ॥ ९ ॥

शुक्र भोजनावस्थामें हो तो क्षुधासे सर्वदा आतुर रहे अर्थात् भूखसहन न करसके, रोगसे पीडित रहे, अनेक प्रकार शत्रुके भय-से दुःखी रहे, स्त्रीसहित यद्वा स्त्रीके प्रतापसे बडा धनवान् होवे, पंडित जनोंसे सुशोभित रहे ॥ ९ ॥

काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः सर्वदा नृत्यालि-
प्सां गते भार्गवे ॥ शंखवीणामृदंगादिगानध्वनि-
व्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥ १० ॥

शुक्र नृत्यलिप्सावस्थामें हो तो प्रशंसनीय काव्यविद्या औ
बुद्धि सर्वदा मनोहर (रमणीय) रहे, शंख, बीणा, मृदंग आ
बाजे एवं गायनकी ध्वनि (शब्दों) में निपुणता होवे, धन इसक
सर्वदा बढताही रहे ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति शुक्रे शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वम् ।
हृद्या विद्या भवति च पुंसः पद्मा निवसति पद्मोदरतः ११

शुक्र कौतुकावस्थामें हो तो इंद्रके समान ऐश्वर्य, पृथ्वी
श्रेष्ठत्व पावे, सभामें बडप्पन मिले, तथा उस पुरुषको रमणी
विद्या होवे और लक्ष्मी आदरपूर्वक कमलका वास छोडक
उस मनुष्यके घरमें निवास करे ॥ ११ ॥

परसेवारतो नित्यं निद्रामुपगते कवौ ॥
परनिंदापरो वीरो वाचालो भ्रमते महीम् ॥ १२ ॥

निद्रावस्थामें शुक्र हो तो सर्वदा पराया सेवक रहे, पराई निं
करनेमें तत्पर होवे वीरता रक्खे वाचाल (अति बोलनेवाला
होवे तथा सारी पृथ्वीमें फिरता रहे ॥ १२ ॥

अथ शनेः प्रत्यवस्थाफलानि ।

क्षुत्पिपासापरिक्रांतो विश्रांतः शयने शनौ ॥
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥ १ ॥

शनि जिसका शयनावस्थामें हो वह सर्वदा भूंख प्याससे दब
रहे तथा श्रमयुक्त रहे पहिली अवस्था (छोटी उमर) में रोगी रह
पीछे भाग्यवंतोंमें श्रेष्ठ होवै ॥ १ ॥

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे करालकारातिजना-
नुतप्तः ॥ अपायशाली खलु दद्रुमाली नरोभि-
मानी नृपदंडयुक्तः ॥ २ ॥

शनि उपवेशनमें हो तो बडे प्रचंड शत्रुजनोंसे संतप्त (दुःखी) रहे, सर्वथा धनादिका नाश करता है, तथा निश्चय है कि, उसके शरीरमें दद्रु (दाद) बहुत होवैं और वह मनुष्य बडा अभिमानी (घमंडखोर) होवे तथा राजासे दंड बारंबार पावे ॥ २ ॥

नयनपाणिगते रविनन्दने परमया रमया परया युतः ॥ नृपतितो हिततो मतितोषकृद्बहुकलाकलितो विमलोक्तिकृत् ॥ ३ ॥

शनि नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो उत्कृष्ट अन्यकी लक्ष्मीसे युक्त रहे, राजासे प्रेमपूर्वक प्रसन्नता पावे, अनेक कला (विद्या वा तरकीबें) जाने, निर्मल वाणी बोले ॥ ३ ॥

नानागुणग्रामधनाधिशाली सदा नरो बुद्धिविनोद-माली ॥ प्रकाशने भानुसुते सुभानुः कृपानुरक्तो हरपादभक्तः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका शनि प्रकाशावस्थामें हो वह अनेक प्रकारके गुणोंके समूहको जाने, कुछ ग्राम (गांव) तथा धन उसके अधी-नतामें रहें, सर्वदा सुबुद्धिके विनोदवाला होवे, सुन्दरकांति होवे, दयावान् एवं श्रीभगवान्के चरणोंका भक्त रहे ॥ ४ ॥

महाधनी नंदननंदितः स्यादपापकारी रिपुभूमिहारी॥ गमे शनौ पंडितराजभावं धरापतेरायतने प्रयाति॥५॥

शनि गमावस्थामें हो तो महाधनी होवे पुत्रोंके हर्षसे हर्षित रहे, पुण्य करनेवाला होवे शत्रुका नाश करे तथा उनकी भूमिहरण करे, पंडितों (चतुरों) में राजा-(श्रेष्ठ) भाव पायके राजाके दरबारमें जावे५

आगमने पदगदभययुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन विसु-

—

त्तः॥भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं दीनमना विजना-
श्रयभावम् ॥ ६ ॥

शनि आगमावस्थामें जिसके हो वह पैरोंके रोगके भयसे यु
रहे. पुत्र,स्त्रीके सुखसे हीन रहे,दीन (दुःखी) मन करके एकान्
स्थानका सेवन करे और पृथ्वीमें घूमता फिरे ॥ ६ ॥

रत्नावलीकांचनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं व्रजति
प्रमोदम् ॥ सभागते भानुसुते नितांतं नयेन पूर्णो
मनुजो महौजाः ॥ ७ ॥

शनि सभावस्थामें हो तो रत्नोंकी पंक्ति (लड़ियाँ) सुवर्
मोतियोंके समूहोंसे सर्वदा आनंदित रहे, तथा सभी समयमें मनुष्
नीतिसे परिपूर्ण होवे, तथा बडा तेजस्वी होवे ॥ ७ ॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबंधुतनये यदा
तदा ॥ मन्दमेव गमनं धरातले याचनाविरहिता
मतिः सदा ॥ ८ ॥

यदि शनि आगमावस्थामें हो तो मनुष्योंको वारंवार रोग हो
रहें, मन्दगति (ढीलीचाल चले) तथा संसारमें सर्वदा उसक
बुद्धि याचना (माँगना) से रहित रहे ॥ ८ ॥

संगते जनुषि भानुनन्दने भोजने भवति भोजनं
रसैः ॥ संयुतं नयनमन्दताऽज्ञता मोहतापपरिता-
पिता मतिः ॥ ९ ॥

शनि भोजनावस्थामें जन्मकालका हो तो मनुष्यको भोज
उत्तम षड्रसोंसे संयुक्त मिलें, नेत्रोंकी दृष्टि मन्द (अल्प) होवे
अज्ञान एवं मोहरूप तापोंसे संतप्त बुद्धि रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते मंदे धर्मात्मा वित्तपूरितः ॥
राजपूज्यो नरो धीरो महावीरो रणांगणे ॥ १० ॥

शनि जिसका नृत्यलिप्साअवस्थामें हो वह धर्मात्मा तथा धनसे परिपूर्ण होवै, राजासे पूजा (आदर) पावै, बडा धैर्यवान् होवै और रणभूमिमें बडी वीरता करनेवाला होवै ॥ १० ॥

भवति कौतुकभावमुपागते रविसुते वसुधावसुपूरितः ॥ अतिसुखी सुमुखीसुखपूरितः कवितयामलया कलया नरः ॥ ११ ॥

शनि कौतुकावस्थामें हो तो मनुष्य भूमि एवं धनसे संपन्न रहे, अतिसुखी होवै,सुरूपा स्त्रीके सुखसे पूर्ण रहे और निर्मल कविताकी कलासे पूर्ण रहे अर्थात् कविता जाने तथा कवितारसज्ञ होवै॥ ११॥

निद्रागते वासरनाथपुत्रे धनी सदा चारुगुणैरुपेतः ॥
पराक्रमी चंडविपक्षहंता सुवारकांतारतिरीतिविज्ञः १२॥

शनि निद्रा अवस्थामें हो तो मनुष्य सर्वदा धनवान् होवै, उत्तम गुणोंसे युक्त रहे, पराक्रम करनेवाला होवै, बडे प्रचंडशत्रुओंकोभी मारडाले, सुंदर वारांगनाओंके साथ रति(रमण)की विधि जाने १२

अथ राहोः प्रत्यवस्थाफलानि ॥

गदागमो जन्मनि यस्य राहौ क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते ॥ वृषेथ युग्मेपि च कन्यकायामजे समाजो धनधान्यराशेः ॥ १ ॥

जिसके जन्ममें राहु शयनावस्थामें हो उसको रोगकी प्राप्ति होवै और नानाप्रकारके क्लेश होवैं । यदि उक्त अवस्थाका राहु वृष, मिथुन, कन्या, मेषराशिमें हो तो अन्न, धनकी राशि (समुदाय) मिलते रहें ॥ १ ॥

उपवेशनमिह गतवति राहौ दद्रुगदेन जनः परि-
तप्तः ॥ राजसमाजयुतो बहुमानी वित्तसुखेन सदा
रहितः स्यात् ॥ २ ॥

जिसका राहु उपवेशनावस्थामें हो वह दद्रु (दाद) रोगसे संतप्त रहे, तथा राजाकी सभामें बैठनेवाला बडे मानवाला होवै, परंतु धनके सुखसे सर्वदा रहित रहे ॥ २ ॥

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीडिते ॥
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ॥ ३ ॥

राहु नेत्रपाणि अवस्थामें हो तो नेत्र सर्वदा रोगसे पीडितरहें और दुष्ट सर्प शत्रु, चोर, आदियोंका भय और धनका क्षय होवै३॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभा नृणां धनो
न्नतिर्गुणोन्नतिः सदा विदा मगाविह ॥ धराधिपा-
धिकारिता यशोलता तता भवेन्नवीननीरदाकृति-
र्विदेशतो महोन्नतिः ॥ ४ ॥

राहु प्रकाशनावस्थामें हो तो उत्तम स्थानमें स्थिति होवै, उत्तम यश मिलै धनकी उन्नति (वृद्धि) होवै, ऐसेही सद्गुणोंकी वृद्धि होवै सर्वदा पांडित्य, चातुर्यता होकर राज्याधिकारिता मिले,यश-रूपी लता बहुत फैले, नवीन मेघ (बादल) कीसी आकृति होवै, परदेशसे बडी उन्नति मिले ॥ ४ ॥

गमने च यदा राहौ बहुसंतानवान्नरः ॥
पंडितो धनवान्दाता राजपूज्यो नरोत्तमः ॥ ५ ॥

राहु गमनावस्थामें हो तो मनुष्य बहुत संतानवाला होवै, पंडित, तथा धनवान्, उदार, राजपूज्य और मनुष्योंमें श्रेष्ठ होवै५॥

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः ॥
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥ ६ ॥

राहु आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य क्रोधी होवै, सर्वदा बुद्धि एवं धनसे रहित रहे,कुटिल होवे, कृपण (कंजूस) होवै और सर्व-प्रकारसे अतिकामी होवै ॥ ६ ॥

सभागते यदा राहौ पंडितः कृपणो नरः ॥
नानागुणपरिक्रांतो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥ ७ ॥

राहु सभावस्थामें हो तो मनुष्य पंडित होवे परन्तु कृपण होवै अनेकगुणोंसे युक्त, एवं धनसुखसे युक्त रहे, ॥ ७ ॥

चेदगावागमं यस्य याते तदा व्याकुलत्वं सदारा-
तिभीत्या महत् ॥ बंधुवादो जनानां निपातो भवे-
द्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥ ८ ॥

राहु आगमावस्थामें जिसका हो वह सर्वदा शत्रुके भयसे व्याकुल रहे जातिभाइयोंमें कलह रहे,कुटुम्बमें मनुष्य न रहे, धनकी हानि होवै, मूर्खता रहे. शरीर कृश (माडा) भी रहे ॥ ८ ॥

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् ॥
मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका राहु भोजनावस्थामें हो वह भोजनसे विकल रहे अर्थात् भोजनप्राप्ति कठिनतासे होवै, बुद्धि मन्द होवै, कार्य करनेमें डरे (आलसी होवे) स्त्रीपुत्रोंके सुखसे वर्जित रहे ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम् ॥
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्द्धनधर्मक्षयो नृणाम् ॥ १० ॥

राहु नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो मनुष्योंको बडे बडे रोग बढें, नेत्रोंमें रोग रहे, शत्रुका भय होवै, धन और धर्मका क्षय होवै॥ १०॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् ॥
परदाररतो नित्यं परवित्तापहारकः ॥ ११ ॥

राहु कौतुकावस्थामें जिस मनुष्यका हो वह स्थान (गृह भूमि) से रहित रहे, सर्वदा पराई स्त्रीमें रमित रहे, पराये धनका हरण करनेवाला होवै ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः ॥
कांतासन्तानवान्धीरो गर्वितो बहुवित्तवान्॥ १२ ॥

राहु निद्रावस्थामें हो तो मनुष्य अनेक गुणोंके समूहसे युक्त होवै, स्त्रीपुत्रवाला होवै, धैर्यवान् गर्वित (घमंडखोर) और बहुत धनवान् होवै ॥ १२ ॥

अथ केतोरवस्थाफलानि ।

मेषे वृषेऽथ वा युग्मे कन्यायां शयनं गते ॥
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्द्धनम् ॥ १ ॥

केतु मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या राशिमेंसे किसीमें शयनावस्थाका हो तो धनकी समृद्धि होवे, अन्य राशियोंमें हो तो रोग बढे ॥ १ ॥

उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्द्धनम् ॥
अरिव्रातनृपव्यालचौरशंकासमंततः ॥ २ ॥

केतु उपवेशावस्थामें हो तो दद्रु (दाद) का रोग बढे, शत्रुसमूह, राजा, सर्प, चोरोंसे शंका (भय) होवै ॥ २ ॥

नेत्रपाणिं गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते ॥ दुष्टसर्पा-

दिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि ॥ वित्तं विनाशमा-
याति मतिश्च चपला भवेत् ॥ ३ ॥

केतु नेत्रपाणिअवस्थामें हो तो नेत्रोंमें रोग रहे, दुष्टजन्तु सर्पा-
दियोंका भय होवै, तथा शत्रुसे, राजकुलसे भय होवै, धनका नाश
होवै, बुद्धि चंचल रहे ॥ ३ ॥

प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः ॥
राजमानं यशोलाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

केतु प्रकाशावस्थामें हो तो अन्न धनकी वृद्धि होवै, राजासे
मान मिले, यश बढे, विदेशमें सौख्य होवै ॥ ४ ॥

गमने तु यदा केतौ पुत्रसंपत्तिमान्नरः ॥
पंडितो राजमानी च धनेन परिपूरितः ॥ ५ ॥

केतु गमनावस्थामें हो तो पुत्रोंकी संपत्तिवाला मनुष्य होवै,
तथा पंडित होवै, राजासे मान पावे, धनसे परिपूर्ण रहे ॥ ५ ॥

केतावागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान् ॥
कामी धीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः ॥ ६ ॥

केतु आगमावस्थामें हो तो पुरुषकी दुष्टबुद्धि होवै, लक्ष्मी-
रहित रहे, कामी होवै, सद्बुद्धि तथा धर्मकर्मसे हीन रहे, क्रोधी
और ठगुआ होवै ॥ ६ ॥

सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः ॥
कृपणो लंपटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः ॥ ७ ॥

केतु सभावस्थामें हो तो बडा वाचाल होवे, गर्वित (बडा
मिजाजी) होवै, कृपण (सूम) होवै तथा लोभी होवै और
धूर्तविद्यामें भी निपुण होवै ॥ ७ ॥

यदागमे भवेत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ॥
बंधुवादरतो दुष्टो रिपुरोगनिपीडितः ॥ ८ ॥

केतु यदि आगमनावस्थामें हो तो मनुष्य पाप कर्मोंका ध्वजा (पताका) होवे, बंधुजनोंमें विवाद करता रहे, दुष्टता करे शत्रुसे तथा रोगसे पीडित रहे ॥ ८ ॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः ॥
दरिद्रो रोगसंतप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ॥ ९ ॥

केतु भोजनावस्थामें हो तो मनुष्य नित्य क्षुधा (भूँख) से पीडित रहे, दरिद्री तथा रोगसे संतप्त रहकर पृथ्वीमें भ्रमण करे॥९॥

नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत् ॥
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्त्तोनर्थकरो नरः ॥ १० ॥

केतु नृत्यलिप्साअवस्थामें हो तो मनुष्य रोगसे सर्वदा विकल (दुःखी) रहे, आँख उसकी देखनेमें कांपे (स्थिर दृष्टि न होवै) किसीसे हारे नहीं, धूर्त होवे और अनर्थके काम करे ॥ १० ॥

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः ॥
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम् ॥ ११ ॥

केतु कौतुकावस्थामें जिसका हो वह खेल तमासा करै, नटिनीके संभोग (रति) को प्रिय माने, स्थानभ्रष्ट (घरसे निकल जावै) दुष्ट आचार करे, दरिद्री होकर पृथ्वीमें भ्रमण करे ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत् ॥
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम् ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले ग्रहाणां शयनाद्यवस्थाविचारे
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

केतु निद्रावस्थामें हो तो अन्न तथा धनका सुख मनुष्योंको बहुत होवै, अनेक प्रकार गुणोंकी चर्चासे खुसीसे दिन कटें ॥१२॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहाणां शयनाद्यवस्था-
विचाराऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाफलानि ।

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ
वृद्धः ॥ मृतः क्रमाद्व्युत्क्रमतः समर्क्षे बालाद्यवस्थाः
कथिता ग्रहाणाम् ॥ १ ॥ फलं तु किंचिद्धि तनोति
बालाश्चार्द्धं कुमारः प्रयतेन पुंसाम् ॥ युवा समग्रं
खचरोऽथ वृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यः॥२॥

अब बालादि अवस्था कहते हैं कि विषम राशिके प्रथम ६ अंश-में ग्रह हो तो बाल अवस्था, ७ से १२ अंशपर्यंत कुमार १३ से १८ लौं युवा, १९ से २४ पर्यंत वृद्ध, २५ से ३० पर्यंत मृत्यु अवस्था होती है, समराशिमें ग्रह हो तो विपरीत अर्थात् प्रथम ६ अंश पर्यंत मृत्यु, ७ से १२ पर्यंत वृद्ध, १३ से १८ पर्यंत युवा, १९ से २४ लौं कुमार, २५ से ३० पर्यंत बाल अवस्था होती है ॥ १ ॥ इनके फल ये हैं कि, बाल अवस्थावाला ग्रह अपना पूर्वोक्त फल थोडा देता है, कुमारमें आधा; युवामें समस्त, वृद्धमें अनिष्ट फल और मृत्युवाला मृत्युही देता है ॥ २ ॥

अथ दीप्ताद्यवस्थाः ।

उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत् ॥
शांतः शोभनवर्गस्थोऽतिशस्तो दीप्तदीधितिः॥ ३ ॥
लुप्तोऽस्ते नीचभे दीनः पीडितः पापशत्रुभे ॥
एवमष्टौ नभोगानां भावा दीप्तादिभेदतः ॥ ४ ॥

अब अन्य प्रकार दीप्तादि अवस्था कहते हैं--कि, जो ग्रह अपने उच्च राशिमें हैं वह दीप्त अवस्थाका एवं अपनी राशिमें स्वस्थ, मित्रकी राशिमें हर्षित, शुभग्रहके राशि अंशादियोमें शांत, उदयका अतिशस्त, अस्तंगत लुप्त; नीचराशिमें दीन, पापराशि वा शत्रुराशिमें पीडित होता है ऐसे दीप्तादि भेदोंमें ग्रहोंके ८ भाव हैं ३॥४॥

अथ दीप्तग्रहफलम्।

दीप्ते मदोन्मत्तगजेंद्रगंता सदारिहंता वरतीर्थगंता ॥
कांतो मनस्वी नितरां यशस्वी प्रदीप्तवेषो मनुजो महीपः५

दीप्त ग्रहका फल यह है कि, मनुष्य मदसे उन्मत्त हाथीकी सवारीमें चलनेवाला, सर्वदा वैरीको मारनेवाला, श्रेष्ठ तीर्थोंमें जानेवाला, सुरूप, बुद्धिमान्, सर्वदा यशवाला, कांतिमान् राजा होताहै५॥

स्वस्थे गुणागारजयालयानामुपार्ज्जको वैरिविनाशकर्त्ता ॥ नरोप्युदारो नृपपूजितः स्याद्विशालकीर्तिः कमनीयमूर्तिः ॥ ६ ॥

स्वस्थग्रहवाला मनुष्य गुणोंके गृह अर्थात् विद्याशाला आदि तथा जय और गृह इनका उपार्जक (कमानेवाला) तथा शत्रुका विनाश करनेवाला, उदार, राजपूजित, बडी कीर्तिवाला, सुहावनी मूर्तिवाला होता है ॥ ६ ॥

हर्षिते भवति हर्षितः सदा मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा ॥
धर्मकृन्मणिगणेन मण्डितः परमदैवविपाकविज्जनः॥७॥

हर्षित ग्रहका फल ऐसा है-कि, मनुष्य सर्वदा खुश रहे, मित्रोंसे तथा पुत्रोंसे सर्वदा प्रसन्नतापूर्वक परिपूर्ण रहे, धर्म करनेवाला होवै, मणियोंके समूहसे भूषित रहे और दैव (पूर्वार्जित कर्म) अर्थात् कर्मविपाक आदि ज्योतिष जाननेहारा होवै ॥ ७ ॥

शांतेतिशांतो युवराजराजो जनो महौजा जनता-
समेतः ॥ अनेकविद्यामलगद्यपद्याभ्यासानुरक्तः
खलु वित्तयुक्तः ॥ ८ ॥

शांत ग्रहवाला मनुष्य अतिशांतस्वभाव, सर्वदा युव राजों-
का राजा होवे, अथवा युवराज (भविष्यराजा) होवे, बडा तेज-
मान होवै, बहुत मनुष्योंके साथ रहे, अनेक प्रकारके निर्मल गद्य-
पद्यसहित विद्याओंके अभ्यासमें तत्पर रहे और निश्चय धनयुक्त
सर्वदा रहे ॥ ८ ॥

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः प्रशस्तवेषो गतरो-
गसंघः ॥ विशालमालालसितोऽमलोक्त्या नरो-
नराणामधिपः प्रधानः ॥ ९ ॥

शस्त ग्रहका फल है-कि मनुष्य विशेषतासे विद्वानोंका प्रशंस-
नीय (श्रेष्ठ) होवै, सुंदर सुहावना वेष (सजीला जवान) होवै,
निरोग रहे, बडी कीमती मालासे भूषित रहे और निर्मल वाणीक-
रके मनुष्योंका स्वामी किंवा प्रधान (श्रेष्ठ) होवै ॥ ९ ॥

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावैः प्रपीडितोरातिकुलेन
मर्त्यः ॥ भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो प्रमादशाली
खलु पापमाली ॥ १० ॥

लुप्त ग्रहका फल है-कि मनुष्य गुण तथा धर्मके कामोंका लोप
करे अर्थात् निर्गुणी, विधर्मी होवै, शत्रुकुलसे पीडित (दुःखी)
रहे, गृहस्थीसे विरक्त रहे, अनेक रोगोंसे युक्त रहे, प्रमादी होवै,
पाप करनेवाला होवै ॥ १० ॥

दीनेतिदीनो मतितोषहीनो जनो जनेशादिनिपी-

डितश्च ॥ गुणेन हीनः परदारलीनः परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥ ११ ॥

दीनग्रहवाला मनुष्य अतिदीन (गरीब) होता है, बुद्धिहीन, संतोषरहित, राजा आदिसे पीडित गुणहीन पराई स्त्रीमें आसक्त, पराया धन चोरानेवाला और निषिद्ध भूमिमें फिरनेवाला होताहै ११

पीडिते गदनिपीडितः सदा चिंतया च परया समन्वितः ॥ व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमानाधिरोगसहितो विशेषतः ॥ १२ ॥

इतिभावकुतूहलेग्रहावस्थाफलोक्तौत्रयोदशोऽध्यायः १३

पीडित ग्रहसे मनुष्य सर्वदा रोगपीडित बडीचिंतासे युक्त (व्यग्र) बे फुर्सत, बडे मदसे उन्मत्त रहता है तथा (आधि) मानसी दुःखसे दुःखी विशेषतः रोगी रहता है ॥ १२ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहावस्थाफलाऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ मारकविचाराऽध्यायः ।

मारकग्रहसंबंधात् पापकर्त्ता शनिस्तदा ॥
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अब मारकाऽध्याय कहते हैं-समस्त ग्रहोंमें मृत्युकारक यमका भाई होनेसे शनि विशेष है इस लिये वक्ष्यमाण विधिसे मारकत्व जो ग्रह पावै उसके साथ चार प्रकारोंमेंसे किसी प्रकार संबंध शनि पावै तो मारक ग्रहोंको हटायकर आपही मारक होजाता है अपने मारकत्व होनेमें तो क्याही बाकी रहैगा ॥ १ ॥

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहास्त्रिवैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः ॥ भवंति

यदि केंद्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणामतीवशुभ-
दायकाः खलखचारिणो जन्मनि ॥ २ ॥

त्रिकोण ९।५ स्थानोंके कोई ग्रह स्वामी हों तो शुभसंज्ञक एवं शुभ फल देनेहारे होतेहैं और ३।६।११ भावोंके स्वामी पाप-संज्ञक एवं क्रूर फल देनेवाले होतेहैं ऐसा पंडितोंने कहा है । तथा केंद्र १।४।७।१० स्थानोंके स्वामी शुभग्रह हों तो शुभ फल नहीं देते, पापग्रह हों तो अतिशुभ फलदेते हैं यह विचार जन्ममें मुख्य है ॥ २ ॥

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ॥
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम्॥ ३ ॥

राहु तथा केतुभी मनुष्योंके जन्ममें जिन जिन भावोंमें हों और जिन जिन भावोंके स्वामियोंसे युक्त हों उन उन भाव-संबंधी फलोंको निश्चय देते हैं ॥ ३ ॥

मंदश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ॥
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता पापकृद्यदा ॥ ४ ॥

यदि पापकर्ता शनि पापयुक्त होकर मारक (सप्तमेश द्विती-येश) से युक्त उपलक्षणसे दृष्टभी हो तो समस्त ग्रहोंके फलोंको हटायके मारनेवाला स्वयं होजाता है ॥ ४ ॥

अल्पमध्यमपूर्णायुःप्रमाणमिह योगजम् ॥
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिंतना ॥ ५ ॥

प्रथम अल्प, मध्यम, पूर्ण आयुका विचार वक्ष्यमाण योगोंसे करके तब मारकका विचार करना (जैसे योगसे पूर्णायु है और मारक दशा अल्प वा मध्यमायुके समयमें हो तो अरिष्टमात्र होगा मृत्यु नहीं होगी. ऐसेही मारकयोग अल्पायु समयमें हो

तथा मारक दशा पूर्णायु समयमें हो तो ऐसेही जानना। जब मारक दशा और योगायुभी तुल्य समयपर हो तब मृत्यु होती है) ॥ ५ ॥

चेदंगपो यदि रवेररिरेव हीनं पूर्णं सुहृद्यदि समः सममायुराहुः ॥ बालग्रहो हितसमारिपदेऽपि पूर्णं मध्यं च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः ॥ ६ ॥

योगसे अल्प, मध्यम, दीर्घ आयु कहते हैं कि, यदि लग्नेश सूर्यका शत्रु हो तो अल्पायु, मित्र हो तो पूर्णायु, सम हो तो मध्यमायु होती है। अथवा लग्नेश मित्रगृही हो तो पूर्ण, समके राशिमें हो तो मध्यम और शत्रुराशिमें हो तो अल्प आयु होती है। यह जातकोंके तत्त्व जाननेवाले कहते हैं। (आयुका प्रमाण ४० पर्यन्त अल्प, ८० पर्यंत मध्यम, १२० पर्यंत पूर्ण है परन्तु कलिकालमें लोभमोहादि तथा अनाचार, कुपथ्य, झूठ, कूट आदियोंके करनेसे मनुष्योंकी परमायु ६०के लगभगही हो जाती है इस व्यवस्थामें इसके ३ भाग २० पर्यंत अल्प, ४० लौं मध्यम, ६० पर्यंत पूर्ण आयु जाननी) ॥ ६ ॥

अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैरायुरुदाहृतम् ॥
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ७ ॥

लग्नसें अष्टम तथा तृतीय आयुस्थान पंडितोंने कहे हैं और लग्नसे दूसरा और सप्तम स्थान मारक संज्ञक कहे हैं ॥ ७ ॥

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः ॥
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं विशेत ॥ ८ ॥

मारकभावका स्वामी दशामें मारकस्थानस्थित पापग्रहकी

अन्तर्दशा आनेसे सम्भव रहते मरण कहना । अथवा पापग्रहोंकी दशामें पापयुक्त मारकेशकी दशादिमेंभी मृत्यु होती है ॥ ८ ॥

असंभवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ॥
अभावे व्ययभावेशसंबंधिग्रहभुक्तिषु ॥ ९ ॥

मारकग्रहकी दशाके (असम्भव) वर्त्तमान न होने एवं बहुत दूर मारकग्रहदशा होनेमें, अथवा मारकदशा भुक्त होजानेमें व्यया-धीशकी दशामें मनुष्योंकी मृत्यु होजाती है । उसकाभी पूर्वोक्त प्रकारोंसे अभाव हो तो व्यय भावेशके साथ जो ग्रहसम्बध करता हो अथवा मारकेशसे जो सम्बंध करता हो उसकी दशामें मृत्यु होतीहै ९

तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ॥
दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥ १० ॥

पूर्वोक्तके अभावमें अष्टमेशकी दशामें मरण होता है, अथवा दुष्टराशि ८।१२ का पतिकी दशामें यद्वा पापग्रहदशामें मृत्यु पंडि-तोंने कही है ॥ १० ॥

अथ राजयोगाः ।

नवमभावपतिस्तनयालये सुतपतिर्नवमे यदि ज-न्मिनः ॥ अतिविचित्रमणिव्रजमंडितो वसुमती-विभुतां स नरो व्रजेत् ॥ ११ ॥

अब राजयोग कहते हैं--कि,जिसके जन्ममें नवमभावका स्वामी पंचमभावमें तथा सुतेश नवमस्थानमें हो तो बहुत मूल्यके अनेक प्रकार मणि रत्न समूहोंसे भूषित होकर पृथ्वीका राजा होवै॥११॥

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ॥
त्रिकोणपतिना दृष्टो राजा भवति निश्चितम् ॥ १२ ॥

जिसके जन्ममें दशमेश पंचमस्थानमें, पंचमेश दशमस्थानमें, त्रिकोण ९।५ भावेशमें दृष्ट हो तो निश्चय राजा होता है ॥ १२ ॥

राज्येशांगपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना
संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः ॥
पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपेनांगगो दृष्टो-
वा सहितः सुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् ॥ १३ ॥

जिसके जन्मलग्नसे दशमेश, लग्नेश, चतुर्थेश और पंचमेश नवमेशसे युक्त वा दृष्ट हों तथा बलवान्भी हों तो वह मनुष्य राजा होवै और पंचमेश यदि नवमेश तथा लग्नेशसे युक्त होकर लग्नमें हो अथवा दशममें यद्वा चतुर्थस्थानमें नवमेश लग्नेशसे युक्त वा दृष्ट हो तो निश्चय राजा होवै ॥ १३ ॥

यत्र कुत्रापि केंद्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः ॥
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥ १४ ॥

केंद्र १।४।७।१० का स्वामी किसी भावमें, त्रिकोण ५।९ भाव-के स्वामीसे युक्त हो बलवान्भी हो तो मनुष्य राजा होवै, यदि निर्बल हो तो धनवान् होवे ॥ १४ ॥

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते ॥
पंचमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥ १५ ॥

लग्नेश नवममें अथवा बृहस्पतिकी राशि ९।१२ में वा दशम-स्थानमें शुक्रसहित हो तथा पंचमेश उसे देखे तो राजाका पुत्र राजा होवे अन्य नहीं ॥ १५ ॥

अथ धनिकयोगाः ।

पंचमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा ॥
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥ १६ ॥

शुक्र अपनी राशि २।७ का पंचमस्थानमें हो और लाभभावमें शनि हो तो मणि और सुवर्णका भोगनेवाला राजा होवै ॥ १६ ॥

कर्कटे तु कलानाथे पंचमे लाभगे शनौ ॥
नानाधनसमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपता ॥ १७ ॥

चन्द्रमा कर्क राशिका पंचमभावमें और शनि लाभभावमें हो तो अनेक प्रकार धनोंकी समृद्धि, धर्मकी वृद्धि और राजत्वभी होवै ॥ १७ ॥

पंचमे तु मृगे कुंभे समंदे यस्य जन्मनि ॥
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ॥ १८ ॥

जिसके जन्मलग्नसे शनि १०।११ का पंचमभावमें तथा बुध ग्यारहवें भावमें हो उसको सर्वप्रकारसे धनकी वृद्धि होती रहे १८॥

पंचमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ॥
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ॥ १९ ॥

सूर्य सिंहराशिका पंचमभावमें हो, बृहस्पति लाभ ११ भावमें हो तो सर्वदा वाहन (हाथी घोडे आदि) तथा सुवर्ण रत्नोंका स्वामी अकस्मात् ही होवै ॥ १९ ॥

पंचमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि ॥
लाभगाविंदुभूपुत्रौ पृथ्वीपातिसमो नरः ॥ २० ॥

यदि जन्मकालमें पंचममें बृहस्पति अपनी राशि ९।१२ का हो तथा लाभभावमें चंद्रमा मंगल हों तो मनुष्य राजाके समान होवै२०

रविक्षेत्रगते लग्ने रविणा संयुते सति ॥
गुरुभौमयुते वापि धनाधिक्यं दिने दिने ॥ २१ ॥

सूर्य्य लग्नमें सिंहका हो अथवा बृहस्पति मंगल करके युक्तभी हो तो दिनोदिन धनकी अधिकता होती रहै ॥ २१ ॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु सचंद्रे यदि जन्मनि ॥
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥ २२॥

जिसके जन्ममें कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमाभी हो और मंगल बृहस्पतिसे युक्त हो तो अकस्मात् धनका स्वामी होवै ॥ २२ ॥

कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि ॥
ज्ञशुक्रमंदसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें लग्नका मंगल अपनी राशि १।८ का बुध,शुक्र,और शनिसे युक्त हो वह कुबेरके समान धनवान् होवै२३॥

गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति ॥
चंद्रांगारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचंचला ॥ २४ ॥

बृहस्पति लग्नमें अपनी राशि९।१२ का हो तथा चंद्रमा मंगलसेभी युक्त जिस मनुष्यका हो उसके घरमें लक्ष्मी स्थिर रहे ॥२४॥

कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि ॥
संयुते शुक्रमंदाभ्यां दृष्टे वा धनिको भवेत् ॥ २५ ॥

जिसके जन्ममें कन्या वा मिथुनका बुध लग्नका हो और शुक्र शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो वह धनवान् होवै ॥ २५ ॥

शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि ॥
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥ २६ ॥

जन्ममें जिसका शुक्र लग्नमें अपनी राशि २।७ का बुध शनिसंयुक्त हो अथवा दृष्ट हो तो धनका स्वामी होवै ॥ २६ ॥

अथ दरिद्रयोगाः ।

त्रिकोणपतिसंबंधी योयो वित्तप्रदो ग्रहः ॥
सषडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥ २७ ॥

अब दरिद्रयोग कहते हैं--जो जो धनदेनेवाले ग्रह हैं वह त्रिकोण ५।९ भावेशोंसे संबंधी होकर छठे,आठवें, बारहवें भावोंके स्वामियोंसेभी युक्त हों तो धनका नाश करके दरिद्र करते हैं ॥ २७ ॥

रिपुभावपतौ लग्ने लग्नेशे रिपुभावगे ॥
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्द्धनो भवेत् ॥२८॥

षष्ठेश लग्नमें और लग्नेश छठे भावमें हों इनपर मारकेशकी दृष्टि हो अथवा उससे युक्त हों तो मनुष्य निर्द्धन (धनरहित)होवे ॥२८॥

चंद्रादित्यौ यदा लग्ने वांगपे निधनालये ॥
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्द्धनः ॥ २९ ॥

सूर्य, चंद्रमा लग्नमें हों अथवा लग्नेश अष्टमभावमें हो और मारकसे युक्त वा दृष्ट हो तो मनुष्य निर्द्धन होवे ॥ २९ ॥

यदांगनाथस्त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात् ॥ पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥ ३० ॥

यदि लग्नेश त्रिक ६।८।१२ भावोंके स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा पापयुक्त हो, शुभग्रह उसे न देखें तो पंचमेशसे युक्त लग्नेश लग्नमें होनेसे जो धनवान् योग कहाहै इसके हुयेमेंभी वह मनुष्य ऋणी (कर्जदार) होवै ॥ ३० ॥

अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा लग्नेश्वरे मारकनाथ-

युक्ते ॥ भाग्याधिपेनाथ शुभैरदृष्टे भवेदृणीशो मनुजेश्वरोपि ॥ ३१ ॥

इति भावकुतूहले नानायोगनिरूपणा-
ऽध्यायः ॥ १४ ॥

यदि लग्नेश अस्तंगत हो अथवा शत्रुराशिमें,नीचराशिमें, त्रिक ६।८।१२ भावोंमें हो मारकग्रहसे युक्त तथा उसे भाग्याधीश यद्वा शुभग्रह न देखें तो वह मनुष्य राजाभी हो तो भी ऋणियोंमें श्रेष्ठ होवे ॥ ३१ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां नानाविधयोगकथनाऽध्यायः ॥१४॥

अथ भावाध्यायः ।

तत्रादौ तनुभावविचारः ।

अष्टारिव्ययगो यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः ॥
सुखं निहन्ति तस्याशु सर्वभावेष्वयं विधिः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका लग्नस्वामी ८।६।१२भावोंमें हो और पापयुक्त हो तो उसके सुखको शीघ्र हरणकरताहे यह विधि सभी भावोंमें जानना ॥ १ ॥

लग्नपश्चंद्रराशीशो नीचस्तु रिपुराशिगः ॥
विना स्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत् ॥२॥

लग्नेश अथवा चंद्रराशीश नीचराशिमें अथवा शत्रुराशिमें तथा विना अपनी राशिका त्रिक६।८।१२स्थानमें हो तो वह ग्रह बलहीन कहाताहे अपनी राशिका ६।८।१२ मेंभी बली होताहे ॥ २ ॥

दुष्टस्थानगते यस्य चंद्रलग्नेश्वरे यदि ॥
कार्श्यं गदभयं नित्यं वितनोति रिपूदयम् ॥ ३ ॥

जिसका लग्नेश वा चंद्रराशीश दुष्ट स्थान (शत्रु, नीच, त्रिक) में हो उसको कृशता, रोग, भय और शत्रुकी वृद्धि नित्य रहतीहै ३॥

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि ॥
दीर्घायुः सुखसंतृप्तो बली भोगी प्रजायते ॥ ४ ॥

यदि लग्नेश उपलक्षणसे चंद्रराशीशभी अपनी उच्च राशिमें, स्वगृहमें, अथवा अपने अंशादियोंमें हो तो मनुष्य दीर्घायु, सुखी, बलवान् और भोगवान् होताहै ॥ ४ ॥

अथ धनभावविचारः ।

धनेशः शुक्रसंयुक्तोऽथवा शुक्रात्त्रिके भवेत् ॥
संबंधी लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत् ॥ ५ ॥

धन (२) भावेश शुक्रके साथहो अथवा शुक्रसे ६।८।१२वें स्थानमें हो तथा लग्नेशसेभी संबंध करता हो तो नेत्ररोगी होताहै॥५॥

चंद्रादित्यौ धने स्यातां निशांधो मनुजो भवेत् ॥
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपातिना युताः ॥ ६ ॥
मात्रादीनां प्रकुर्वंति मंदतां नेत्रयोरपि ॥
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्र दोषकृत् ॥ ७ ॥

जिसके सूर्य चंद्रमा दूसरे भावमें हों वह मनुष्य रात्र्यंध (रतौंधी वाला) होताहै. यदि सूर्य, लग्नेश और धनेश चतुर्थेशके साथ हों तो उसके माता आदियोंको नेत्रमंदता (दृष्टि कम) करते हैं. उक्त योगमें यदि उक्तग्रह अपने उच्च वा स्वराशिका हो तो दोष नहीं करता ॥ ६ ॥ ७ ॥

गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थानगतौ यदा ॥
मूकतां कुरुतोऽप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः ॥ ८ ॥

ताभ्यां युतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत् ॥
बलाबलविवेकेन जातकज्ञैर्विशेषतः ॥ ९ ॥

बृहस्पति और पञ्चमस्थानका स्वामी त्रिक ६।८।१२ स्थान में हो तो मूकता (गूँगापन) आता है. यदि उक्त बृहस्पति और पञ्चमेशके साथ मातृपितृआदि जिस भावका स्वामी त्रिकमें हो उसको मूकता कहनी, विशेषतः जातक जानने वालेने उनका बल एवं निर्बलता देखके फल कहना। जैसे योगकारक ग्रह उच्च स्वराशिमें हों तथा शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हों तो अनिष्ट फल पूरा नहीं देते नीचशत्रुराशिगत, पापयुत ग्रह कष्टफल पूराही देतेहैं इत्यादि विचार करना ॥ ८ ॥ ९ ॥

धनाधिपो माननवायभावे बली यदा तिष्ठति ज-
न्मकाले ॥ रमा विहारालयवासिनी वा निजोच्च-
मित्रालयगो जनानाम् ॥ १० ॥

यदि जन्मकालमें बलवान् धनभावेश दशम, नवम, लाभ भावमें हो अथवा अपने, उच्च, मित्र राशिमें हो तो लक्ष्मी उसके विहार-करनेके घरमें निवास करे ॥ १० ॥

अथ तृतीयभावविचारः ।

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेऽपि वा ॥
सहजेपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते ॥११॥

तीसरे भावका विचार है—कि, तृतीय भावका स्वामी तीसरा हो अथवा छठे आदि३में हो तो भाइयोंका सुख न होवै, विशेषसे सहज भावमें यह विचारहै क्योंकि ग्रंथोंमें लिखा है कि जिस भावका स्वामी अपने गृहमें रहता है उसकी वृद्धि करता है यहां श्लोकार्थविरुद्ध प्रतीत होताहै परंतु ग्रंथकर्त्ताका आशय 'अपि' 'तथा' विशेष

शब्दसे है कि, बहुत सुख भाइयोंका न होवे क्योंकि भाइयोंको दायाद (पितृधन लेनेवाले)कहते हैं कैसाही भाइयोंमें मेल हो परंतु कभी न कभी किसी प्रकारकी शत्रुता होतीही है ॥ ११ ॥

सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ पापालये वा भवतो जनस्य ॥ उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्थानितीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः ॥ १२ ॥

तृतीयभावेश तथा मंगल पापयुक्त हों वा पापराशिमें हों तो मनुष्यके भाई जन्म पाकर मरते रहैं, इस प्रकार जातकोंके तत्त्वजाननेवाले कहते हैं ॥ १२ ॥

स्त्रीखेटः सहजाधीशः शुक्रो वाथ निशाकरः ॥ तत्रगो भागिनीं दत्ते भ्रातरं पुरुषग्रहः ॥ १३ ॥

तृतीयभावेश स्त्रीग्रह, शुक्र अथवा चन्द्रमा तृतीयभावमें हो तो भगिनी (बहिन) होवे । यदि पुरुषग्रह तृतीयेश होकर तृतीयमें हो तो भाई होते हैं ॥ १३ ॥

अथ चतुर्थभावविचारः ।

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुग्जनयति प्रवरालयमंगिनाम् ॥ त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः सुखजनुःपतिरेव तथा बुधैः ॥ १४ ॥

चतुर्थेश चतुर्थस्थानमें लग्नेशयुक्त हो तो शरीरियोंको बडे बडे घर मिलते हैं, यदि त्रिक ६।८।१२ स्थानमें हो तो विपरीत फल करता है।ऐसेही चतुर्थेश लग्नेशसेभी पंडितोंने 'फल' कहा है॥१४॥

सुखाधीशे जीवे सुखनिवहचिंता भृगुसुते विभूषायोषांगप्रवरतुरगाणामपि बुधे ॥ अगो मन्दे नीचो-

द्रवसुखमतेरेवदिनपे पितुश्चंद्रे मातुः क्षितिनिकर-
चिंता क्षितिसुते ॥ १५ ॥

चतुर्थेश बृहस्पति हो तो बहुत सुखकी चिंता रहे, चतुर्थेश शुक्र हो तो भूषण, स्त्री, शरीर तथा, श्रेष्ठ घोडा आदियोंकी चिंता होवे, ऐसेही बुधसेभी होती है,शनि तथा राहु चतुर्थेश हो तो नीचजन-संबंधी सुखकी चिंता होवे. सूर्य हो तो पितृपक्षकी, चन्द्रमा हो तो मातृपक्षकी और मंगल हो तो भूमिसमूहसंबंधी चिंता रहे. ऐसाही विचार प्रश्नमेंभी प्रष्टाके मनकी चिंतामें करना ॥ १५ ॥

त्रिकोणे वाहनाधीशे केंद्रे च बलसंयुते ॥
निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥ १६ ॥

बलवान् चतुर्थेश त्रिकोण ५।९में हो अथवा केंद्र-१।४।७।१० में अपने उच्चादिपदमें हो तो निश्चय नवीन वाहन मिले ॥ १६ ॥

अथ पंचमभावविचारः ।

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ ॥
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्गमः ॥ १७ ॥

पंचमभावका विचार है-कि, लग्नेश मंगलकी राशिमें हो तथा पंचमभावका स्वामी छठा हो तो प्रथम सन्तान मरजावे, उपरांत पुत्रोत्पत्ति न होवे ॥ १७ ॥

षष्ठादित्रयगे नीचे पुत्रेशे पापसंयुते ॥
काकवंध्यापतिस्तत्र केतुचन्द्रसुतौ यदा ॥ १८ ॥

पंचमेश पापयुक्त होकर ६।७।८ भावमें नीचराशि वा नीचांश-कमें हो और पंचममें केतु तथा बुध हों तो वह पुरुष काकवंध्याका पति होवे अर्थात् उसकी स्त्री काकवंध्या (केवल एकही सन्तान जननेवाली) होवे ॥ १८ ॥

तदीशो नीचगो यत्र पुत्रभावं न पश्यति ॥
तत्रैव बुधमंदौ वा काकवंध्यापतिर्भवेत् १९ ॥

पंचमेश नीचराशिमें हो और पंचम भावको न देखे. तथा पंचममें बुध शनि हों तो मनुष्य काकवंध्या (एक संतान जननें वाली) स्त्री का पति होवे ॥ १९ ॥

धर्माधीशोंगगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि ॥
केतुज्ञौ पंचमे स्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

जन्ममें नवमेश लग्नका हो तथा पंचमेश नीचराशिमें हो और बुध केतु पंचम भावमें हों तो कष्टसे पुत्र कहना ॥ २० ॥

पंचमाधिपतिः केंद्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः ॥
तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेन विलंबतः ॥ २१ ॥

पंचमेश केंद्रमें वा त्रिकोणमें शुभ ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो पुत्र-का सुख शीघ्र होताहै यदि विलोम (पंचमेश केंद्रकोणरहित स्थानोंमें शुभग्रहयोग, दृष्टि रहित) हो तो पुत्रसुख विलंबसे होताहै ॥ २१ ॥

संतानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा ॥
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यका भवेत् ॥ २२ ॥

पंचमेश तथा जन्मलग्नेश पुरुषराशि (विषमराशि) में हों व उपलक्षणसे विषम नवांशोंमें हों तो पुत्र होवे और स्त्रीराशि (समराशि) योंमें हों तो कन्या होतीहै (मिश्रितमें कन्या पुत्र तुल्य जानना ऐसे विचार प्रश्नमें भी है) ॥ २२ ॥

अथारिभावविचारः।

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनस्थोपि जन्मनि ॥
व्रणोदयस्तु सर्वांगे सपापो न व्रणं दिशेत ॥ २३ ॥

छठे भावका विचारहे कि, रोग भाव (छठा स्थान) का स्वामी जिसका लग्नमें हो अथवा अष्टम हो तो उसके सर्वांगमें व्रण (घाव) होवे. यदि वह ग्रह पाप युक्तभी हो तो व्रण न होवे २३

एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः ॥
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः ॥ २४ ॥
तेषामपि व्रणं वाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः ॥
कारकस्य दशाकाले व्रणमागंतुकं दिशेत् ॥ २५ ॥

इसी प्रकार पितृमातृआदि भावोंके स्वामी उन्हीं उन्हीं कारकोंसे युक्त एवं व्रणाधिप (षष्ठेश) से युक्त हों, तथा ६।७।८ भावोंमें हों तो उन पितृमात्रादियोंके अंगोंमें जातक जाननेवाले अच्छे चतुरोंने विचारपूर्वक चतुरतासे व्रण कहने । ये व्रण उसी कारक ग्रहके दशासमयमें होनेवाले कहने ॥ २४ ॥ २५ ॥

शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं धरासूनुः
कंठे जनयति बुधो नाभिनिकटे ॥ गुरुर्नासामध्ये
पदनयनयोरेव भृगुजः शनी राहुः केतुर्व्रणमुदर-
भागे जनिमताम् ॥ २६ ॥

उक्तयोगकारक यद्वा षष्ठेश सूर्य हो तो शिरमें, चंद्रमा मुखमें, मंगल कंठ (गले) में, बुध नाभीके समीप, बृहस्पति नाकके बीचमें, शुक्र पैर तथा नेत्रोंमें, शनि राहु केतु उदर (पेट) में मनुष्योंके व्रण (खोट आदि) अवश्य करते हैं ॥ २६ ॥

लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जन्मि-
नां रोगांगाधिपती यदा कुजबुधौ चंद्रेण वा राहु-

णा ॥ मंदेनापि युतौ प्रयच्छत इति प्रायोंगगो रात्रिपो युक्तो वा तमसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा श्यामलम् ॥ २७ ॥

यदि लग्नेश मंगलकी राशिमें बुधसहित हो तो मनुष्योंके मुखमें रोग रहे, लग्नेश तथा षष्ठेश बुध मंगल हों और चंद्रमा अथवा राहु या शनिसे युक्त हों तो कुष्ठ समान रोग होता है । विशेषतः चंद्रमा लग्नमें राहुसे युक्त हो तो श्वेत कुष्ठ और शनि युक्त हो तो कृष्ण कुष्ठ होवे ॥ २७ ॥

अथ सप्तमभावविचारः ।

विना स्वर्क्षं कलत्रेशस्त्रिकस्थानगतो यदि ।
रोगिणीं तरुणीं दत्ते तथा तुंगपदं विना ॥ २८ ॥

यदि सप्तमभावेश त्रिक ६।८।१२ भावमें हो अपनी राशि छोड कर तथा उच्चराशि नवांशमें हो तो स्त्री रोगिणी मिले ॥ २८ ॥

जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ॥
पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यका शुक्र सप्तम हो वह कामी (अतिस्त्रीसंग चाहनेवाला) होवे, यदि शुक्र पापराशिमें पाप संयुक्त हो तो पुरुष स्त्रीके सुखसे रहित रहे ॥ २९ ॥

चतुर्थे महिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ॥
कलत्रे वा कुटुंबे वा व्यभिचारी नरो भवेत् ॥ ३० ॥

सप्तमेश चतुर्थमें, लग्नेश लग्नमें यदि हो अथवा सप्तममें वा द्वितीय स्थानमें हो तो पुरुष व्यभिचारी (यथेच्छ स्त्रियोंका गमन करनेवाला) होवे ॥ ३० ॥

यावंतो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ॥
तावंतोपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधैः ॥३१॥

जितने ग्रह अष्टम स्थानमें अष्टमेशसे दृष्ट हों उतने विवाह मनुष्योंके पंडितोंने कहे हैं (ऐसा विचार सप्तम भावमें भी होताहै)॥३१॥

जायाधीशो निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकंटके ॥
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत् ॥ ३२ ॥

सप्तमेश अपनी राशिमें अथवा अपने उच्चमें त्रिकोण केंद्र भावमें हो और शुभग्रहसे युक्त या दृष्ट हो तो विवाह शीघ्र एवं बहुत होवें ३२

अथाष्टमभावविचारः ।

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतो लग्नेश्वरोपि चेत् ॥
करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः ॥ ३३ ॥

अष्टम भावका विचार है कि अष्टमेश अथवा लग्नेश पापयुक्त हो उसे शुभग्रह न देखें तो मनुष्यको अल्पायु करता है ॥ ३३ ॥

तमःशनिभ्यां निधनाधिनाथः पापैर्युतो हीनबलोस्तगो वा ॥ अल्पायुषं जातकमेव सद्यः करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत् ॥ ३४ ॥

अष्टम भावेश यदि राहु शनिसे युक्त अथवा पापयुक्त एवं बलहीन, अस्तंगत हो तो मनुष्यको अल्पायु (थोडे दिन जीनेवाला) करताहै। परंतु यदि अपने उच्च राशि वा स्वगृहमें न हो ॥३४॥

अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चंद्रे तु जलयोगतः ॥ करवालात्कुजे ज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे ॥ ३५ ॥ गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया तृषया शनौ ॥ चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे गृहे पथि ॥ ३६ ॥

अष्टम भावमें वा अष्टमेश सूर्य हो तो अग्निसे, चंद्रमा हो तो जलके संयोगसे, मंगल हो तो तलवार आदि शस्त्रोंसे, बुध हो तो ज्वरसे, बृहस्पति हो तो (त्रिदोष) वात, पित्त, कफ इन तीनों दोषों-से, शुक्र हो तो क्षुधा (भूख) अथवा अन्नादिकी अरुचिसे, शनि-हो तो तृषा (प्यास) रोगसे मनुष्यकी मृत्यु होती है और उक्त मृत्युकारक ग्रह चर राशिमें हो तो परदेशमें, स्थिरमें हो तो घरमें, द्विस्वभावमें हो तो मार्गमें मृत्यु होवै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

केंद्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुंगादिपदगे तदा ॥
दीर्घायुरुदितं पूर्वैर्व्यत्यये हीनमंगिनाम् ॥ ३७ ॥

अष्टमभावका स्वामी केन्द्र अथवा कोणमें हो तथा उच्च स्वरा-शि आदि पदमें हो तो पूर्वाचार्योंने उस मनुष्यकी दीर्घायु कहा है इनसे व्यत्यय (विपरीत) अर्थात् केंद्र कोणोंसे रहित स्थानोंमें तथा नीच शत्रु आदि राशियोंमें हो तो अल्पायु जानना ॥३७॥

अथ नवमभावः विचार ।

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्यैः प्रदिष्टं भाग्यं
तस्मात्प्रथमममुतः संविचिंत्यं प्रयत्नात् ॥ युक्तं
दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटैर्जन्तोर्भाग्यं
प्रसरति विधोरेव शौक्लीकलेव ॥ ३८ ॥

लग्नसे तथा चन्द्रमासे नवमस्थान श्रेष्ठ आचार्योंने भाग्य (ऐश्वर्य वा प्रारब्ध) का स्थान कहा है इसीलिये इस नवम भावसे ज्योति-षी प्रथम यत्नपूर्वक भाग्यका विचार करै । भाग्यभाव नवम-स्थानको कहते हैं यह जन्मसमयमें भावेश एवं शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो मनुष्यका भाग्य शुक्ल पक्षकी चन्द्रमाकी कलाके समान प्रतिदिन फैलता (बढता) है ॥ ३८ ॥

सहोत्थपुत्रांगगतो ग्रहश्चेद्भाग्यं प्रपश्येद्यदि वा स-
वीर्यः हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली प्रसूतिकाले
यदि यस्य जंतोः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्ममें यदि ३।५।१ भावस्थित ग्रह बलवान् हो तथा नैसर्गिक दृष्टिसे नवम भावको देखे तो वह सुवर्णमाला पहरनेवाला धनवान् तथा भाग्यवान् होवे ॥ ३९ ॥

निजोच्चभे पुण्यगृहे नभोगो बलिर्यदा तिष्ठति ज-
न्मकाले ॥ स पुण्यशाली नवरत्नमाली धराधिपो
राजकुलप्रसूतः ॥ ४० ॥

अपनी उच्चराशिका कोई ग्रह बलवान् नवमस्थानमें जन्मकालका जिसका हो वह पुण्यवान्, नव रत्नोंकी माला पहिरनेवाला होवै, राजवंशमें उत्पन्न भया हो तो राजाही होवै ॥ ४० ॥

जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठाः सुतेशदृष्टा यदि जन्म-
काले ॥ स पुण्यकर्ता नृपतेरमात्यो नृपालजातो
नरपालवर्य्यः ॥ ४१ ॥

जिसके जन्मकालमें बृहस्पति, बुध और शुक्र नवमस्थानमें बलवान् हों उनपर पंचमभावेशकी दृष्टिभी हो तो वह मनुष्य पुण्य करनेवाला, राजाका मन्त्री होवे, राजवंशीका यह योग हो तो श्रेष्ठ राजा होवे ॥ ४१ ॥

भाग्यभावाधिपो नीचे रविलुप्तकरे सति ॥
अरिगेहगतो वाऽपि भाग्यहीनो नरो भवेत् ॥ ४२ ॥

भाग्यभाव (९) का स्वामी नीच राशिमें हो तथा अस्तंगत अथवा शत्रुराशिमें हो तो मनुष्य भाग्यहीन होताहै ॥ ४२ ॥

अथ दशमभावविचारः।

कर्मभावाधिपो नीचे षडादित्रयगोऽपि चेत् ॥
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ॥ ४३ ॥

दशमभावका विचार कहते हैं-(इसकी कर्म, राज्य, तात आदि संज्ञा पूर्व कहीहैं) इसका स्वामी नीचराशिका त्रिक स्थान६।८।१२ में होतो कर्मवैकल्य (कार्यमें विघ्न, यद्वा कार्य्यहानि या भाग्यहानि) करताहै परंतु अपने उच्च एवं स्वराशिमें नहो तो ॥ ४३ ॥

कर्माधिपे केंद्रनवात्मजर्क्षे बुधेज्यदृष्टे सबले नराणाम् ॥ तुरंगमातंगनवांबराणि भवंति नाना-धनसंयुतानि ॥ ४४ ॥

बलवान् दशमेश केंद्र १।४।७।१० नवात्मज ९।५ स्थानमें हो तथा बुध बृहस्पति उसे देखें तो मनुष्य घोडे, हाथी, नवीन-वस्त्रादि और अनेक प्रकारके धनोंसे संयुक्त रहे ॥ ४४ ॥

कर्मपः केंद्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत् ॥
कूपायतनकर्त्ता च देवतातिथिपूजकः ॥ ४५ ॥

दशमेश केंद्र, कोणमें हो तो ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ करनेवाला तथा कूप (कुवा बावड़ी) धर्मशाला, मठ मंदिर आदियोंका बना-नेवाला होवै तथा देवता एवं अतिथियों (अभ्यागतों) का पूजन करनेवाला होवै ॥ ४५ ॥

लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणामादि-त्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेंद्रैः ॥ ता-तान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात्पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥ ४६ ॥

लग्नसे अथवा चंद्रमासे दशमस्थानमें जो ग्रह मनुष्यके जन्मकालमें हो उसके अनुसार कर्मसे वा संबंधसे आजीविका (योगक्षेम) होता है। दशममें कोई ग्रह न हो तो दशमेशसे कहना. सूर्य हो तो पितासे वा पितावाले कर्मसे, ऐसेही चंद्रमा हो तो मातासे, मंगल हो तो शत्रुकुलसे, बुध हो तो मित्रपक्षसे, बृहस्पति हो तो भ्रातृपक्षसे, शुक्र हो तो स्त्रीसे, शनि हो तो पुत्रसे कर्माजीविका, विशेषतः जातक जाननेवालोंने पंडितोंने कही है ॥ ४६ ॥

रविशीतकरांगकर्मपानां नरवृत्तिःकथिता लवेशवृत्त्या ॥ कनकोर्णतृणौषधैर्दिनेशे कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च चन्द्रे ॥ ४७ ॥

दूसरा प्रकार कहते हैं-कि, सूर्य तथा चंद्रमा और लग्नराशि इनसे दशम स्थानोंके स्वामी जो ग्रह हों वे जिस ग्रहके अंशमें हों उन ग्रहोंकी वृत्ति (आजीवनोपाय) मनुष्यकी होतीहै । जैसे सूर्य जीविकादाता हो तो सुवर्ण, ऊन, तृण (घास आदि) औषधि अन्नादिके संबंधसे चंद्रमा हो तो कृषी (खेती) के कर्म, जलकर्म स्त्रीके आश्रयसे आजीवन होता है ॥ ४७ ॥

अथ साहसवह्निधातुशस्त्रैः क्षितिजे काव्यकलाकलापतो ज्ञे ॥ लवणद्विजकांचनेभदेवैर्मणिरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥ ४८ ॥

इससे उपरांत फलहै--कि, मंगल कर्माजीविका देनेवाला होता साहसके कर्म, अग्निकर्म, धातुसम्बंधिकर्म, शस्त्रकर्मसे । बुध हो तो काव्य और कलापोंके समूह संबंधी कर्मसे बृहस्पति हो तो लवण व्यापारसे ब्राह्मण, एवं सुवर्ण, हाथी, देवता संबंधि कर्मसे शुक्र हो तो मणि, गौ, चांदी समूहसंबंधी कृत्यसे जीविका मिले ऐसे जानना॥४८॥

रविजे श्रमभारनीचतः स्यादिह कर्मेशभवांश-
नाथवृत्तिः ॥ हितवैरिनिजर्क्षतुंगसंस्थैर्हितवैरिस्व-
वशाद्धनाप्तिरुच्चैः ॥ ४९ ॥

शनि हो तो श्रम (मेहनत) भारढोना, नीचकर्म (गुलामी आदि) से आजीविका होवे यह कर्मेश (दशमेश) जिस नवांशकमें हो उसका जो स्वामी है उसकी उक्त आजीविका मनुष्यकी होती है। वह ग्रह मित्रराशि अंशकोंमें हो तो मित्रपक्षसे, शत्रुमें शत्रुसे, स्वराशिमें अपने पराक्रमसे, उच्चमें अकस्मात् बडे लोगोंसे धनप्राप्ति या आजीविका होती है ॥ ४९ ॥

अथायभावविचारः।

लाभेशो यदि केंद्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते ॥
षडादित्रयगे नीचे लाभबाधा नृणां सदा ॥ ५० ॥

अब ग्यारहवें भावका विचार कहते हैं-कि, लाभेश यदि केंद्रमें हो तो मनुष्यको लाभ अधिक होता है। यदि६।८।१२ भावमें यद्वा नीचराशिमें हो तो लाभकी बाधा करता है ॥ ५० ॥

आदित्येन युतेक्षिते नृपकुलाल्लाभालये चौरतो
लाभो नित्यमथेंदुना गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः ॥
भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिर्जंतो-
श्चंद्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ॥५१॥

सूर्य ग्यारहवें स्थानमें युक्त हो अथवा सूर्य इस भावको देखे तो राजकुलसे, तथा चोर मनुष्यसे नित्य लाभ होवे । उक्त प्रकारसे चंद्रमा हों तो हाथी, जलसंबंधी कृत्यसे तथा स्त्रीजनोंसे मंगल हो तो अनेक प्रकारके वाहन, मणि (रत्न)

भूमि, सुवर्ण, मूँगा आदिसे। बुध हो तो शिल्प (कारीगरी) लिखना, व्यापार आदि कृत्योंसे मनुष्यको लाभ होता रहै॥५१॥

जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सिते-
नालं वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः॥
मंदेनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेंद्रलोहव्रजैरित्थं
तत्र बहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः॥५२॥

उक्त प्रकारका बृहस्पति हो तो राजासे, यज्ञकृत्यसे, हाथी एवं भूमि संबंधी कृत्यसे, ज्ञानसंबंधी क्रियाओंसे लाभ होवे। शुक्र हो तो निश्चय वारांगना (वेश्या) ओंके (गमागम) कुकर्मआदिसे, तथा गुणोंके व्याख्यानसे, मोतियोंके व्यापारसे और शनि हो तो हाथियोंके समूहकृत्य, यद्वा गोठ (गोपालकृत्य) व्यसन (द्यूत आदि) भूमि कृत्य, नीलम, लोहा आदिसे होवे। यदि लाभभावमें बहुत ग्रह हों वा उसे देखें तो बहुत ही प्रकारसे धन मिले यह पूर्वपंडितोंने कहा है॥५२॥

अथ व्ययभावविचारः।

शुभग्रहाः प्रयच्छंति व्ययस्था विपुलं धनम्॥
विपरीतं खला जंतोर्जन्मकाले विशेषतः॥५३॥

बारहवें भावका विचार है-कि व्ययभावमें शुभग्रह हों तो बहुत धन देते हैं तथा पापग्रह विपरीत फल जन्मकालमें विशेषतासे करते हैं॥५३॥

क्षीणेंदुरंत्यगो यस्य रविणा सहितो यदि॥ तस्य
वित्तं हरेद्राजा कुजेनापि युतेक्षितः॥५४॥

इति भावकुतूहले भावविचारे पञ्चदशोऽध्यायः॥१५॥

जिसका क्षीण चंद्रमा व्ययभावमें यदि सूर्यसे युक्तभी हो तोउसके धनको राजा हरलेवे । मंगलसे युक्त, दृष्ट होनेमेंभी यही फल है॥९४॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां भावफलाऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ दशानयनाऽध्यायः ।

रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता नवेलाः शैलेला नगपरीमिता विंशतिमिताः ॥ रवाविंदावारे तमसि च गुरौ भानुतनये बुधे केतौ शुके क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥ १ ॥

अब दशाविचार कहते हैं कि,सूर्यके (६), चंद्रमाके (१०), मंगलके (७), राहुके (१८), बृहस्पतिके (१६), शनि (१९), बुधके (१७), केतुके (७), शुक्रके (२०) वर्ष नियतहैं दशाक्रमभी इसी क्रमसे है ॥ १ ॥

कृत्तिकादित्रिरावृत्त्या दशा विंशोत्तरी मता ॥
अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः ॥ २ ॥

कृत्तिकासे तीन आवृत्ति गिननेसे नक्षत्र दशाधिपति मिलताहै जैसे कृत्तिका जन्मनक्षत्रमें सूर्यकी दशा प्रथम, रोहिणीमें चंद्रमाकी इत्यादि । पुनः दूसरी आवृत्ति उत्तरा फाल्गुनीसे, तीसरीमें उत्तराषाढसे गिनना यह विंशोत्तरी (१२० वर्षके क्षेपककी) दशा कारक मारक विचारमें मुख्य है जाननेवालोंने इसीसे मारक कारक फल कहना अष्टोत्तरी आदि से नहीं ॥ २ ॥

गतर्क्षनाडी निहता दशाब्दैर्भभोगनाड्या विहृता फलं यत् ॥ वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणैर्भोग्यं दशाब्दांतरितं निरुक्तम् ॥ ३ ॥

नक्षत्रकी भुक्तघटीको जिसग्रहकी दशा प्रथम है उसके वर्षोंसे गुणकर नक्षत्रके सर्वभोगसे भाग देना लब्धि वर्ष, मास, दिन, घटी, क्रमसे उस ग्रहकी भुक्त दशा होतीहै, इसको ग्रहके वर्षोंमें घटायके भोग्य दशा होती है अन्य ग्रहोंके पूरे वर्ष जोडते जाना यह विंशोत्तरी उडुदशा होती है. उदाहरण है कि भरणी नक्षत्र भुक्त २४।२० भोग्य ३९।५ सर्वभोग्य ६३।२५ नक्षत्रभुक्त- २४।२० को भरणीमें प्रथम दशापति शुक्रके वर्ष २० से गुणा किया पलात्मक २९२०० हुआ, इसमें सर्वभोग्य ६३।२५ पला- त्मक ३८०५ से भाग लिया तो लाभ (७) वर्ष हुये शेष २५६५ को १२ से गुणा किया ३०७८० इसे पुनः ३८०५का भाग लेनेसे लाभ (८) महीना मिले शेष ३४० को ३० से गुणा किया १०२०० इसमेंभी उसी हारसे भाग लिया तो लब्धि दिन(२)मिले शेष २५९० को ६० से गुणाकर १५५४०० इसमें भागलेनेसे लाभ (४०) घटी मिलीं यह भुक्तदशा शुक्रकी हुई, इसको शुक्रके वर्ष २० में घटाया तो शेष १२ वर्ष, ३ महीने, २७ दिन, २० घटी शुक्रकी भोग्यदशा रही इसमें सूर्यके वर्ष ६ जोडनेसे १८। ३।२७।२० इतने वर्षादि पर्यन्त सूर्यदशा होती है ऐसेही सभी ग्रहोंके वर्षादि जानने ॥ ३ ॥

दशा दशाहता कार्य्या विहृता परमायुषा ॥
अंतर्दशाक्रमादेवं विदशाप्यनुपाततः ॥ ४ ॥

अब अंतर्दशाकी विधि कहतेहैं कि, जिस ग्रहकी दशामें अन्तर लानाहै उसग्रहकी दशा वर्षादिको अन्तरवाले ग्रहकी दशासे गुणा कर परमायु १२० से भाग लेकर पूर्वोक्तरीतिसे वर्षादि ४ अंकलेने वह वर्षादि ग्रहकी अंतर्दशा होती है एकग्रहकी दशामें इसी प्रकार

प्रत्येक ग्रहोंकी अंतर्दशा लेनी. ऐसेही अनुपातक्रमसे विदशायें भी होती हैं ॥ ४ ॥

अथ दशाफलानि तत्रादौ सूर्य्यस्य।

उद्वेगिता हृदि तता परितो लतावद्दायादवाद उत वित्तवियोगयोगाः ॥ चिंता भयं नरपतेरपि पाककाले रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे ॥ ५ ॥

सूर्यकी दशाप्रवेशमें मनुष्यके हृदयमें चारों तरफसे वृक्षपर लता जैसी फैलीहुई उद्वेगिता (अनवस्थिति) रहे. भाई, बिरादरीमें कलह होवे, धनहानि होय और धन मिलैभी चिंता रहे, राजासे भय होवै, तथा रोगभी होता है ॥ ५ ॥

अथ चन्द्रस्य फलानि।

सदा पाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता सतां संगो रंगोत्सवक्षवकृतिप्रीतिरतुला॥ अलंकारागारी रिपुकुलमलं गारजसुखं कलावत्यारत्या गम इभरथा रामरमणम् ॥ ६ ॥

चंद्रमाकी दशामें सर्वदा राजासे अधिकार मिले, सज्जनोंकी संगति नाच रंग आदि उत्सव, नाट्य (नाटक, नट खेल आदि) में यज्ञकर्मोंमें बडी प्रीति होवै, भूषण वस्त्र आदि अलंकारोंका घर होवै, शत्रुकुलके क्षय होनेसे सुख होवै, षोडशवर्षकी सुरूपा स्त्रीके साथ रतिक्रीडा मिले, हाथी, रथ आदि वाहन मिलें, बाग आदियोंमें रमित रहे ॥ ६ ॥

अथ भौमस्य फलानि।

अनलगरलभीतिः शस्त्रघातो नराणामरिगणनृप-

चौरव्यालशंकाकुलत्वम् ॥ क्षितिसुतपरिपाके कामि-
नीपुत्रकष्टं भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च ॥ ७॥

मंगलकी दशामें मनुष्योंको अग्नि,विषका भय, शस्त्रसे घाव होवें; शत्रुजन तथा चोर, राजा, सर्पसे भय होनेकी शंका एवं व्याकुलता होवै; स्त्रीपुत्रोंको कष्ट मिले वमन (वांति) का रोग होवै मानसी चिंता, रोग और धनहानिभी होवै ॥ ७॥

अथ राहोः फलानि ।

राकेशारातिपाके नृपकुलवशतो द्रव्यनाशो-
विनाशो मानस्यातीवरोगागमनमपि नृणां तात-
कष्टं विशेषात् ॥ कांतापत्याकुलत्वं हितजनखल-
ताऽरातिरायाति सद्म व्यामोहागारमंतः परित
उत तताऽतुंगताऽऽतंकता वा ॥ ८ ॥

राहुकी दशामें मनुष्योंको राजकुलके वशसे धनकानाश,मानका विनाश होवै बहुतरोग उत्पन्न होवैं, तथा विशेषतः पितृकष्ट मिले, स्त्रीपुत्रोंकी ओरसे व्याकुलता रहे, मित्रजनोंके साथ दुष्टता होवै. शत्रु चढकर मकानहीपर आजावैं, चित्तमें चारों ओरसे अज्ञानता आवै नीचत्वको प्राप्त करै और भययुक्त रहै ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशाफलम् ।

उर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नायकत्वं ज-
नानां कांतादंताबलाग्र्यागम इह कमलालंकृता
वासशाला मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजनगरिमा का-
लिमारातिकास्ये हृद्या विद्यानवद्या भवति च वच-
सामीशितुः पाककाले ॥ ९ ॥

बृहस्पतिकी दशामें मनुष्योंको राजकुलसे श्रेष्ठ पृथ्वी मिलतीहै. तथा अधिकारिता (प्रधानता) होती है. रमणीय स्त्री मिलतीहै, सवारीको श्रेष्ठ हाथी मिलते हैं, रहनेका बहुत बडा घर धनादि शोभासे भूषित रहताहै, सज्जनोंसे तथा बडेलोगोंसे मित्रता, गुरुजनोंसे गौरव (मान) मिलता है, शत्रुके मुख काले होते हैं रमणीय एवं अतिप्रशंसनीय विद्या होती है ॥ ९ ॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यावादेन तापोऽरिनरजनकृताऽऽतंकता रंकता वा कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम्॥ कांतापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदंतावलानां विच्छेदो मित्रभेदो दिनपसुतदशायामनर्थो विशेषात् ॥ १० ॥

शनिकी दशामें मनुष्योंको झूठे कलंक लगनेसे संताप, शत्रुजनके किये उपद्रवसे क्लेश होताहै, अथवा फकीरी (भीख मागनी) होती है, गुप्तकृत्या (अभिचार) से संतप्तता रहे,बुद्धिभी सन्तुष्ट होजावे, दुष्टजनों करके धननाश होवै, स्त्री पुत्रादिकोंको रोग होवै, पिता, सुवर्ण, गौ, घोडे, हाथियों का वियोग (नाश) होवै मित्रोंसे शत्रुता होवै, विशेष करके इस दशामें अनर्थ होतेहैं ॥ १० ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानांबरश्रेणीग्रामनवालयेंदुवदनालाभं विशेषादिह ॥ सद्भिः संगमनंगमंगमतुलं प्रोत्तुंगमातंगजं सौख्यं संतनुते दशा सुतयशोवृद्धिं च सिद्धिं विदः ॥ ११ ॥

बुधकी दशामें मनुष्योंको दिव्य (उत्तम) आहार (भोजन)

विहार, सवारी, मनुष्यसंगम, यद्वा मनुष्यता, संतान, धन, मान, वस्त्र, ग्राम, भूमि, नवीन मकान, चंद्रमुखी (सुरूपा) स्त्री इतनी वस्तुओंका विशेषतः लाभ होता है, सज्जनोंका संग कामदेवकी वृद्धि, ऊंचे हाथीकी सवारीका सुख मिलता है, संतानवृद्धि, यशकी वृद्धि, और सब कार्यमें सिद्धि होती है ॥ ११ ॥

अथ केतुदशाफलम् ।

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं सदा चं-
द्रारातेरुदरभवरोगं वितनुते ॥ दशा पुंसामारादनु-
गतिमपायं निजमतेः कृशत्वं वित्तानामवनिपति-
कोपेन परितः ॥ १२ ॥

केतुकी दशामें मनुष्योंके मनमें संताप, ज्वर, अपने मनुष्यों-में विवाह (कलह) होवे, दुष्टजनोंसे मुकाबिला होवे, पेटमें रोग उत्पन्न करताहै, शीघ्रही शीघ्रगमन, भ्रमण होते हैं अपनी ही बुद्धिसे धनादियोंका नाश होवे, शरीरमें कृशता आवै, सर्वप्रकार राजाके कोपसे धनका क्षय होवे ॥ १२ ॥

अथ शुक्रदशाफलम् ।

तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मिनां
मारोल्लासविकास एव कमलालावण्ययुक्तं गृहम् ॥
दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीव पाकसमये शाला विशाला कवेः १३॥

शुक्रकी दशामें मनुष्योंको बडे राजाकी तुल्यता मिलती है, मित्रसे जय (जीत) भलाई होतीहै, कामक्रीडाका उत्सव विलास हासमें आनंद होता है, घरमें लक्ष्मी, कोमल स्त्रीका वास होवे उत्तम-बाग बगीचा, उत्तम मकान आदि बहुत होते हैं, शास्त्रोंका व्या-

ख्यान, गायनका शब्द, बुद्धिकी कुशलता आदियोंका बहुत सुख होता है. तथा बडे बडे घर बनते हैं ॥ १३ ॥

अथ उच्चगतग्रहदशाफलम् ।

निजोच्चगामिनो यदा तदा तता यशोलता नवां-
बरादिभूषणैः सुखं वरांगनागमः ॥ उपेंद्रतुल्यता
गजेंद्रवाजिराजिका रथा वृषाश्च वैरिणः कृशा वशा
दशा यदा भवेत् ॥ १४ ॥

जो ग्रह जन्ममें उच्चका हो उसकी दशा जब हो तब मनुष्योंकी यशकी लता बहुत फैलती है, नवीन वस्त्र, भूषण आदियोंका सुख मिलताहै. श्रेष्ठअंगवाली स्त्री घरमें आती है, उपेंद्र (श्रीकृष्ण)यद्वा चक्रवर्तीराजाके समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होता है, श्रेष्ठहाथी, घोडे, रथ, बैल आदि मिलतेहैं शत्रु दुर्बल होकर वश होतेहैं॥ १४॥

अथ स्वक्षेत्रगतदशाफलम् ।

दशा निजागारगतस्य यस्य नवांबरागारविहार-
सौख्यम् ॥ नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशो
विशेषादरिवर्गहानिः ॥ १५ ॥

जो ग्रह अपनी राशिका हो उसकी दशामें नवीन वस्त्र, नवीन घर, विहार आदियोंका सौख्य होवै, नवीन स्त्री मिले, बहुत भूमि बहुत भूषण मिलते हैं, शत्रुपक्षकी हानि होतीहै ॥ १५ ॥

अथ मित्रक्षेत्रगतग्रहदशाफलम् ।

कलत्रपुत्रैरपि मित्रपुत्रैरतीवसौख्यं हितराशिग-
स्य ॥ दशाविपाके वसनं नृपालाद्विशेषतो मान-
विवर्द्धनं स्यात् ॥ १६ ॥

जो ग्रह अपने मित्रकी राशिमें हो उसकी दशामें स्त्री, पुत्रोंसे तथा मित्र, एवं उनके पुत्रोंसे अतीव सुख मिले, तथा राजासे वस्त्र, खिलत मिले, विशेषतः मानकी वृद्धि होवे ॥ १६ ॥

रिपुराशिस्थग्रहदशाफलम् ।

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिरातिबाधा ॥ दशा यदारातिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात् ॥ १७ ॥

जो ग्रह शत्रुराशिमें हो उसकी दशामें मनुष्यको कामदेवका बडा वेग रहता है, शत्रुपक्षसे भय, शरीरमें कृशता, धनकी हानि, आमदमें विघ्न वा विलंब होताहै, स्वभाव भी चलायमान होजाताहै (बुद्धि ठिकाने नहीं रहती) ॥ १७ ॥

अथ रोगेशदशाफलम् ।

रोगाधीशदशाऽबला जनकलिं रोगागमं जन्मिनामाधिव्याधिमरिव्रजव्रणगणातंकं कलंकं खलात् ॥ मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः ॥ १८ ॥

निर्बल रोगेश (षष्ठेश) की दशा—मनुष्योंके स्वजनके साथ कलह, रोगकी उत्पत्ति, मानकी चिंता, रोग, शत्रुसमूहकी वृद्धि, व्रण (घाव) समूहोंसे क्लेश, दुष्टजनोंसे कलंक (झूंठा अपवाद), मानका विध्वंस, बुद्धि का नाश, ज्ञानका व धनका नाश, चित्तमें व्याकुलता और पापके वशसे धातुक्षय करतीहै ॥ १८ ॥

अष्टमेशदशाफलम् ।

निधनभावपतेरवनीपतेरतिभयं गदजालभयं दशा ॥ कलयति स्वजनस्य विनाशनं निधनतामपि वा भविनामिह ॥ १९ ॥

अष्टमेशकी दशा जन्मियोंको राजासे बडा भय, रोगसमूहोंका भय, अपने मनुष्योंका नाश और मृत्युका भयभी देतीहै ॥ १९ ॥

व्ययेशदशाफलम् ।

वित्तक्षतिरवनीशादाधिर्व्याधिर्व्ययेशपरिपाके ॥ कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसंगसंयोगः ॥२०॥

व्ययेशकी दशामें राजासे धनका क्षय होता है. मानसी चिंता, रोग होते हैं. मृत्युके समान कष्ट मिलताहै. भैंसा, गदहा, आदि निषिद्ध सवारी मिलती हैं और कुसंगियोंकी संगति होती है॥२०॥

सप्तमेशदशाफलम् ।

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति ॥ रिपुजनजनिता बाधा वित्तविनाशो नरेशभीतिश्च॥२१॥

सप्तमेशकी दशामें रोगकी ज्वाला हृदयमें स्थिर रहती है, शत्रुसे उत्पन्न बाधा (दुःख) रहताहै. धनका नाश, राजाका भय होताहै २१

अस्तंगतग्रहदशाफलम् ।

दशाधीशे वास्तं गतवति विरोधो बलवता सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे ॥ अरेराधिर्व्याधिर्व्यसनमुत मानक्षतिरथो विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम् ॥ २२ ॥

दशापति ग्रह अस्तंगत हो तो अपनेसे बलवान् मनुष्यके साथ

विरोध होवे, सर्वरोगका मकानही मनुष्यके हृदयमें यद्वा पेटमें बनारहे, शत्रुसे चिंता, रोग, व्यसन और मानक्षय होवे, राजाके कोपसे धनका नाश होवे ॥ २२ ॥

दशाप्रवेशे सबलः शशांको दशाफलं शस्तमतीवजंतोः ॥ अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्य्यैरुदीरितं चंद्रबलानुमानात् ॥ २३ ॥

दशाकेप्रवेश समयमें तत्काल लग्नसे चंद्रमा बलवान् हो तो जीवको उस दशाका फल अतिशुभ होताहै; निर्बल होनेमें विपरीत फल, इसीरीतिसे श्रेष्ठ आचार्य्योंने चंद्रमाके बलानुसार फल कहाहै ॥ २३ ॥

बलवंतो दशाधीशा दिशंति सकलं फलम् ॥
निर्बला नैव कुर्वंति मध्यं मध्यबला नृणाम् ॥ २४ ॥

जो ग्रह बलवान् हैं वे अपनी दशामेंअपना उक्त फल पूर्ण देतेहैं, निर्बल ग्रह पूरा फल नहीं देते,जो मध्यबली हैं वे फलभी मध्यमही करते हैं ॥ २४ ॥

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः ॥ तुर्य्येस्वामिन आलयं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम् ॥ २५ ॥

लग्नेशकी दशामें बहुत धन होना फलहै. द्वितीयेशकी दशामें मृत्यु अथवा कष्ट, तृतीयेशकी दशामें बहुधा पाप फल होताहै, चतुर्थेशकी दशामें गृहसुख पंचमेशकी दशामें विद्याका सुख, षष्ठेशकी दशामें शत्रुभय, सप्तमेशकीदशामें शोक होताहै ॥ २५ ॥

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सुक्रियां
वित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः ॥
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै पूर्वै-
रंगभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम् ॥ २६

अष्टमेशकी दशामें मृत्यु निश्चय करताहै. नवमेशकी दशामें पुण्यादि कृत्य, दशमेशकी दशामें धन एवं राजाका आश्रय मिलताहै, लाभेशकी दशामें लाभ, व्ययेशकी दशामें रोग, धननाश, बहुतसे कष्ट होते हैं इस प्रकार साधारणफल पूर्वाचार्य्योंने लग्नेशआदियोंके शरीरधारियोंको कहे हैं ॥ २६ ॥

भवाधिपो बलयुतो निजगेहगामी तुंगत्रिकोणशुभ-
वर्गगतोपि पूर्णम् ॥ जंतोः फलं किल करोति यदारिनी-
चस्थानस्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥ २७ ॥
इति भावकुतूहले दशाफलाऽध्यायः ॥ १६ ॥

जिस भावका स्वामी युक्तहोकर अपनी राशि, अपने उच्च, मूलत्रिकोण, शुभग्रहोंके अंशादिवर्गआदिमें हो वह दशोक्त पूर्णफल तो निश्चय देताहै, यदि शत्रुगृह, नीचराशि, आदिमें होनेसे निर्बल हो तो विशेषतः अशुभफल देताहै ॥ २७ ॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां दशाफलाऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ ग्रहाणां गर्वितादिभावाऽध्यायः ।

कोणे तुंगगृहे गतो निगदितः खेटस्तदा गर्वितो
मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोपि मुदितो मित्रेण युक्तेक्षितः ॥
पुत्रस्थानगतोऽशुभौमरविजार्कैः संयुतो लज्जितः
पापारिग्रहवीक्षितो हि रविणा संक्षोभितः कीर्तितः ॥ १ ॥

अब ग्रहोंकी गर्वितादि दशा कहते हैं-कि, जो ग्रह अपने मूलत्रिकोण वा उच्चमें हो वह गर्वित कहाताहै, मित्रराशिवाला तथा बृहस्पतिके साथवाला तथा अपने मित्रसे युक्त वा दृष्ट भी मुदित होताहै। और पंचमस्थानमें स्थित एवं राहु, मंगल, सूर्य, शनिसे युक्त लज्जित, पापग्रह अथवा शत्रुसे दृष्ट वा सूर्यसे दृष्ट ग्रह क्षोभित कहाताहै ॥ १ ॥

यो मंदारियुतेक्षितोऽरिभगतः खेटः क्षुधापीडितो यः
पापारियुतेक्षितो न च शुभैर्दृष्टस्तृषार्तोंबुभे ॥ गर्वा-
ढ्यो मुदितोऽथ लज्जित इति प्रक्षोभितः कीर्तितो वि-
द्भिः संक्षुधितस्तृषार्त इह षड्भावा ग्रहाणाममी ॥ २ ॥

जो ग्रह शनि अथवा शत्रुग्रहसे युक्त वा दृष्ट हों और शत्रुराशिमें हो वह क्षुधापीडित और जो पापग्रहसे, शत्रुग्रहसे युक्त दृष्ट हो परन्तु शुभग्रह उसे न देखें चतुर्थस्थानमें हो वह तृषार्त होताहै, गर्वित १, मुदित २, लज्जित ३, क्षोभित ४, क्षुधित ५, तृषार्त्त ६ ये छः भाव ग्रहोंके विद्वानोंने कहेहैं ॥ २ ॥

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात् ॥
विनाशयाति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः ॥ ३ ॥

क्षुधित तथा क्षोभित ग्रह जिस भावमें हो उसका जबरदस्ती नाश करताहै। जिसमें मुदित वा गर्वित ग्रह हो उस भावको पुष्ट करता है ॥ ३ ॥

कर्मभावगतो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा ॥
क्षोभितः क्षुधितो वापि स दरिद्रो नरो भवेत् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें लज्जित अथवा तृषित यद्वा क्षोभित और क्षुधित ग्रह हो वह दरिद्र होताहै ॥ ४ ॥

लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः ॥
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति ॥ ५ ॥

लज्जितग्रह पंचमभावमें हो तो पुत्रनाश करनेवाला कहाहै। जिसका क्षोभित वा तृषित ग्रह सप्तमभावमें हो उसकी स्त्री नहीं बचती है ॥ ५ ॥

अथ गर्वितदशाफलम् ।

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम् ॥ मदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं दशा विशेषादिह गर्वितस्य ॥ ६ ॥

गर्वितग्रहकी दशा पुरुषोंको नवीन घर, बगीचाका सुख, राजत्व तथा कला (६४ कलाओं) में चातुरी मद तथा धनका लाभ, व्यवहारमें वृद्धि, करती है ॥ ६ ॥

मुदितग्रहदशाफलम् ।

भवति मुदितपाके वासशाला विशाला विमलवसनभूषाभूमियोषासुसौख्यम् ॥ स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याविकाशः ॥ ७ ॥

मुदित ग्रहकी दशामें रहनेका घर बडा बनता है, निर्मल वस्त्र, भूषण तथा भूमि और स्त्रियोंका सुख मिलता है। अपने मनुष्य तथा साधारणमनुष्योंसे विलास, राजाके घरमें निवास, शत्रु समूहका विनाश, बुद्धि तथा विद्याका प्रकाश होता है ॥ ७ ॥

लज्जितग्रहदशाफलम् ।

दिशति लज्जितखेटदशावशाद्रतिविराममतीव म-

तिक्षयम् ॥ सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाऽ-
भिरुचिं न रुचिं शुभे ॥ ८ ॥

लज्जितग्रहकी दशा विवशतासे रतिक्रीडाका विराम (वियोग) बुद्धिका क्षय, पुत्रको रोग, व्यर्थसफर, कलहसंबंधी वार्तामें रुचि और शुभकृत्यमें अरुचि करती है ॥ ८ ॥

क्षोभितग्रहदशाफलम् ।

संक्षोभितस्यापि दशा विशेषाद्दारिद्रजातं कुमतिं-
च कष्टम् ॥ करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाप्ति-
बाधामवनीशकोपात् ॥ ९ ॥

क्षोभित ग्रहकी दशा विशेषतः दारिद्रताका क्लेश करती है तथा कुत्सित बुद्धि अतिकष्ट, धनक्षय, पैरोंमें पीडा. धनके आमदमें राजकोपसे बाधा करती है ॥ ९ ॥

क्षुधितग्रहदशाफलम् ।

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादितापः परिजनप-
रितापादाधिभीत्या कृशत्वम् ॥ कलिरपि रिपुलो-
कैरर्थबाधा नराणामखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो-
विशेषात् ॥ १० ॥

क्षुधित ग्रहकी दशामें मनुष्योंके शोक, मोह (अज्ञान) आदि संताप होते हैं, स्वजनोंसे संताप मिलता है, मानसी व्यथा और भयसे शरीर दुबला होता है, शत्रुजनोंसे कलह होताहै, तथा धनकी पीडा, समस्त बलका निरोध (रुकावट) बुद्धिका रोधभी विशेषतः होता है ॥ १० ॥

तृषितग्रहदशाफलम् ।

तृषितखगदशायामंगनामंगमध्ये भवति गदवि-

कारो दुष्टकार्य्याधिकारः ॥ निजजनपरिवादादर्थ-
हानिः कृशत्वं खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ११॥

तृषितग्रहकी दशामें शरीरियोंके शरीरके बीचमें रोगका विकार होवे, इष्टकार्य्यका अधिकार मिले अपने मनुष्योंसे विवाद होवे जिसमें धनहानिभी रहे अंग माडे होजावें दुष्टजनके कृत्यसे संतापयुक्त रहे सर्वदा मानहानि होवे ॥ ११ ॥

आसीच्छ्रीकरुणाकरो बुधवरो वेदांगवेद्याकरस्त-
त्सूनुः क्षितिपालवंदितपदः श्रीशंभुनाथः कृती ॥
विद्वद्व्रातकृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये चक्रे
भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः ॥ १२ ॥

इति श्रीमन्मैथिलशंभुनाथगणकात्मजजीव-
नाथविरचिते भावकुतूहले ग्रहाणां गर्विता-
दिदशाफलाऽध्यायः ॥ १७ ॥

पहिले मैथिलदेशमें श्रीकरुणाकरनाम पंडितश्रेष्ठ वेदवेदांगके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ यद्वा खान (उक्तविद्याओंको प्रगट करनेवाली भूमिमें भया इनका पुत्र पण्डित शंभुनाथ भया जिसके चरणोंकी वंदना राजालोग करतेथे तथा विद्वानोंके समूहसे आदरणीय एवं गणितविद्या जाननेवाला रहा इनका पुत्र श्रीजीवनाथ नामा पंडित ज्योतिर्विज्जनोंके प्रसन्नताकी लिये छोटासा ग्रंथ भावकुतूहल (जिसमें पाठ स्वल्प प्रयोजन बहुत है) बनाया ॥ १२॥

इति भावकुतूहले माहीधरीभाषाटीकायां ग्रहाणां गर्वितादिदशाफलाऽध्यायः १७

नवाब्धिनवभूमिविक्रमदिवामणेर्वत्सरे महीधरध-
रासुरष्टिहरिसंज्ञके पत्तने ॥ विवर्णेमिह भाषया फलि-

तभावकौतूहलेऽकरोच्छिशुमनोमुदे चपलतां क्षमध्वं बुधाः ॥ १ ॥ जातकेषु बृहदाख्यजातकस्ताजिकेषु खलु नीलकंठिका ॥ हौरिके फलविधौ शिरोमणी तौ मया प्रकटितौ विवर्णितौ ॥ २ ॥ लक्षणैरसमस्तोपि ग्रहावस्थाविधानतः ॥ सामुद्रिकविचारैश्च विशेषोऽत्र प्रदृश्यते ॥३॥ अतो मया प्रकटितं भाषया लोकया भुवि ॥ वेणीमाधवसंतुष्ट्यै ग्रंथो भूयात्समर्पितः ॥४॥

भाषाकारका समर्पण है कि, विक्रमार्क संवत् १९४९ में महीधर शर्माब्राह्मणने राजधानी टीहरी नगर (जिला गढवाल) ने पाठक बालकोंकी मन प्रसन्नताके हेतु इस फलितग्रंथ भावकुतूहलका विवरण भाषामें किया इस भाषामें जो कुछ गलती हो उसे विद्वान् लोग क्षमा करें ॥ १ ॥ जातकों (जन्मफलों) में बृहज्जातक ताजिकों (वर्षफलों) में प्रश्नसहित नीलकंठी, ज्योतिषके फलप्रकरणमें शिरोमणि है इनको मैंने भाषाटीका करके लोकोपकारार्थ प्रकट कर दिया कि, जिससे अन्य ग्रंथोंमें श्रम करनेकी आवश्यकता नहीं थी ॥ २ ॥ यह ग्रंथ तो जातकलक्षणोंसे संपन्न नहीं परंच इसमें ग्रहोंकी अवस्थाओंके तथा सामुद्रिक लक्षणोंके विचार विशेष होनेसे इसकी विशेषता देखनेमें आई ॥ ३ ॥ इससे मैंने इसको देशभाषामें टीका करके संसारमें प्रकट किया यह ग्रंथ मेरा वेणीमाधवकी प्रसन्नताके अर्थ समर्पित होवे ॥ ४ ॥ शुभम् ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०- २६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS